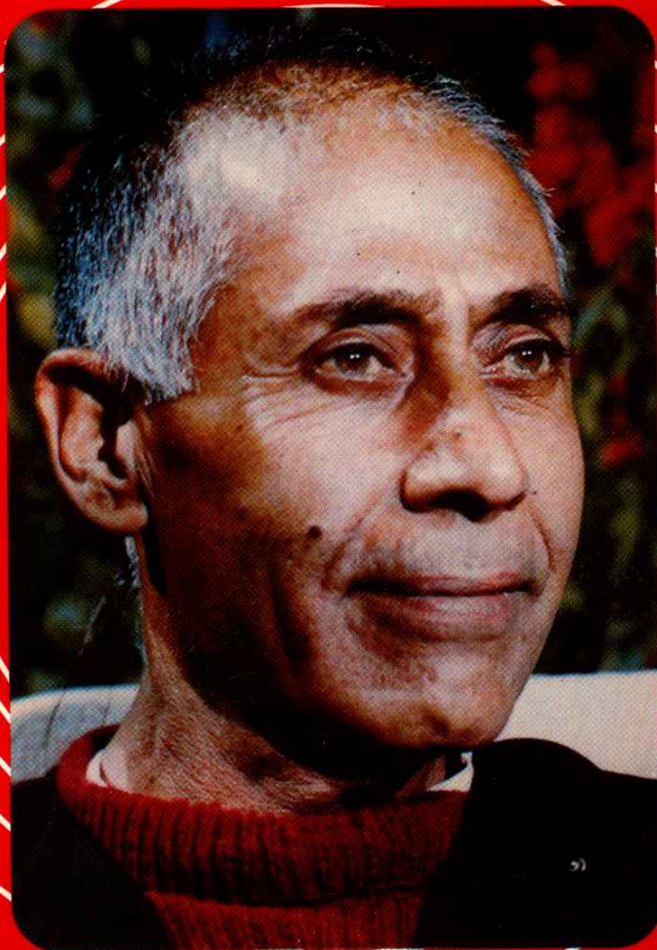
तेषां व्यवहृतौ समा सर्वत्र संस्थितिः।



'सहज विचार'
भाग २

दीन

सहज विचार

भाग २

चार विविध पुष्पों का पद्यात्मक संकलन

पद्यानुवादक तथा लेखक
दीनानाथ गंजू

भगवान ईश्वरस्वरूप से परम्परागतप्राप्त शैवशास्त्र रस की चमत्कर्त्री
श्रीमती प्रभादेवी द्वारा संशोधित

पद्यानुवादक तथा लेखक : **दीनानाथ गंजू**

संशोधिका : श्रीमती प्रभादेवी जी

प्रकाशक : दीनानाथ गंजू

प्रथम संस्करण ईस्वी सन् १९९५
मूल्य : रु० ३५

पुस्तक प्राप्ति स्थान
१. ईश्वर आश्रम ट्रस्ट, निशात, श्रीनगर, कश्मीर
२. ईश्वर आश्रम ट्रस्ट, जम्मू कार्यालय : २ महेन्द्रनगर, कनालरोड, जम्मू (तवी)
३. ईश्वर आश्रम ट्रस्ट, दिल्ली कार्यालय : ७३७१ - बी/१० वसन्त कुंज, नई दिल्ली. फोन ६८९६२६६

मुद्रक : पेरामाउंट प्रिंटोग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-२

दो शब्द

आदरणीय गुरु भाई श्री गंजू जी की कशमीरी भाषा में लिखी गई कविताओं का श्रवण मैंने किया। उन्होंने गुरुजनों की आन्तरिक प्रेरणा से प्रेरित होकर सांबपंचाशिका, परमार्थसार तथा शिव-सूत्र जैसे कठिन, विषय-गंभीर पुस्तकों का कशमीरी भाषा में उल्था किया है। यह अनुवाद कहीं कहीं तो ठीक मेल खाता है और कहीं भावना को लेकर श्रोताओं के हृदयों को आनन्द से आप्लावित कर देता है। सच तो यह है कि श्री गंजू जी ने अपने हृदय के अन्तस्तल में छिपे हुए वैराग्य को अपनी कविता में उभारा है। उनकी इन कृतियों को पढ़ कर सर्व-साधारण जनता अवश्य पारमार्थिक लाभ प्राप्त करेगी, ऐसी संभावना है। वस्तुतः उनका यह शुभ कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है। आशा है शीघ्र ही ट्रस्ट महोदय इन पुस्तकों को छपवा कर जनता का उपकार करेंगे।

ईश्वर-आश्रम निवासिनी

२२-२-१९९५ प्रभा देवी

जय गुरुदेव

आभार

मैं सद्गुरु देव भगवान् ईश्वर-स्वरूप जी महाराज का अत्यन्त आभारी हूं जिन की अपार कृपा से मेरे जैसा अनपढ़ व्यक्ति यह सेवा कार्य कर सका।

मैं श्रीमती प्रभा देवी का आभारी हूं जिन्होंने इस सारी पुस्तक को सुना, पढ़ा और यथास्थान समुचित संशोधन करके इसे संवारा। यहां इसका उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि इन्होंने पांच दशकों से भी अधिक समय तक अपने गुरु महाराज के समीपस्थ रहकर उनकी चरण सेवा की ओर समय-समय पर प्रमुख शैव-शास्त्रों का अध्ययन भी किया।

मैं अन्त में ईश्वर-आश्रम ट्रस्ट, निशात, कश्मीर, को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अपना वायदा पूरा कर के इस ग्रंथ को बहुत सुन्दर और शुद्ध रूप से छपवा कर शैव संप्रदाय की प्रशंसनीय सेवा की।

'दीन'

जय गुरुदेव

पुस्तक के विषय में

सद्गुरु महाराज की ८८ वी जन्म जयन्ती पर इस पुस्तक का प्रकाशन महान हर्ष का विषय है। सद्गुरु ईश्वर स्वरूप लक्ष्मण जी महाराज अपने व्याख्यानों में शैवशास्त्रों की जलनिधि के मन्थन के उपरान्त अनमोल रत्न सलीके से तराशकर अपने भक्तजनों को उपहार के रूप में दिया करते थे। इनके अचिन्त्य प्रभाव से विरला ही कोई भावुक व्यक्ति प्रभावित न हुआ हो। भला ही कोई पारखी हो जिसने इन अनर्घ रत्नों की परख साधना की कसौटी पर न की हो और इनके सतत चिन्तन से अनुभव के सीमान्तों को न छुआ हो। तर्कवितर्कात्मक तथा आत्मज्ञानवर्धक इनकी वाक्य वल्लरी उन भ्रमरों को अपनी ओर मंडराने के लिए विवश करती थी जिन्हें एकबारगी इनके शब्द पद्मों के मधु मद का चश्का लगता था। बहुत समय तक समीपस्थ रहने के फलस्वरूप अनुभवी कश्मीरी कवि श्री दीनानाथ जी गंजू ने अपने सद्गुरु महाराज के चरणकमलों का भंवरा बन कर जिस अद्भुत पराग को उड़ेला था उसी को एकत्रित करके, उन्होंने सद्गुरु महाराज के भक्तों, प्रेमियों और शिष्यवर्ग के समक्ष, प्रस्तुत पुस्तक (सहज विचार भाग-२) के रूप में रखने का स्तुत्य प्रयास किया है। अपनी अनुभवात्मक शैली में इन्होंने गूढ़ मर्म से पूर्ण शिव सूत्र जैसी दुर्बोध रचना को अपनी मातृ भाषा में पद्यान्तरण करके भाषा साहित्य में नवीन विधा का श्री गणेश किया। विषय वस्तु की सीमा या भाव भूमि को कविवर ने जिस हद तक मर्यादा में बांधने का प्रयत्न किया है वह सराहनीय है। जिन शिवसूत्रों में दार्शनिकता की तीव्र सुवास कूट कूट कर भरी है और जिनमें अनुभव और यौगिक क्रियाओं की पहेलियों की भरमार है, उन्हीं को 'दीन' ने अपने मनोरम शब्दविन्यास से साधारण जनता के लिए इस प्रकार सुबोध बनाया है कि सुकुमारमति वाले पाठक भी माथापच्ची किये बिना तत्त्वार्थ को अनायास ही समझ बैठेंगे।

यद्यपि विद्वान कवि की गहरी इच्छा थी कि सूत्रों का अनुवाद शब्दों के अनुरूप ही नपा तुला हो पर विषय वस्तु की दुरूहता तथा परिमित शब्दावली पद्यानुवाद को सही दिशा प्रदान न कर सकी, जिसके फलस्वरूप प्रस्तुत पुस्तक भावानुवाद के रूप में साकार हो उठी। भावानुवाद के रूप में शिवसूत्र जैसे शैवग्रन्थ के सूत्रमात्र का पद्यानुवाद भी गुरुमहाराज की परिपूर्ण अनुकम्पा का परिणाम है क्योंकि आज से सोलह वर्ष पूर्व कवि ने शिवसूत्र के शाम्भव उपाय नामक प्रथम प्रकरण का पद्यानुवाद सद्गुरु महाराज को सुनाया था जिसे सुनकर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए थे और पुस्तक के अवशिष्ट प्रकरणों का भी पद्यानुवाद संपूर्ण करने का आशीर्वाद दिया था। उनका वह आशीर्वादात्मक बीज ही आज प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम पुष्प के रूप में पल्लवित और विकसित हुआ है।

"सहज विचार का दूसरा पुष्प"

भगवान् श्री कृष्ण के सुपुत्र श्री साम्बजी रचित "साम्बपंचाशिका" का, आध्यात्मिक विषय के प्राचीन ग्रन्थों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। हमारे सद्गुरु श्री ईश्वर स्वरूप लक्ष्मण जी महाराज ने आज से लगभग पच्चास वर्ष पूर्व इस रचना का विवरणात्मक भाषानुवाद पहिलीबार प्रकाशित करके इसकी रहस्यात्मक ग्रन्थियों को प्रसादगुणपूर्ण शैली

में खोलकर साधना के अनकहे आयामों पर पूरा प्रकाश डाला था। कविवर 'दीन' ने इसी गूढ़ भक्ति स्तुति का कश्मीरी भाषा में पद्यानुवाद या भावानुवाद करके विषय की गहरी सूझ-बूझ और पकड़ का जिस ढंग से परिचय दिया है वह सराहनीय है। दार्शनिक साहित्य क्षेत्र का यह अनाघ्रात पुष्प देववाणी उद्यान से निकलकर भाषेतर-वाटिका में प्रथमबार पद्यों में अनूदित होकर क्या रंग जमायेगा, सहृदय पाठक ही उसका निर्णय करेंगें।

"सहज विचार का तीसरा पुष्प"

शैवशास्त्र केसरी आचार्य अभिनवगुप्त जी के नाम से संसार का कौन विद्वान् परिचित नहीं है। इन्होंने ईश्वर-प्रत्यभिज्ञा-विमर्शिनी, बृहत्काय तन्त्रालोक, परात्रिंशिका जैसे-दुर्बोध सैद्धान्तिक ग्रन्थों की रचना के साथ-साथ छोटे-छोटे सुबोध ग्रन्थों की भी रचना करके सुकुमार मति वाले साधकों का महान उपकार किया। इन्हीं सुबोध ग्रन्थों के अन्तर्गत 'परमार्थसार' नामक ग्रन्थ की गणना की जाती है। आचार्य अभिनवगुप्त के सौ कारिकाओं वाले इस छोटे से ग्रन्थ को शैवशास्त्र की कुंजी कहा गया है। भावुक कवि 'दीन' ने इस शैव ग्रन्थ का अपनी मातृभाषा में यथातथा पद्यानुवाद करके शैवदर्शन का प्रारम्भिक बोध प्राप्त करने को इच्छुक पाठकों का मार्ग सुकर बनाया। विषय की दुर्गमता के साथ जूझते हुए कविवर ने भावों के शस्त्रों का चमत्कार दिखाकर दार्शनिकों को अचम्भे में डाल दिया। यद्यपि इन तीनों पुष्पों की मोहकता प्रतिकूल पवन की चाल से कहीं-कहीं दाव पर लगी है तथापि आशा की जाती है कि इन तीन अनाघ्रात पुष्पों की महक से कश्मीरी भाषा साहित्य का उपवन सदा सुवासित रहेगा।

"सहज विचार का चौथा पुष्प"

सहज विचार का यह चौथा पुष्प गुरुचरणों पर समर्पित किया गया विविध रंगों की माला का सामूहिक रूप है। इस माला का प्रत्येक रंगीन पुष्प अपनी महक का ब्योरा आप देता है। इन पुष्पों का चयन मानस-उद्यान की चमत्कृत वल्लरियों से करके कवि ने इन्हें सदा अम्लान रहने का सौन्दर्य प्रदान करने का भरसक प्रयत्न किया है। काल की थपेड़ों के आघात से अप्रभावित यह चिन्तनधारा एक दशक पूर्व प्रकाशित सहज विचार प्रथम-भाग रूपी अनुकूल वातावरण से परिपुष्ट होकर भावों की नवीन झंझा को लेकर सहजानन्द से सुधी पाठकों को अवश्य ही आप्लावित करेगी। इस प्रकार चार फूलों से सजाया गया यह गुच्छा अपने मोहक सौन्दर्य से प्रत्येक पाठक का अन्तस्तल यदि आकर्षित कर सके, तो जिस उद्देश्य से इसे संजोया व संवारा गया है, उसकी अवश्य पूर्ति होगी ऐसी आशा है।

प्रो० मखनलाल कुकिलू

गुरुजन्म जयन्ती
वैशाख कृष्ण द्वादशी
तदनुसार
२६ अप्रैल, बुधवार, १९९५

GOLDEN RULES FOR HEALTH AND HAPPINESS

It is
What it is
As it is
'THAT' IT IS.

1. Always breathe through the nose.
2. Keep the mouth shut and the nose open 'AWARENESS'.
3. Talk only when you must.
4. Talk about the 1st person and the 2nd person and that too about the present only.

    The past is dead.
        Future unborn.
    Present is the reality,
        Act act act now,
    Do not let the reality slip away,
        It will never return,

5. Think of the subtle movement (स्पन्द), that takes place when you think "CONCENTRATION".
6. Set a goal for your life and work for that and that alone.
7. Be content with what you achieve and renew your efforts to better it.
8. Eat, preserving part of your hunger.
9. Sleep on the left.
10. Every day have a walk. Prefer a walk to a talk.
11. Never say 'ALAS'. This is hell.
12. Say it is all for the best or 'WHAT THEN'. This is heaven here and now".
13. Try Try Again.
14. Limit your hate, but 'LOVE ALL' as much as possible.
15. Never get dejected or overjoyed.
16. Forget others' wrong done to you or to others, but remember how they do the right.
17. Repent if you have wronged anybody. But do not expect anything in return if you have done good.
18. Every thing on earth is limited. (MAYIC)
19. The Limit is unlimited, ALMIGHTY.
20. Do not saw saw-dust, Talk only when you must.

"Din"

A poem by
Bhagwan Ishwar Swarup Ji

There is a point between sleep and waking
Where thou shall be alert without shaking

Enter into the new world
Where forms so hedious pass
They are passing, endure
Do not be taken by the dross
There the pulls and pushes about the throttle
All those shall thou tolerate

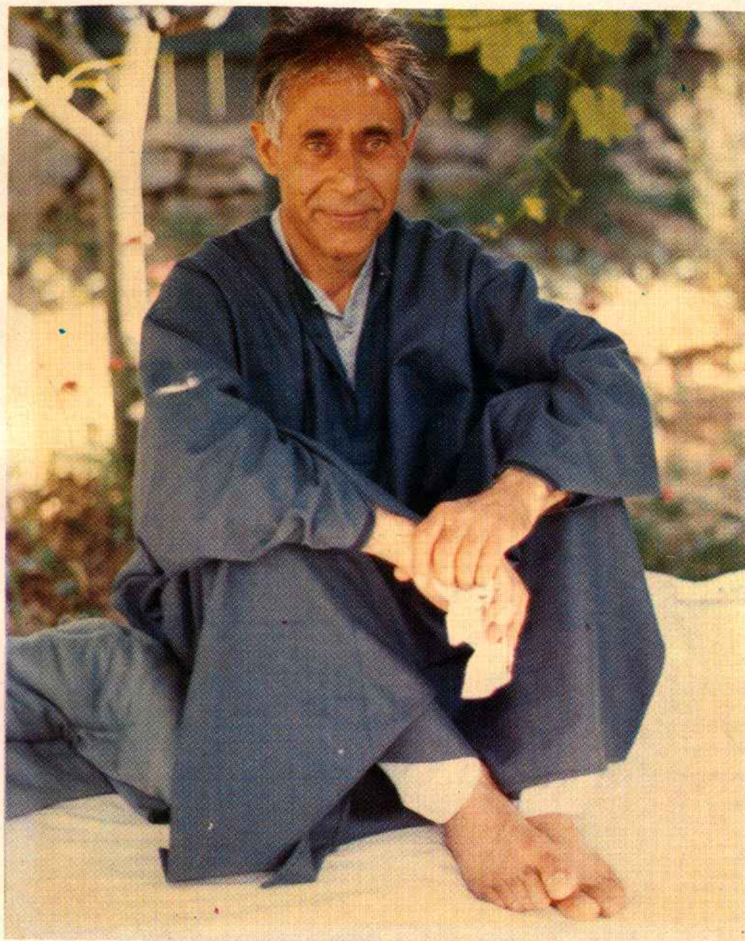
Close all ingress and egress
Yawning there may be
Shed tears crave-implore,
but thou wilt not prostrate

A "Thrill" passes and that
goes down to the bottom

It riseth May it bloom forth
That is bliss

Blessed being, Blessed being
O Greetings be to Thee

श्री ईश्वरस्वरूप लक्ष्मण जू महाराज



आविर्भावदिवस
9.5.1907

महासमाधिदिवस
21.9.1991

लक्ष्मण जी रैणा
शैवाचार्य
ईश्वर आश्रम, निशात, काशमीर

ॐ

आशीर्वाद के दो शब्द

श्री दीनानाथ जी गन्जू मेरे भक्त और प्रिय शिष्य हैं, जिन्हों ने संपूर्णरूप से अपना हृदय मेरे में अर्पण किया है। इस आत्म-समर्पण के फल-स्वरूप उन के हृदय में ईश्वर के अनुग्रह से दिव्य वैखरी का प्रादुर्भाव हुआ। फलतः उन्हों ने काश्मीरी भाषा में सहज-विचार नाम वाला एक छोटा सा काव्य-बद्ध पुस्तक निर्मित किया। इस पुस्तक में केवल सहज-विचार ही नहीं अपितु गुरु-भक्ति का आभास भी चमक उठा है। मुझे आशा है कि गन्जू साहब इस को प्रकाशित करके मेरे भक्त-जनों में वितरण करेंगे। यदि ऐसा होगा तो मेरी आत्मा पूर्ण रूप से प्रफुल्लित हो जायेगी और जनता में नवीन पारमार्थिक विकास होगा।

कार्तिक शुक्ल सप्तमी
शुक्रवार

लक्ष्मण
ईश्वर आश्रम

WRITING KASHMIRI
IN
DEVANĀGARĪ SCRIPT

Without addition of any new symbol

A detailed study regarding how to write Kashmiri in a scientific way in Devanāgarī script was published by me, under the above nomenclature after its approval by Shri Swami Ji Maharaj, in 1978. All the script in this book has been written under the same system. A summary of the system is repeated hereunder, for ready reference :-

In addition to the usual signs in Hindi or Sanskrit.

1. Use ऽ as in अऽस्य=we, नऽर=arm, नऽव=new, घऽर=watch, च़ऽय=you, म्यऽच़=earth, च़ऽर=sparrow, च़ऽ तऽ ज़ऽ सऽच़=you and two tailers.
2. Use ऽऽ as in अऽऽस=mouth, नऽऽर=jug, दऽऽर=window, सऽऽरी=all, अऽऽस्य्=were, मऽऽज्य्=mother, वऽऽज्य्=ring, प्रऽऽञ=old.
3. Use व as in न्वर=sleave, ग्व्ट=dim, थ्वुद=tall, द्वट=pony, गुउर=horse, ब्वुडऽः=old man, ब्वज्य्=old woman,
4. Use "व" as in स्वन=gold, र्‌वप=silver, द्वध=milk, ब्वद=intellect, य्वद=war, ग्वर=precepter
5. अः=flat ऽः as in सऽः=tiger, जऽः=two, जंगऽः=legs, तलऽः=under.
6. 1/2 य् preceeded by a vowel and 1/2 consonant. कऽऽत्य्=how many, तीत्य्=so many, सऽऽत्य्=with, शून्य्=space.
7. All ending consonants are हलन्त. If not the vowel is attached as in च़ऽ=you, बतऽ=cooked rice.
8. Use of ज़, च़ and छ in words like ज़ान=knowledge, च़ऽ=your, छ़्यनुन=being cut; is well known
9. Words from Sanskrit and other languages have been written phonetically as pronounced in Kashmiri such as व्यचार for विचार, सम्व्यथ for संवित्त.

In this book :-
Non availability of a double word connected with य has caused such words to he separated and first half word written with a "हलन्त sign" such as टऽऽठ्य अटऽऽठ्य्

Dina Nath Ganjoo

विषय-सूची



ॐ जय गुरुदेव भगवान ईश्वरस्वरूप

शिव सूत्र

काशमीरी विवरण

लेखक : श्री दीनानाथ गंजू

मंगलाचरण

प्रकाशमय शिव सऽञ्ज विमर्शमय शक्ती
स्पन्दमय ज़गत करान पनऽःनी भक्ती
मशरब मोह तुलान पानऽसई सक्ती
अनुग्रह ह्यसऽः रूप पननी मुक्ती
भैरव रूप छु ज़ानकर ज़ानकर
स्वात्मदीवस शिवस ग्वरऽःसई जय कर॥

भगवान स्वात्मदेव शिव

पऽऽन्य पानऽः पनुन पान, पानऽः मशरऽऽवित
ब्ययि सुई छाञ्डनस प्यठ छु ल्वुगमुत॥

च्वोर उपाय

आणव उपाय गव अथऽः ख्वर वायुन
शाक्तौ व्यच़ऽऽरित मन गालुन।
शाम्भवउपाय गव हंगऽः मंगऽः अथि युन
अनुपाय गव तऽत्य आसुन॥

ॐ शिव सूत्र

प्रथम प्रकाश। शाम्भवोपाय॥

रावर मो अख सात पानस
(1)अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस

(1) awareness of breath

चैतन्यमात्मा॥१॥

शिव छुक पानय चेनन वोल
पानय छुक चेननावन वोल
ती गव "चैतन्यमात्मा" बस
अनुसन्धानम ह्यस कर ह्यस॥ १॥

ती गव प्रकाश तय व्यमर्श
क्रिया त ज्ञान पनऽःनुई हर्ष
असली पान पनऽःनुई ह्यस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २॥

आसऽवुनुई क्या सऽऽबित करुन
अन्तरात्मा शिव स्वरुन
न्वुन सिर्यि द्रेण्ठ आव न कस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ३॥

चेननावुन गव क्रिया, प्रकाशमान
चेनुन ज्ञान विमर्श सान
द्वनऽःवय इम स्वतः तस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ४॥

स्वात्मा न्वुन छु नऽन्य् पऽऽठिन
छाण्डुन छुनऽः केन्ह कुनि पऽऽठिन
वन सबूत बिच़ोर क्या करि तस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ५॥

दोह त रात गसरावऽन्य ज़्यव
छुसऽः बऽः शिव किनऽः छुस शव
शव शरीर न्यबर, अन्दर शिव मस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ६॥

ज्ञानं बन्धः॥२॥

पानय करऽथ च़्यः पनऽनी ज़ान
ती बन्यौ अन्ज़ऽऽन्य् हुन्द अदऽः ज्ञान
आनव नऽऽव्य ब्योल प्यव जगतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ७॥

छुस न बऽः पानऽः शिव ज़ोनुथ च़्येः
इः शरीर छुस ना वारऽः कारऽः ब्येः
इमई ज़ऽः बुध्य् छी आनव मलस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ८॥

योनिवर्गः कलाशरीरम्॥३॥

अथ कुलिस लज्ञि द्रायि ज़ोरदार ज़ऽः
मायी त कार्म मल बन्योख च़ऽः
इथय पऽऽठय् अद्वैत वोत द्वयतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ९॥

छुस बऽः कुस्ताम कम गोमुत
दीह लरि शुर्य बऽऽच़ई बन्योमुत
कारबारुक शरीर छुस बऽः मस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ १०॥

इमय त्र्येः रूप छि चान्यन मलन
निवऽवऽन्य् इमय छि पूर्णऽः बलन
कुऽरहख दरबदर मंज़ शरीरस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ११॥

ज्ञानाधिष्ठानं मातृका॥ ४॥

ब्यहऽनऽच्य् प्यण्ड छय मऽऽज्य् मातृका
ज़ानऽनय लऽऽजथन कथन कुन हबा
पीठेश्वरी अन्ध्य् अन्ध्य् आत्मस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ १२॥

अनज़ऽऽन्य् किन इः वाक्ईश्वरी
मलन त्र्यन सग छयेः दिवान इः
ज़ानुन पार गछ यथ जगतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ १३॥

उद्यमोभैरवः॥ ५॥

ज्ञान पानय वुज़ि गण्डनावि कमर
दयि दया तोरय पानय अम्बर
उध्यमः पूज़ि भैरव शाहऽः खसवस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ १४॥

स्वभावय उदऽयस इवान उद्योग
निरन्तर पऽऽन्य् पानय स्वात्मभूग
सुई थुद शक्तिपात पानय तस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ १५॥

शक्तिचक्रसंधाने विश्वसंहारः॥ ६॥

यलि इः मऽऽज्य च़ऽः परज़ऽः नावऽहऽऽन
शक्तिचक्र अनुसन्धानस अनऽःहऽऽन
गालि पानय भीदऽः रूप जगतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ १६॥

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तभेदे तुर्याभोगसंभवः॥ ७॥

त्र्यनऽःवऽन्य दशायन मंज़ करुस पूज़
ज़ाग्रत स्वपुन सुषुप्त इमन नाव बूज़
तऽति अऽऽसिथई छु चूर्यम ह्यस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ १७॥

ज्ञानं जाग्रत्॥ ८॥

ज़ाग्रत गव ह्यस पूर्णऽः अहमुकुई (1)
नतः मा ज़गतस मंज़ नच़ऽनुई
योगी छुय हुशियार ततिनस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ १८॥

---

(1) प.अ. ज़ाग्रत गव ह्यस रोज़ि पनऽःनुई.

स्वप्नो विकल्पाः॥ ९॥

स्वप्नस द्वयिम नाव जान चऽः विकल्प
ज़ाग्रऽच़ मंज़ सम्सऽऽर्य संकल्प
नतऽः मा न्यन्दरि मंज़ स्यनिमा बस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ १९॥

अविवेको मायासौषुप्तम्॥ १०॥

सुषुप्ती छुनऽः केंन्ह नाव न्यन्द्री
ज़ाग्रऽच़ हुन्द यलि ह्यस डली
मायायि हऽन्ज़्य् छय इहऽऽय खसऽवस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २०॥

त्रितयभोक्ता वीरेशः॥ ११॥

त्र्यनऽःवऽन्य् मंज़ यलि रोजि हुशियार
तुर्या होश थवि वुछि चमत्कार
क्या छु वनुन तस वीरेशस ?
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २१॥

विस्मयो योगभूमिकाः॥ १२॥

अमि चमत्कारऽः सऽऽत्य गछान हऽऽरतस
रहिथ रूज़िथ गोमुत वुछः तस
अलौकिक बुथ वुछ मंज़ जगतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २२॥

इच्छाशक्तिरुमा कुमारी॥ १३॥

यच्छा बनान छस उमा कुमारी
यस यछ़ि मारि यस यछ़ि तारी
सोरुय त्राव रोज़ ज़ागि शिवस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २३॥

दृश्यं शरीरम्॥ १४॥

इः वुछि तिः छुस पनऽनुई शरीर
शरीरस ति वुछऽःवुन तमाशिगीर
आत्मऽः नज़रई छस प्यठ ज़गतस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २४॥

हृदये चित्तसंघट्टाद्दृश्यस्वापदर्शनम्॥ १५॥

चित्तप्रकाशस सऽऽत्य मिलऽवुन मन
त्र्यन दशायन मंज़ अहं बन बन
अभीदऽः रूपऽः किन वुछुन सम्सारस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २५॥

अहं बनुन गव सु पनुन पान ज़ानुन
यति न केंह कांक्षा न केंहति करुन
आत्मा त शिव छीय कुनी तऽतिनस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २६॥

शुद्धतत्त्वसंधानाद्वाऽपशुशक्तिः॥ १६॥

शुद्धऽः तत्त्वुक करुन दोह रात व्यँच़ार
सुई अनुसंधान रूद तस कारबार
ज़ीवऽः-पशु भाव पूरऽः पऽऽठय् ग्वुल तस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २७॥

वा शब्दस प्यठ कर वारऽः व्यच़ार
पतिम या शुरऽऽहिम सूत्र च़ार
सऽऽरी कुनी छीय अकिस तुल रस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २८॥

वितर्क आत्मज्ञानम्॥ १७॥

विश्वात्मा शिव छुस बऽः, छुस ज़ोन्मुत
तर्क वितक आत्मज्ञान मोन्मुत
सुई छु वऽऽतिथ असल तत्त्वस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ २९॥

लोकानन्दः समाधिसुखम्॥ १८॥

ज्ञानऽःआनन्दसई मंज़ रोज़ुन
इःति, बऽःति स्वरूपसय मिलऽःवुन
सुऽखदा समाधी सर्वदा तस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ३०॥

लूकऽःआनन्द तस बन्येयिः समाध
द्वह त रात ज़गतुक रुत च़ऽः साध
समाधि सुऽख बन्यव लूकऽःआनन्दस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ३१॥

इः केंह वुछि ज़ानि, तिछुस स्वरूप
वुछन ज़ानन वोल ति शिव रूप
सम्बन्ध सावधान वुछ यूगियस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ३२॥

सोरुय केंह वुछि पानसई मंज़
पनऽनुई पान वुछि सऽऽरिसई मंज़
न मशः नऽः मऽशरावि भगवान तस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ३३॥

शक्तिसंधाने शरीरोत्पत्तिः॥ १९॥

यलि करि सर्वदा शक्ति साधन
इः यछि ति छु बनऽऽविथ ह्यकन
सऽऽरी ताकत छिस मंज़ अथस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥३४॥

भूतसन्धान-भूतपृथक्त्व-विश्वसंघट्टाः॥ २०॥

पञ्चमहाभूतन म्युल छु करान
तिमन ब्ययि अलग अलग ति करान
युथुय शक्ति अनुसंधान फ्वल तस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥३५॥

शुद्धविद्योदयाच्चक्रेशत्वसिद्धिः॥ २१॥

शुद्धऽः विद्या यलि इयस उदयस
माने ज़ानि मातृका चक्रस
थक छु कडान मंज़ अहमस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ३६॥

शक्ति चक्र सुई छु परज़नावान
सृष्ट थ्यत सम्हार अनुग्रह ज़ानान
निग्रहस नाश छु गछान पूरऽः तस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ३७॥

महाह्रदानुसंधानान्मन्त्रवीर्यानुभवः॥ २२॥

अनुसन्धानऽःसदरस छु सुय फटान
अहं परामर्श ई गव ती ज़ानान
ई छु ती ज़ानि शिव पानस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ३८॥

सारं (श्री सत्गुरु मुखात्)

पाठ पूज़ जप तप त्वता करना
अनुसंधान रूपय, तिम आना
ज़्यतऽःमर गऽज्य् अनुसंधऽऽनियस
अनुसन्धानस ह्यस कर ह्यस॥ ३९॥

It is!
What it is?
As it is,
THAT it is.

गुरुदेव अनुग्रह रूप शाम्भव उपायुक
कऽऽशुर फ्युर वोत अन्द॥

ॐ शिव सूत्र

द्वितीय प्रकाश। शाक्तोपाय

चित्तं मन्त्रः॥ १॥

मन छुई पनुन पान ज़ान कर ज़ान कर
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर
ज़ानई छि पान चोन ज़ान गयि भगवान
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ १॥

शाम्भव उपाय ओस ह्यसऽःअनुसंधान
शाक्तोपाय मनऽःसई सऽऽत्य करऽन्य् ज़ान
मनन कर मन्त्रवीर्य-अहं-शिव-भगवान
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ २॥

मन चित्त छु मन्त्र मानतन अहं रूप
सुई छु ज़गतस मंज़ चोन असली स्वरूप
सु मशुन छु रावुन, मशरावुन स्वरूप
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ ३॥

मनऽःकुय व्यकल्पा छु सोरुई ज़गत यी
मनऽः ह्युर चऽः थ्वुद खस वारऽःवुछ ज़गत यी
मनस मंज़ रटित दय ज़ानतो ज़गत यी
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ ४॥

प्रमाता ज़ाननवोल चऽः इहोय छुख
गण्डऽःरुस दीशऽः कालः कल्पनायि थ्वुद छुख
स्वात्म अनुभव ऽच्नई अहं मन्थर छुख
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ ५॥

प्रयत्नः साधकः॥२॥

हुल गण्ड दोह त रात अथ्य् खयालस रोज़
प्रयत्न छु साधक चित्त समावीश रोज़
उद्यमो-भैरवः ति ती गव यति बोज़
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ ६॥

चित शक्ती यलि वऽछ ब्वन तऽ बनेयि मन
ज़गऽतस सऽऽत्य् मीज ज़गथई बन बन
अन्दर अछ तती वुछ ज़गत छुई इहोय मन
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ ७॥

प्रथ विज़ि स्वात्मऽः दीवस चऽः ज़ागि रोज़
गऽऽञ्ठ ज़न मामसस ज़ागान वुद रोज़
ह्यस अन्दर कुनऽई थव प्रऽऽरित वुज़ि सोज़
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ ८॥

विद्याशरीरसत्ता मन्त्ररहस्यम्॥ ३॥

शुद्धऽः विद्या हुन्द बुथ मन्त्र रहस्य गव
शुद्धऽः च़ीतऽनायि हुन्द फ्वलुन ति ती गव
यूगी छु अत्य बछान अहं रूप क्याः गव
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ ९॥

स्वप्रकाशुक विकास मातृका विद्या
बडऽः ब्वड छु सीर यि अहं ज़ान विद्या
अख अख अछुर ज़ान पूर्ण यि विद्या
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ १०॥

गर्भे चित्तविकासोऽविशिष्टविद्यास्वप्नः॥ ४॥

महामायायि मंज़ यलि छु फसान मन
कऽटऽः सिद्धियव सऽऽत्य् फ्वलनस इवान मन
व्यघ्न इमई गई स्वपनाः वुछान मन
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ ११॥
(क्षेमराज)

हृदयंगम गछि मन्त्र यि पूरऽः पऽऽठय्
चित्त विकासस इइः अहं मन्त्र पूरऽ पऽऽठय्
अविद्या पानऽः गलि शीन ज़न स्वपनऽ पऽऽठय
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ १२॥
(भास्कर)

दोनों का सार

प्रकाशानन्द रूप अमिकुई मनन गव
विषयिः मंज़ऽःमुऽकऽलुन अती ठहरुन गव
चित्चन्द्रचन्द्रिका अमृत इहोय गव
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ १३॥

विद्यासमुत्थाने स्वाभाविके खेचरी शिवावस्था॥ ५॥

शुद्ध विद्या फ्वलुन चिदाकाश ननुन गव
खेचरी मुद्रा शिव-भाव बनुन गव
दऽर्य् पऽऽठय् तती बिहुन पान ज़ानुन गव
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ १४॥

गुरुरुपायः॥ ६॥

सतुऽरऽः भगऽवानस चऽः शरण गछ़
अतिनस उपाय वनि, तऽस्य योत परन गछ़
शिवऽः अनुग्रहः म्यूल, रटान तऽस्य चरन गछ़
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ १५॥

मातृकाचक्रसंबोधः॥ ७॥

अ प्यठऽः क्षहस ताम मातृका चक्र ज़ान
अनुत्तर आनन्द यच्छा ज्ञान क्रिया ज़ान
शिव सुन्द यि फ्वलुन, पृथिवी ताम ज़ान
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ १६॥

म्रा वाक् भगवती हुन्द स्वरूप अछुर ज़ान
शक्ती हुन्द व्यकास ज़गतुक च़क्र ज़ान
अऽथ्य् मंज़ पनुन पान शिवरूप बिन्दु ज़ान
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ १७॥

शरीरं हविः॥ ८॥

दीहअहंकार हुम चित्तअग्नस पान
पनुन यि शरीर च़ऽः अग्नऽः वत्रा मान
लूकऽः ह्यतःकार अग्न चित्त शिव रूप ज़ान
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ १८॥

ज्ञानमन्नम्॥ ९॥

अज्ञानऽः बन्धन ख्यत बन ज्ञानवान
विश्वरूप ज़गथई छुई चोन असल पान
सुय गव संव्यथ समऽच्चार यति फ्वलान
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ १९॥

विद्यासंहारे तदुत्थस्वप्नदर्शनम्॥१०॥

अविद्या गयि दीह अहंकारऽच्य् नज़र
बऽः, म्योन, त, म्यय क्वुर स्वप्ना छु ज़रर
अमि मंज़ः न्यबर नेर स्वात्म रूप वुछ ज़बर
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ २०॥

शक्ति चक्र संधान ख्वुसऽ विद्या छिः
दय रछिन अगर ज़ांह स्वय मशऽत्य् गछि
यूगी पथर प्यथ ज्ञानऽः हीनई गछि
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ २१॥

सार॥

दीनऽः बिचारिः सोचतो चऽः वारऽः पऽऽठय्
बिचऽऽरय् पान मशराव, अहं ज़ान पूरऽः पऽऽठय्
ईश्वर स्वरूप, शिव, ज़गत, च़ऽई पूरऽः पऽऽठय्
मनन कर करी त्रान ज़ान कर ज़ान कर॥ २२॥
जय गुरुदेव
सत्गुरु दया रूप शाक्तोपायुक
कऽऽशुर फ्युर वोतअन्द॥

ॐ शिव सूत्र

तृतीय प्रकाश। आनव उपाय॥

आत्मा चित्तम्॥ १॥

ह्यसई छु पान वुन वऽऽतिमत्यौ
मनई छु पान वुन ज़ानऽवन्यौ
तनई छु पान वुन बेछऽवन्यौ
असली छि कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ १॥

चित शक्ती संकल्प करिथ बनेयि मन
संकल्प व्यकल्प लऽज्य् करनि वसिथ ब्वन ब्वन
मनन छऽन्य् थप यन्द्रययि शरीरस बन्यौ तन
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ २॥

ज़ानुन छुस बऽः तन छु पान रावऽरावुन
तनऽः ह्युर मन परज़नावुन गाटऽजार प्रावुन
मनऽः थ्वुद ह्यस स्वरूप ज़ानुन घरऽः पनुन वातुन
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३॥

ज्ञानं बन्धः॥२॥

ज़ान कऽर ज़गतऽच्य् राग द्वेष पऽऽदऽः गव
ग्वुब वुर्णा ज़न हटिस फऽऽञ्स्या प्यव
यलि ज़ीव गालि सुई ज़ीवनमुऽक्त बनिथ गव
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४॥

चित रूप शिवऽः प्यठऽः ब्वन ब्वन इ वसुन
शयत्रह पोर लरि तल आत्मुक छु फसुन
इहऽऽय पऽऽर्यज़ान मशिन छु मायायि मंज़ फटुन
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५॥

थफ दित सतू रजू त तमू ग्वणस
करान ह्युनाः त ह्युना द्राव इः सऽऽलस
शरीर बदलान बदलान वछतन मंज़ मऽऽलस
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ६॥

कलादीनां तत्त्वानामविवेको माया॥ ३॥

कला कऽऽरीगरी शिवऽः सऽञ्ज जगतरूप शक्ती नऽन्य्
शिवऽः प्यठऽः पृथ्वी तामत शयत्रह तत्त्व बऽन्य बन्य्

मशुन अमिकुय गयि माया दयि क्वदरत स्यठाह सऽन्य
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ७॥

शरीरे संहारः कलानाम्॥४॥

पृथ्वी प्यठऽः माया ताम अकऽत्रऽह तत्त्व ज़ऽऽन्य "सत आव
करुन, ज़ानुन, यछुन, शुद्ध विद्या, ईश्वर, सदाशिव नाव
ती परज़ऽःनऽऽवित शिव-शक्त आःआः करित अथि आव
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ८॥

पृथ्वी प्यठऽः अकि अकि तत्त्वऽच ज्ञान करान
अख अकिस मंज़ लय करान शिवस ताम वातान
शरीरस मंज़ कलायन संहार छि अऽथ्य वनान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥९॥

नाडी संहार-भूतजय-भूत कैवल्य-भूतपृथकत्वानि॥५॥

शरीर छु लराह अऽथ्य अन्द्री-अन्द्र रोज़
स्वतन्त्रऽः पानऽः घरऽः मऽऽलिखा योत पान बोज़
ह्यसस मंज़ प्राण वुछ सुय गव नाडि संहार सोज
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ १०॥

पञ्चमहाभूतन अती दि छ़ऽऽञ्ड, सीर वुछ
दर्यर, मज़ऽः, वुशनेर-हरकत, शब्द या केन्हनः वुछ
अमी भूतजयः मंज़ऽः पनुनपान न्वुन च़ऽः वुछ
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ११॥

यथ ज़गतस सन आनन्द स्वरूप पान वुछ
भूत कैवल्य रूप आनन्दई योत पान वुछ
मन बनि अमन सुई आनन्दुक फल च़ऽः वुछ
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ १२॥

आत्मऽः बलः किञ पंचमहाभूत मेलान छ्यनान वुछ
शयित्रह वय तत्व किथऽकऽन्य मेलान लय गछ़ान वुछ
भूत पृथकस मऽञ्ज़ पनुन पान बेलाग च़ऽः वुछ
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ १३॥

मोहावरणात् सिद्धिः॥ ६॥

काम क्रूध आद्यक बडऽः बऽडय् गण्ड माया मोह आसान
पतिम्यौ धारनायौ सऽऽत्य्, मूह गलित सिद्धी प्रावान
सोरुई करित ज़ऽऽनित ह्यकान आत्म ज्ञान बाकी रोज़ान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥१४॥

मोहजयादनन्ताभोगात्सहजविद्याजयः॥ ७॥

इः मोह गऽऽलित यूगी बडऽः ब्वड भूग प्रावान
इः यछि कांछि ति छुस ब्रोञ्ह कुन वातान
शुऽद्धऽः विद्याथि सान सहज विचार ति लबान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ १५॥

जाग्रद् द्वितीयकरः॥ ८॥

इम ज्ञानऽः बेदार यूगी हुशयार आसान
मन ज़ीनिथ इदम् भाव अहं रूप ज़ानान
न्यब्रिम ज़गत पनऽनुई द्वयुम तीज़ चेनान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥१६॥

नर्तक आत्मा॥ ९॥

इ यूगी अन्दऽर्य् किन चैतन्यमय आसान
न्यबऽर्य सोरुई कारबार करान रोज़ान
नच़नग्वुराह ज़न कम कम सांग बरान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ १७॥

रङ्गोऽन्तरात्मा॥ १०॥

नचन गरिस गछि़ आसऽन्य् नच़ऽनस किच़ प्यण्ड
सोरुइ पुर्यष्टक अऽम्य् नच़न प्यण्डाः गऽण्ड
अऽत्य अन्तरात्मा नच़ान त कडान छऽण्ड
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ १८॥

पुर्यष्टक गव पऽऽञ्च ज्ञान इन्द्रय, मन, बुद्ध, अहंकार
तिम छि आत्मदीवस च़्वपऽऽर्य सीवाकार
"देहस्थ देवता चक्र" पर त ज्ञान तिहुन्द बहार
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ १९॥

प्रेक्षकाणीन्द्रियाणि॥ ११॥

नच़ान छु नच़ान यूगी ज़गतस छ़ऽण्ड कडान
मगर नज़र पनऽन्य अन्दर कुनई थवान
तऽत्य् आत्मदीवस पानस चमत्कार वुछान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥२०॥

धीवशात्सत्त्वसिद्धिः॥ १२॥

यिः सोरुय ज्ञान प्रऽऽविथ छि अमिस नज़र खुलान
अकलाः छयस यिवान सत तत्त्वस ति वातान
सत तत्त्वऽच्य् ज़ान छा केन्ह कम सिद्धी आसान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ २१॥

सिद्धः स्वतन्त्रभावः॥ १३॥

यिः पज़ऽरऽच्य् ज़ान यूगियस कामयऽऽबी दिवान
यिः ज़ानुन करुन गछि ज़ऽऽनित करिथ ह्यकान
ज़गतस सऽऽरिसई प्यठ स्वतन्त्र सामराज लबान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ २२॥

यथा तत्र तथान्यत्र॥ १४॥

अन्द्रऽः न्यब्रऽः इः यूगी कुनी स्वभावऽःआसान
समऽऽज़ मंज़ अमिस युथ आनन्द फ्वलान
कारबारस मंज़ ति तिथुई सामराज्य् लभान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ २३॥

बीजावधानम्॥ १५॥

चित शक्ती भगवती पूर्ण सारिकुई बीज़
सुमरुण ब्ययि ब्ययि ब्ययि मशरिथ सऽऽरी चीज़
कलातीत बनख, गली मूह, फ्वलित अन्दऽर्युम तीज़
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ २४॥

आसनस्थः सुखं ह्रदे निमज्जति॥ १६॥

कल आसि सदा सर्वदा माजि चितशक्ती कुन
ब्ययि केन्ह सोरुइ त्योगमुत मल ज़न दूर कुन
सुय आसन ह्यर सुखऽःमख फटान स्वरूपस मंज़
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ २५॥

अन्द्रऽः न्यब्रऽः द्वादशान्त यति शाह फेरान
तऽथ्य् मंज़ निरन्तर ह्यसऽः युस आसन प्रावान
सुई सुखऽः मुखऽः छु चित सदरस परमऽः धामस फटान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ २६॥

स्वमात्रानिर्माणमापादयति॥ १७॥

ज़गतऽच्य् मऽऽज्य् परा शक्ती ज्ञान क्रिया रूप
शिव नाथऽन्य् बनान अमिस स्वतन्त्र स्वरूप
इः केन्छा इः यछ़ि कांछि बनान बे दोडधूप
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ २७॥

प्रमेय प्रमाण गछान लय प्रमातासई मंज़
शीन तऽ पोन्य् छिना कुनुय यलि बिहन अकलि मंज़
यछा कांक्षा यूगियस पूर्ण अकिस चिहिस मंज़
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ २८॥

विद्याऽविनाशे जन्मविनाशः॥ १८॥

अऽम्य यूगिराजन प्रऽऽवमऽच्य शुद्ध विद्या
तगिसय रछ़िन दियि न गलनऽः शुद्ध विद्या
ज़्यतऽमर चल्यस पुनर जनम गाल्यस शुद्ध विद्या
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ २९॥

कवर्गादिषु माहेश्वर्याद्याः पशुमातरः॥ १९॥

ज़ान कर ज़ान कर मातृका चक्र चऽ ज़ान कर
अ अनुत्तर पानऽशिव पन्दाह बाकी ति शिव रूपई स्वर
चुयित्रऽह व्यंजन शक्ती स्वरूप अऽऽ सई प्यठ निर्भर
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३०॥

इहोय शक्ति चक्र यलि गछ़ि पूरऽः ह्रदयंगम
ब्रोन्ह ति व्वन मलन त्र्यन छि इहऽऽय सरगम
अऽऽठवर्ग पीठीश्वीर्य मोह मय चावान भ्रम भ्रम
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३१॥

अन्द्रऽः वुछोख रछोक आत्मदीवस छय पूजऽऽर्य्
करणीश्वीर्य पूज़ान भैरवनाथ ह्यसऽः पोश चऽऽर्य् चऽऽर्य्
कडोख न्यबर यन्दरययि इमई मूहस फाटवान मऽऽर्य् मऽऽर्य्
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३२॥

अऽऽठ वर्ग मातृका दीवियि अमा ता शारिका नाव,
माहेश्वरी इमय पूजुक ह्यसऽः, मऽः लाग डल काव
माया रूपऽः करान तल, महामाया चिदाकाशस उडाव
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३३॥

त्रिषु चतुर्थं तैलवदासेच्यम्॥ २०॥

घोर घोराघोर त अघोर शिवऽः शक्तियिः त्र्ये
माया रूपऽः ज़ीवस दिवान त गालान हे
चूर्युम तुर्या, तील जन त्र्यनऽःवऽन्य् व्यास ह्यसऽः सान बेह
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३४॥

ज़ाग्रत स्वपुन स्वशस अवस्थायि त्र्येः परज़नाव
इमन हंजन संजन मंज़ चूर्युम् तुर्या नाव
यहोय चूर्युम् त्र्यनऽवऽन्य व्यास तीलुक ज़न फैलाव
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३५॥

मग्नःस्वचित्तेन प्रविशेत्॥ २१॥

दीह-हंकार, मल त्र्येः पूरऽः पऽऽठय गऽऽलिथ
मगन स्वात्म विचार शिव भक्ती मंज़ वृच़ गऽऽलिथ
चित सदरस लभान प्रवेश ह्यस सम्बऽऽलिथ
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३६॥

प्राणसमाचारे समदर्शनम्॥ २२॥

प्राणऽः वायु पकऽनऽऽविथ ह्यसऽःसान
वारऽवारऽः समचारऽः हिशिरऽः सान
ज़गत सोरुई ईकऽः रूप वुछऽः शिव पान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३७॥

मध्येऽवरप्रसवः॥ २३॥

ह्यस कर ह्यस कर अथ दशायि प्यठ तिः
अख रछ मलऽः संस्कार डालि व्रथ तिः
मंज़ बाग रहित गछ़ान प्यवान ब्युन तिः
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३८॥

मात्रास्वप्रत्ययसंधाने नष्टस्य पुनरुत्थानम्॥ २४॥

ह्यसऽः फेरिः भावऽः वर्ग संसार वुछि स्वस्वरूप
ज़ानि, प्रथ कांह भाव, अहमई योत, चिदानन्द रूप
अवरप्रसव ति गल्यस च़लनस यखदम दयि कूप
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ३९॥

शिवतुल्यो जायते॥ २५॥

तुर्य दशा ह्यसऽः रछि प्रावि तुर्यातीत पद
स्व छि पूरऽः शिव सई हिश स्वछ, आनन्द, स्वछन्द
दीहकला किन, तान्य, तऽस्य ह्यू, मऽरिथ पूर्ण शिवऽः पद
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४०॥

शरीरवृत्तिर्व्रतम्॥ २६॥

शिवऽःस्वरूप यूगियस, क्या छु वुन्य करुन
यमि शरीरुक कारबार तिः, ध्यानऽः रूपई स्वरुन
यथ शरीरस दयि मन्दरस मंज़ रूज़िथ शिव स्वरुन
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४१॥

कथा जपः॥ २७॥

आत्म ज्ञानऽः शिव विमर्शन योत अऽम्यसऽञ्ज़्य कथ बात
छुवपऽः तिः ती, बोलुन ती, ज़प ती, छुस दोह त रात
अख अख शाह, सूहमऽः ह्यस, छुस निरन्तर साथ साथ
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४२॥

दानमात्मज्ञानम्॥ २८॥

मोक्ष लक्ष्मी आत्मज्ञानऽः ब्युड खज़ानऽः प्रोवमुत
दान करुन, सुई ज्ञानऽः कार पनुन अऽम्य मोन्मुत
ज्ञानऽः दानय प्युष तऽ बेकऽल शिवऽः नयि छुन खोरमुत
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४३॥

योऽविपस्थो ज्ञाहेतुश्च॥ २९॥

माहेश्वरी आदिशक्तीचक्रऽः स्वऽऽमियस जयजयकार
सत् ग्वरऽःदीव शक्तिपात करनस छु सु शक्तीदार
कमअकऽलन ज्ञान हेतु छु, कुनुइ इः प्वज़ यार
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४४॥

स्वशक्तिप्रचयोऽस्य विश्वम्॥ ३०॥

विश्वरूप ज़गत शिवशक्ती हुन्द, आसान स्फार
अमिस योगऽराजस इहोय ज़ानुन छु कारबार
पननि शक्ती सऽऽत्य बनावान युथ यछ़ान त्युथ बहार
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४५॥

स्थितिलयौ॥ ३१॥

बहिर्मुखऽ: भावस मंज़ यूगी करवुन यिछ़ यछ़ि तिछ़ थ्यती
अन्तर्मुख गछ़िथ करान पानसई मंज़ लय सुऽई वृत्ती
अऽछय टीन्टि अकिसई मंज़ करान चितशक्ती द्वनऽवय तती
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४६॥

तत्प्रवृत्तावप्यनिरासः संवेत्तृभावात्॥ ३२॥

सृष्टी स्थिति संहार करितन केन्ह ति करितन कारबार
पनऽन्य थ्यत छयस सर्वदा, तुर्या चमत्कारऽ:दार
शुद्धऽ: संव्यत, स्वरूपऽ: निशि, छु नऽ: ज़ान्ह ति छ़्यनऽ:दार
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४७॥

सुखदुःखयोर्बहिर्मननम्॥ ३३॥

लूकन हऽन्द्य् पऽऽठय् मनस ख्वुश सुऽख, त खरवुन दुऽख
तुर्यऽ: नशऽ:दार यूगराजस, किथऽ: पऽऽठय हावन मुऽख
तिम तस न्यब्रऽ: न्यब्रय अन्दरऽ: आत्मानन्दऽ: सुऽख
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४८॥

तद्विमुक्तस्तु केवली॥ ३४॥

सुखऽ:दुऽखऽ मुकलित बह्यर-मुऽखऽभाव त्रोवमुत
कीवल आत्मानन्दऽ: रूज़िथ, कीवली नाव प्रोवमुत
शिव नाथ ज़न कुन त कीवल तीज़ऽ: वानः रूदमुत
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ४९॥

मोहप्रतिसंहतस्तु कर्मात्मा॥ ३५॥

मूह गव दुई, द्वैत, अन्यर, शरीर आद्युक अहंकार
संकल्प व्यकल्प, हय क्याःह गोम, करान करान कार
कार्म मल थफ करित छुस दिवान, जनम बार बार
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५०॥

भेदतिरस्कारे सर्गान्तरकर्मत्वम्॥ ३६॥

शक्तिपातऽ: थदि-थ्वुद भीदस तिरस्कार
युथ यछि बनावि नुव नुवय सम्सार
यति ति, तति ति, मेल्यस कोंछमुत पुरस्कार
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५१॥

करणशक्तिः स्वतोऽनुभवात्॥ ३७॥

यन्द्रययि दीवियि अमिस अन्द्री अन्दर करणीश्वर्यः नाव
तिहिन्दी ताकतऽ: स्वात्म-बलऽ: पनुन गाटऽजार अथि आव
इः केन्छा इः बनावुन ह्यायि यखदम बनान बिना रुकाव
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५२॥

त्रिपदाद्यनुप्राणनम्॥ ३८॥

ज़ाग्रत स्वपन सुषुप्ति, सृष्टी स्थिति संहार
सारिनई दशायन, ग्वडऽ: मंज़ऽ: अन्दऽ: तुर्यातीत चमत्कार
प्राणापानस मंज़ ति इहोय, अवधान, यूगियस यार
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५३॥

चित्तस्थितिवच्छरीरकरण बाह्येषु॥ ३९॥

शरीर, करण अथऽ: ख्वुर बह्यर-मुऽखऽ: यऽऽरी
मनऽ: की पऽऽठय करऽन्य् अन्तरमुऽखई सऽऽरी
तिम ति तुर्यातीत ह्यसऽ: दार बिलकुल न खऽऽरी
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५४॥

अभिलाषाद्बहिर्गतिः संवाह्यस्य॥ ४०॥

अपूर्णताआणव, अभिलाशामायीयमल, बह्यरमुऽखऽ: भावस मोल
म्यई कुवर कारबार कार्ममल, पुनर्जन्मस ब्योल
इमय मल त्र्येः आणव मायी कार्म गण्ड पूरऽ:पऽऽठय् खोल
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५५॥

तदारूढ़प्रमितेस्तत्क्षयाज्जीवसंक्षयः॥ ४१॥

वारऽ:पऽऽठ्य् गऽऽलिथ कांक्षा स्वस्वरूप छुन ज़ोनमुत
तुर्या भावऽ: दूर रूज़ित आत्मऽ: ज्ञान छुन प्रोवमुत
पूरऽ: गाटुल थ्वुद यूगी ज़्यतऽ:मर छुन गोलमुत
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५६॥

भूतकञ्चुकी तदा विमुक्तो भूयः पतिसमः परः ॥ ४२॥

कांक्षा पूरऽ गऽज्य्-मऽच्य् ज़ीवनमुक्त नाव प्योस
शरीर ज़ोनुन सर्पऽ: मऽसलाह भूतकञ्चुकी व्वुनऽ:होस
मऽऽलिकि कुल, पानऽ: शिव बऽ: ज़गतस सरदार बन्योस
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५७॥

पञ्चभौतिक दीह छुस, भूतकञ्चुकी नाव प्योस
दीह आसुन शख प़ावान, वनि ति मा नः मुकल्योस
सर्वज्ञ सर्वकर्ता पान वछिथ ज़ानान बऽः शिव बन्योस
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५८॥

नैसर्गिकः प्राणसंबन्धः॥ ४३॥

सम्बन्धे सावधानता यूगियस गुण आसान
प्राणस अपानस क्याह सम्बन्ध यूगी वुछान रोज़ान
क्वदरती इम पानय चलान यूगिराज वुछान रोज़ान
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ५९॥

शरीर यलि गव सर्फ़ऽः क्रोछ़ः त्यलि कथ बकार
परा शक्ती संव्यथ, बनेमऽच्य, प्यठई प्राणऽःस्फार
पकान पानय शरीरस मंज़, दर्शुन, इहोय बकार
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ६०॥

पकान प्राण-अपान सम्व्यथ दीवी हुन्द न्वुन रूप
वुद्ध रोज़ दोह त रात इहोय छुई च्योन असली स्वरूप
ह्यस थव अऽथ्य कुन पूरऽः, वनान ओस सतवर ईश्वरस्वरूप
असली छु कुनुई द्वई त्राव द्वई त्राव॥ ६१॥

नासिकान्तर्मध्यसंयमात् किमत्र सव्यापसव्य-सौषुम्नेषु॥ ४४॥

प्राणअपान समता भावस स्यद्ध रूपस वोतमुत
अन्द्रऽःअन्द्रय मध्यधामस मंज़ अवधानई प्रोवमुत
युतनस वऽऽतिथ दछुन-खोवुर सुषम्नाद्यक कर
कुनि छु लुगऽमुत
अऽथ्य छि वनान निर्व्युत्थान समाध, द्वयत
मूलऽःमुंजिः गोलमुत॥ ६२॥

भूयः स्यात्प्रतिमीलनम॥ ४५॥

ग्वडऽःनी आव वनऽनऽः अवधान रूप ह्यसई छु असली पान
वनऽनऽःआव व्यछ़नऽऽवित, द्वयत गऽऽलित सोरुइ
ज़गत गव सुई अवधान
दयि अनुग्रहऽः, शोखऽः तऽःलोलऽः यलि कांह दमऽः
दमऽः "ह्यसऽः वति" पकान
बिलाशख इः वत, स्वात्मरूपस, ईश्वरस्वरूपस, शिव
धामस, तेंतऽऽलिस, मिलऽवान॥ ६३॥
जय गुरुदेव
सत्गुरु ईश्वरस्वरूपनिः अपार दयायि सऽऽत्य
वोत शिव सूत्रन हुन्द कऽऽशुर फ्युर अन्द।

ॐ जय गुरु देव
भगवान ईश्वरस्वरूप की जय जय जय



ॐ

अथ श्री साम्बपञ्चाशिका

सत्गुरु वन्दना

ही म्यानि गुरऽः दीवऽः लगय ना बऽ पादन
नादन च्यान्यन जय-जयकार॥ १॥

दूरि प्यठऽः प्रेरणा इमव नादव च़ऽः
म्येः दासस करान बारम्बार॥ २॥

नतऽः यथ रहस्यमय शास्त्रस सऽऽत्य् बऽः
किथऽःकऽन्य् करऽः यूत ब्वुड कारबार॥ ३॥

खबर छम च़ई छुख म्ये इ करऽनावान
तवय छुस करान च़्यई ब्ययि ज़ारऽः पार

कान्ह च़्यत सिर्यस कान्ह प्रकऽटिस नमान
बऽः ग्वरऽः सिर्यसई करान नमस्कार

सुई छुम म्येः सोरुई तऽम्य्-सऽञ्ज़ई दया छम
खबर छम दियम सुय भवऽसरऽः तार

मंगलाचरण

पुष्णन् देवानमृतविसरैरिन्दुमास्राव्य सम्यक्
भाभिः स्वाभीरसयतिरसं यः परंनित्यमेव।
क्षीणं क्षीणं पुनरपि च तं पूरयत्येवमीदृक्
दोलालीलोल्लसित हृदयं नौमि चिद्भानुमेकम् ॥

प्रवौ पनऽन्यौ सऽऽत्य परमऽ अमृतऽ रस न्यति
निरन्तर रसऽनावान।
रछित सऽऽरी दीवता तमी सऽऽतिन च़न्द्रमस ति छु
श्रवनावान॥

श्रुकऽरित श्रुकऽरित तथ प्राणऽ च़न्दरस, ब्ययि ब्ययि
ब्ययि छु पूरऽनावान।
गुगुऽमंज़लचि खेलि हृत व्वुलऽसेमतिस कुनिस
च़्यथसिर्यस छुस बऽ नमान॥

शब्दार्थत्व विवर्तमान परम ज्योतीरुचो गोपते-
रुद्गीथोऽभ्युदितः परोऽरुणतया यस्य त्रयीमण्डलम्।
भास्वद्वर्णपदक्रमेरितततमः सप्तस्वराश्वैर्विय-
द्विद्यास्यन्दनमुन्नयन्निव नमस्तस्मै परब्रह्मणे॥ १॥

शब्दऽअर्थऽ प्रवऽ गाशऽ दार अन्दऽर्य् सिर्यः
यम्युक त्र्यन वीदन हुन्द मण्डुलाह
वर्णऽ त पदऽ तेज़ किर्णऽ क्रमऽ सऽऽतिन,
ज़गऽतुक तमोगुण अन्यर कासान॥

सत स्वर सत गुर्य् व्यद्या रूपऽ रथ छिस
चिदाकाशस मंज़ पकऽनावान
प्रणवऽः गाशऽः तारुक खसित छु सु खसान
तऽस्य परमब्रह्मस छुस बऽ नमान॥ १॥

ओमित्यन्तर्नदति नियतं यः प्रतिप्राणि शब्दो
वाणी यस्मात्प्रसरति परा शब्दतन्मात्रगर्भा।
प्राणापानौ वहति च समौ यो मिथौ ग्राससक्तौ
देहस्थं तं सपदि परमादित्यमाद्यं प्रपद्ये॥ २॥

प्रथ प्रऽऽनियस हृदयस मंज़ अन्दरी
लगातार प्रनवुक उचारन करान
शब्दऽ तन्मात्र गर्भिनी पश्यन्ती
द्वयिम वऽऽनी तमी मंज़ऽः नेरान।

अकअकिस ग्रासस लगिमऽत्य् प्राण अपान
समिभावऽः सऽऽतिन छु धारान
शरीरस मंज़ ठहऽरेमतिस आदनऽ किस
तऽस्य् उत्तम सिर्यस बऽ जलजल नमान॥ २॥

यस्त्वक्चक्षुः श्रवणरसनाघ्राणपाण्यङ्घ्रिवाणी
पायूपस्थस्थितिरपि मनोबुद्ध्यहंकारमूर्तिः।
तिष्ठत्यन्तर्बहिरपि जगद्भासयन्द्वादशात्मा
मार्तण्डं तं सकलकरणाधारमेकं प्रपद्ये॥ ३॥

न्यबऽर्य् किन चम अछय् कन ज़्यव त नस ब्ययि
अथऽः ख्वर वऽऽनी पायु उपस्थ
अन्दऽर्य् किन मन ब्वद्ध अहंकारऽः रूपऽः किन
यन्द्रययि सार्यै धारण करान
यन्द्रययि आधार बाह रूपऽः सिर्यः
ज़गत चमकावऽ वुन ठहर्योमुत
जोरऽः रऽसतिस तऽस्य् च़्यतसिर्यस बऽः
बारम्बार छुस प्रणामऽ करान॥ ३॥

या सा मित्रावरुणसदनादुच्चरन्ती त्रिषष्टिं
वर्णानत्र प्रकटकरणैः प्राणसङ्गात्प्रसूतान्।
ता पश्यन्तीं प्रथममुदितां मध्यमां बुद्धिसंस्थां
वाचं वक्त्रे करणविशदां वैखरीं च प्रपद्ये॥ ४॥

सिर्यिः तऽः वरणऽः संदिः घरऽः मंज़ःऽ द्रामचौ
यन्दरियौ ज़रियि य्वसऽः वऽऽनी
प्राणौ हन्दि रांगऽः सऽऽतिन द्रामत्यन
त्रहऽऽठन अछिरन उचारन करान।
य्वसऽः परावाक ज़्यवऽवऽन्य् पश्यन्ती
ब्वुज़ मंज मधिमा रूपऽःआसान
यन्दरियौ सऽऽत्य् नऽन्य् अऽऽसऽः मंजऽः वैखरी
नावऽः वाक्दीवी छुस ब नमान॥ ४॥

ऊध्वार्धः स्थान्यतनुभुवनान्यन्तरा संनिविष्टा
नानानाडिप्रसवगहना सर्वभूतान्तरस्था।
प्राणापानग्रसननिरतैः प्राप्यते ब्रह्मनाडी
सा नः श्वेता भवतु परमादित्यमूर्तिः प्रसन्ना॥ ५॥

ह्यर्म्यन ब्वुनिम्यन ग्रऽञ्ज़ ख्वस भवनन
य्वसऽः मंज़ बाग ठहऽरित आसान
अनीकऽः नऽऽडियौ सऽऽतिन म्वटेमऽच़
प्रऽऽनियन हृदयस अन्दर रोज़ान
प्राण अपान ग्रास करवऽन्यन यूगियन
युसऽः ब्रह्मनऽऽडी प्राप्त आसान
स्वई न्यर्मल परमऽःसिर्यि मूर्ती असि
अऽऽस्यतन सदा प्रसन्न रोज़ान॥ ५॥

न ब्रह्माण्डव्यवहितपथा नातिशीतोष्णरूपा
नो वा नक्तंदिवगममितातापनीयापराह्णः।
वैकुण्ठीया तनुरिव रवेः राजते मण्डलस्था
सा नः श्वेता भवतु परमादित्यमूर्तिः प्रसन्ना॥ ६॥

न छु ज़्यादऽः ठण्डऽः त न ज़्यादऽः गर्म
न ब्रह्माण्डऽः वति तस केन्ह लेन-देन
न दिवान संताप ख्योभुत न राहन
न छु बन्द दोह-रात चकरस मंज़।
शूभायमान च़्यतसिर्यि मण्डलस मंज़
विष्णू सऽञ्ज़ हिश स्वः मूर्ती
उत्तम सिर्यि सऽञ्ज़ इः न्यर्मल प्रतिमा
प्रसन्न रूज़तन असि सदा सर्वथा॥ ६॥

यत्रारूढं त्रिगुणवपुषि ब्रह्म तद्बिन्दुरूपं
योगीन्द्राणां यदपि परमं भाति निर्वाणमार्गः।
त्रय्याधारः प्रणव इति यन्मण्डलं चण्डरश्मे-
रन्तः सूक्ष्मं बहिरपि बृहन्मुक्तयेऽहं प्रपन्नः॥ ७॥

अन्दऽर्य् किन सूक्षम न्यबरऽः बडि ख्वुतऽः ब्वुड
ओं रूपऽः त्र्यन वेद आधार
बढ्यन यूगियन ज़ान सुई छू आसान
प्वुज़ मूक्ष प्रावनुक कुन उपाय
त्र्येः गुणऽः म्वक्त प्रणवऽःरूपस मंज़
बिन्दु रूपऽः ब्रह्म युस छू ठहरान
मुक्ती खऽऽतरऽः तऽथ्य् सिर्यिः मण्डलस
पज़ि मनऽः किन छुस शर्ण बऽ गछान॥ ७॥

यस्मिन्सोमः सुरपितृनरैरन्वहं पीयमानः
क्षीणः क्षीणः प्रविशति यतो वर्धते चापि भूयः।
यस्मिन्वेदा मधुनि सरघाकारवद्धान्ति चाग्रे
तच्चण्डांशोरमितममृतं मण्डलस्थं प्रपद्ये॥ ८॥

प्रवेशऽः ब्रोन्ह तन्योमुत प्राणऽः चन्दरमऽः
दीव प्यतृ मनऽश्य्, युस निरन्तर च्यवान
प्रवेश करित, यस सऽऽतिन लगित सु
ब्यथि ब्यथि पूर्णताथि छु वातान
वीद ज़ोतान यस ब्रोञ्ठऽः कनि ज़न
मऽऽछस निश तुलरि गत छि करान
च़्यत सिर्यिः मण्डलऽलय ठहऽरेमतिस तऽस्य्
परमानन्दऽः अमृतस बऽ नमान॥ ८॥

ऐन्द्रीमाशां पृथुकवपुषा पूरयित्वा क्रमेण
क्रान्ताः सप्त प्रकटहरिणा येन पादेन लोकाः।
कृत्वा ध्वान्तं विगलितबलिव्यक्ति पाताललीनं
विश्वालोकः स जयति रविः सत्त्वमेवोर्ध्वरश्मिः॥ ९॥

बालऽः नारायनऽः रूपऽः किन युस ना
करान बलिदानवस अहंकार नाश
पातालस मंज़ तस अन्धकार मिलऽवित
इन्द्रऽःलूक क्रमऽः क्रमऽः वातऽनावान।
रटान सतऽवय लूक कुनिस कदमस तल
प्रकाश ज़गतुक युस छु आसान
तऽस्य् प्रकाशमय तेज़ किर्णऽः वऽऽलिस
च़्यत-रूपऽः सिर्यस बऽ जयजय करान॥ ९॥

ध्यात्वा ब्रह्म प्रथममतुन प्राणमूले नदन्तं
दृष्ट्वा चान्तः प्रणवमुखरं व्याहृतीः सम्यगुक्त्वा।
यत्तद्वेदे तदिति सवितुर्ब्रह्मणोक्तं वरेण्यं
तद्भर्गाख्यं किमपि परमं धामगर्भं प्रपद्ये॥ १०॥

प्रंणवऽः उचारस सऽऽत्य सऽऽत्य छुस बऽः
भू वगैरऽः व्याहृती वारऽः पऽऽठय् स्वरान
प्राणऽः मूलऽः अनाहत निराकार ब्रह्म अदऽः
हृदयस अन्दर स्वरित साक्षात करान।

तमि पतऽः अलौक्यक प्रकाशऽः भरितिस
भर्गऽः नऽऽव्य तुर्यिः सिर्यऽः अर्च़ान
यऽम्य् सऽञ्ज्य् वनऽन्य् लायक श्यछ
ब्रह्माजी वीदन मंज़ वखनान॥ १०॥

त्वां स्तोष्यामि स्तुतिभिरिति मे यस्तु भेदग्रहोऽयं
सैवाविद्या तदपि सुतरां तद्विनाशाय युक्तः।
स्तौम्येवाहं त्रिविधमुदितं स्थूलसूक्ष्मं परं वा
विद्योपायः पर इति बुधैर्गीयते खल्वविद्या॥ ११॥

त्वताथि सऽऽत्य् करत प्रसन्न भगवानऽः च़ऽः
इ:ति छयेः भीदन म्येः थप कऽरऽमऽच़
अऽऽसित अविद्या अमी अविद्याथि
अविद्या गऽऽलित छयेः ह्यचिमऽच़
थूल सूक्षम त पर त्र्यनऽवऽन्य् रूपन
त्वता करऽः चान्यन बऽः ज़रूरी
आत्म विद्या प्राप्ती हुन्द उपाय
इः अविद्या ज़ाऽऽनियौ छयेः वनिमऽच़॥ ११॥

योऽनाद्यन्तोऽप्यतनुरगुणोऽणोरणीयान्महीया-
न्विश्वाकारः सगुण इति वा कल्पनाकल्पिताङ्गः।
नानाभूत-प्रकृतिविकृतीर्दर्शयन्भाति यो वा
तस्मै तस्मै भवतु परमादित्य नित्यं नमस्ते॥ १२॥

बोज़नऽः इवान छुख हावऽवऽन्य् नाना
प्रऽऽनियन हऽन्द्य् कारण त कर्म
आदि अन्तऽः रुउस छुक ही बडि सिर्यिः
शरीरस सऽऽत्य् छुई न केन्ह ति तोलुख
निर्गुण, सूक्षम, महान विश्वाकार
सर्वज्ञता बेतरिः श्यथौ गुणौ वोल
इहऽऽय ज्ञान करित ज़ोनहक भक्तव
चऽऽनिस स्वरूपस न्यथ नमस्कार॥ १२॥

तत्त्वाख्याने त्वयि मुनिजना नेति नेति ब्रुवन्तः
श्रान्ताः सम्यक्त्वमिति न च तैरीदृशो वेति चोक्तः।
तस्मात्तुभ्यं नम इति वचोमात्रमेवास्मि वच्मि
प्रायो यस्मात्प्रसरतितरां भारती ज्ञानगर्भा॥ १३॥

चऽऽनिस स्वरूपस वेशि नेति नेति
बे फऽऽयदः करानछि मुनीज़न
यमी रूपः आसऽवुन छुक भगवानः च़ः
इः तिः छिः नः तिम वनित ह्यकन।
"छुई च़्येः नमस्कार" वुऽन्य् अऽथ्य् वऽऽनी
छुस बः पूरः पऽऽठय् दामनः रटन
अनुग्रहऽ चानि सऽऽत्य यमि किन वऽऽनी
यलि त्यलि ज्ञानऽवान पूरः फ्वलन॥ १३॥

सर्वाङ्गीणः सकलवपुषामन्तरे योऽन्तरात्मा
तिष्ठन्काष्ठे दहन इव नो दृश्यसे युक्तिशून्यैः।
यश्च प्राणारणिषु नियतैर्मथ्यमानासु सद्भि-
र्दृश्यं ज्योतिर्भवसि परमादित्य तस्मै नमस्ते॥ १४॥

अङ्गः अङ्गः वऽऽतिथ अन्तर आत्मा
अन्दऽरय छुक सारिनई प्रऽऽनियन
मगर अकलि रऽस्य्त्यन ज़िनिस मंज़ नार ज़न
कुनि वति छुक नः बोज़नः इवन।
प्राणः द्योन मन्दऽनतः प्रज़लनः मंज़ छुक
आसान न्वुन च़ः सत्ज़नन
ही अलौक्यक प्रकाशऽमय च़्यत सिर्यिः
नमस्कार छुई च़्येः वक्तः वक्तन॥ १४॥

स्तोता स्तुत्यः स्तुतिरिति भवान्कर्तृकर्मक्रियात्मा
क्रीडत्येकस्तव नुतिविधावस्वतन्त्रस्ततोऽहम्।
यद्वा वच्मि प्रणयसुभगं गोपते तच्च तथ्यं
त्वत्तो ह्यन्यत्किमिव जगतां विद्यते तन्मृषास्यात्॥ १५॥

च़्यथ रूपः सिर्यिः कुन छुख च़ः पानय
कर्ता कर्म क्रिया रूपःआसऽवुन
भऽक्त्य् भगवान तऽ त्वता पानः बऽन्य् बऽन्य्
गिन्दुना पानय च़ः बनऽवुन
तवय छुस् नऽ ह्यकान त्वता चऽऽन्य करिथई
व्ारः बोज़ प्रेमः भावुक इः वनऽवुन
त्र्यन लूकन मंज़ च़्येः भ्यन्न केन्ह ति
अपुज आकाशः पोश ज़न आसऽवुन॥ १५॥

ज्ञानं नान्तःकरणरहितं विद्यतेऽस्मद्विधानां
त्वं चात्यन्तं सकलकरण गोचरत्वादचिन्त्यः।
ध्यानातीतस्त्वमिति न विना भक्तियोगेन लभ्य-
स्तस्माद्भक्तिं शरणममृतप्राप्तयेऽहं प्रपन्नः॥ १६॥

कान्ह ज़ान अन्तः करनौ वरऽऽय
ज़ान्ह ति ह्यकि नः असि बनिथई
इन्द्रेयौ निशि बेलाग च़ंः सोचि-दूर
कुनि वति छिथ नऽ ह्यकान स्वरिथई
द्यानः थ्वुद आसऽवुन छुक च़्यथ सिर्यिः
भक्ती यूगः भ्यन्न छुक नऽ प्राप्तई
तवय मूक्षि अमृत प्राप्ती बापथ
माजि भक्तियिः छुस शर्ण गछिथई॥ १६॥

हार्द हन्ति प्रथममुदिता या तमः संश्रितानां
सत्त्वोद्रेकात्तदनु च रजः कर्मयोगक्रमेण।
स्वभ्यस्ता च प्रथयतितरां सत्त्वमेव प्रपन्ना
निर्वाणाय व्रजति शमिनां तेऽर्क भक्तिस्त्रयीव॥ १७॥

ही सिर्यिः भऽक्तिस भक्ती प्रज़ऽलऽवऽन्य्
हृदयिः मंज़ः तमूग्वणः गटः गालान
अदः सतूग्वनः पूर्यरः सऽऽतिन
कर्मः यूगः वति रजूग्वन मारान
पतः पूरः अभ्यासस इथ इः भक्ती
सतूग्वन वारः पऽऽठय् फ्वलनावान
त्र्यन वीदन हन्द्य् पऽऽठय् शान्त पुरषन
सऽऽधमऽच़्य इः भक्ती मूक्ष दिवान॥१७॥

तामासाद्य श्रियमिव गृहे कामधेनुं प्रवासे
ध्वान्ते भातिं धृतिमिव वने योजने ब्रह्मनाडिम्।
नावं चास्मिन्विषमविषयग्राहसंसारसिन्धौ
गच्छेयं ते परमममृतं यत्र शीतं न चोष्णम्॥ १८॥

घरस मंज़ लक्ष्मी, सफरस कामधीन
अन्धकार गालऽनस ब्वुड प्रकाश
जन्गऽलस सबऽर दयि छ़ऽऽञ्ड मंज़ स्वशमना
ब्रह्मनऽऽडी भक्ती आसान।

भयंकर व्यषियि थपिदार संसारऽः सरऽः
तारऽनस किच़ रऽच़्य् नाव हिश इः
तऽरनि ततिः भावऽः हीन, परम अमृत लभऽनऽः
खऽऽतरऽः छुस तऽस्य् बऽः दामनऽः रटान॥ १८॥

अग्नीषोमावखिलजगतः कारणं तौ मयूखैः
सर्गादाने सृजसि भगवन्हासवृद्धिक्रमेण।
तावेवान्तर्विषुवति समौ जुह्वतामात्मवह्नौ
द्वावप्यस्तं नयसि युगपत्मुक्तये भक्तिभाजाम्॥ १९॥

च़्यथ किरनौ श्वमरऽऽवित फ्वलरऽऽवित
ज़गतुक कारण प्राण त अपान
क्रमऽ क्रमऽः न्यबर त अन्दर निनऽः बापत
भगऽवानऽः द्वनऽवय च़ऽः पऽऽदऽः करान।
विश्ववत आत्मऽ अग्नस मंज़ समि-भावऽः
भक्त अन्दरी इम अर्पन करान
तऽस्य मुक्ती दिनऽः खऽऽतरऽः द्वनऽवय
छुक अकी वक्तन लय च़ऽ करान॥ १९॥

स्थूलत्वं ते प्रकृतिगहनं नैव लक्ष्यं ह्यनन्तं
सूक्ष्मत्वं वा तदपि सदसद्व्यक्त्यभावादचिन्त्यम्।
ध्यायामीत्थं कथमविदितं त्वामनाद्यन्तमन्त-
स्तस्मादर्क प्रणयिनि मयि स्वात्मनैव प्रसीद॥ २०॥

स्वभावऽः किन गूड दयि च्यऽऽन्य् स्थूलता
अगम्य अनन्त आसनऽः किन नऽः बोज़नऽः इवान
सूक्ष्मता ति सत असत अपारि भगवन
आसनऽः नासनऽः थऽज़ न फिकिरिः तरान
युथ आदि-अन्तः रुउस ज़ऽऽन्य थ्वुद स्वरूप च्योन
किथऽः आसऽः हतदीशऽः द्यान बऽ करान
तवय ही च़्यथ सिर्यिः म्येः ज़ऽऽरी करऽवनिस
आस्तऽः पऽऽन्य् पानय प्रसन्न रोज़ान॥ २०॥

यत्तद्वेद्यं किमपि परमं शब्दतत्त्वं त्वमन्त-
स्तत्सद्व्यक्तिं जिगमिषु शनैर्लाति मात्रा कला खे।
अव्यक्तेन प्रणववपुषा बिन्दुनादोदितं स-
च्छब्दब्रह्मोच्चरति करणव्यञ्जितं वाचकं ते॥ २१॥

ज़ानऽनी छि आश्चर इः परावाक शक्ती
पऽज़ थदि-थऽज़ दयि च़्यई मंज़ इ व्यक्ती
रूज़ित चिदाकाशऽः ज़ानिहे पनुन पान
क्रमऽः क्रमऽः गाटऽजारऽः अछऽरन ज़ान
तवय पान म्वटऽरुन प्रणवुक रूपई
बिन्दुनाद प्रकाश-विमर्श ननिरुन स्वरूपई
सत्शब्दब्रह्म बनिथ उच्चारण करान रूज़
करणऽः दीवियन मंज वैखरी ग्रज़ान रूज़॥ २१॥

प्रातःसंध्यारुणकिरणभागृङ्मयं राजसं य-
न्मध्ये चापि ज्वलदिव यजुः शुक्लभाः सात्त्विकं वा।
सायं सामास्तमितकिरणं यत्तमोल्लासि रूपं
साह्नः सर्गस्थितिलयविधावाकृतिस्ते त्रयीव॥ २२॥

ॠकवीदमय रज़ुग्वन रूप सुबऽहऽच
स्वरऽख संध्या जूत्य् हृदयस मंज़
युजरवीदमय सतूग्वनऽ रूप मंधिनऽच्य्
सफेद प्रज़ऽलान तालस मंज़।
बह्वरद्वादशान्तऽः साम तमूरूप शामऽच
वसऽवन्यौ सायं किरनौ सान
सृष्ट थ्यत सम्हार ज़न करान वीद त्र्येः
दोह रूप प्रानऽच सूर्य मूर्तिः॥ २२॥

ये पातालोदधिमुनिनगद्वीपलोकाधि बीज-
च्छन्दोभूतस्वरमुखनदन्सप्तसप्ति प्रपन्नाः।
ये चैवाश्वं निरवयववाग्भावमात्राधिरूढं
ते त्वामेव स्वरगुण कलावर्जितं यान्त्यनश्वम्॥ २३॥

सतौ सतौ पातालौ समुदरौ ॠषियौ
पर्वतौ द्वीपौ लूकौ त अऽऽधियौ
वाल्यौ छन्दौ स्वरौ सऽऽत्य् शब्दमान
सत ग्वघुरचदार चऽऽनिस रूपस, इम नमान
या इनऽः गछनऽः रुउस पश्यन्ती ठहऽरेमतिस
कुनिस घुर्यदार स्वरूपस छि स्वरान
द्वनऽः वय बेघुर्य्-स्वर-ग्वन-कला मुऽक्त
चऽऽनिस स्वरूपसई छी वातान॥ २३॥

दिव्यं ज्योतिः सलिलपवनैः पूरयित्वा त्रिलोकी-
मेकीभूतं पुनरपि च तत्सारमादाय गोभिः।
अन्तर्लीनो विशसि वसुधां तद्गतः सूयसेऽन्नं
तच्च प्राणस्त्वमिति जगतां प्राणभृत्सूर्य आत्मा॥ २४॥

दैवी अग्नऽः ज़लऽः वावऽः सऽऽत्य् च़्यत सिर्यिः
छुक त्रिलूकी ग्वडऽः पूरऽः नावान
अदऽः तिमनई हुन्द उत्तम सार छुक
च़्यत किरणौ पऽऽन्य् पानय च्यवान।
अन्तर-मुऽख गछ़ित, परा पृथ्वी अचि़त
आनन्दऽः अन्न छुक वुपऽदावान
अन्न बनावान प्राण, तवय छी च़्येः वनान
परमात्मा सिर्यिः, युस प्राण छु रछान॥ २४॥

अग्नीषोमौ प्रकृतिपुरुषौ बिन्दुनादौ च नित्यौ
प्राणापानावपि दिननिशे ये च सत्यानृते द्वे।
धर्माधर्मौ सदसदुभयं योऽन्तरावेश्य योगी
वर्तेतात्मन्युपरतमतिर्निर्गुणं त्वां विशेत्सः॥ २५॥

सर्वदा व्याप्त आसऽवऽन्य् इम जोरऽः
अग्नी-च़न्द्रमऽः, प्रकृती-पुरुष
बिन्दु-नाद, प्राण-अपान, धर्म-अधर्म, प्वज़-अप्वज़
दोह-त-रात, आसुन या नासुन
युस यूगी इमय हृदयस मंज़ रटित
लय करित ठहऽरि आत्मानन्दऽः ईष
सुई चऽऽनिस गुनातीत स्वरूपस
मंज़ करान पूरऽः पऽऽठिन प्रवीश॥ २५॥

गर्भाधानप्रसवविधये सुतयोरिन्दुभासा
सापत्न्येनाभिमुखमिव खे कान्तयोर्मध्यसंस्थः।
द्यावापृथ्व्योर्वदनकमले गोमुखैर्बोधयित्वा
पर्यायेणापिबसि भगवन्षड्रसास्वादलोलः॥ २६॥

छुक सम्सारस मंज़बाग रूज़ित
श्यन आनन्दऽः भूमियन स्वाद काञ्छान
शुन्य् आकाशिः शुञ्गित ज़न प्राण अपान
द्वन प्रतियूगियन प्रेमऽः भरान।
बह्यर अन्तर द्वादशान्तन यूगियस
ज़गतस मंज (अभ्यासऽः ज़ोरऽः) वुलऽसावान
प्रवेशऽः त प्रसरऽः बापत ज़च़ौ पनऽन्यौ
क्रमऽः क्रमऽः पानय आनन्द तुलान॥ २७॥

सोमं पूर्णामृतमिव चरुं तेजसा साधयित्वा
कृत्वा तेनानलमुखजगत्तर्पणं वैश्वदेवम्।
आमावस्यं विघसमिव खे तत्कलाशेषमश्नन्
ब्रह्माण्डान्तर्गृहपतिरिव स्वात्मयागं करोषि॥ २७॥

चित्प्रकाश तीजऽः सऽऽत्य अग्नऽःवत्रि बदल
प्राण-अपान च़न्द्रमऽः अमृत साधान
सुई उदानऽः अग्नस वशऽदीव आहुती हुमित
शरीर रूप ज़गतस ख्यनच्यन दिवान।
चित् आकाशय द्वादशान्त मावसि मंज
अमाकला ह्वतऽःशीश आनन्द तुलान
ब्रह्माण्डस मंज़ घरऽः जिठ सऽन्द्य् पऽऽठय
द्वह त रात आत्मऽः यग्न्याः च़ऽ करान॥ २८॥

कृत्वा नक्तंदिनमिव जगद्बीजमाव्यक्तिकं य-
त्तत्रैवान्तर्दिनकर तथा बाह्यमन्यत्ततोऽल्पम्।
दैवं पित्र्यं क्रमपरिगतं मानुषं चाल्पमल्पं
कुर्वन्कुर्वन्कलयसि जगत्पञ्चधावर्तनाभिः॥ २८॥

प्रकृती हुन्द दोह युस ज़गऽतुक कारण
छुक च़्यथसिर्यिः ग्वडऽनी बनावन
तऽथ्य् मंज तमि ख्वतऽः ल्वकुट दोह
ब्रह्मा सुन्द च़ऽः अदऽ प़ऽऽदऽः करन।
अख-अकिस ख्वतऽः कम कम आसऽवऽन्य्
दीवऽः प्यतृऽः मनषिः दोह अदः ननिरावन
इथय पऽऽठय् छुक पऽऽञ्च हगरदार दुनिया
खेलाः बनऽऽवित नच़ऽनावन॥ २८॥

तत्त्वालोके तपन सुदिने ये परं संप्रबुद्धाः
ये वा चित्तोपशमरजनीयोगनिद्रामुपेताः।
तेऽहोरात्रोपरमपरमानन्दसंध्यासु सौरं
भित्त्वा ज्योतिः परमपरमं यान्ति निर्वाणसंज्ञम्॥ २९॥

आत्मऽः ज्ञानऽः रूप रति दोहऽः वक्तन
इम यूगी पूरऽः पऽऽठय ह्यस छि लभन
चितशऽऽन्ती रऽऽच़ मंज़ ही म्यानि आत्मऽ
यूगऽः न्यन्दरायि मंज़ मगन सपदन।
ह्यसऽः संध्यायि वक्तन तिमई
प्राण-अपान रूप, दोह-त-रात, मुऽकऽलावन
प्राणऽः रूप सिर्युक स्थूल प्रकाश गऽऽलित
मूक्ष नऽऽव्य् थ्वुद आनन्द प्रावन॥ २९॥

आब्रह्मेदं नवमिव जगज्जङ्गमस्थावरान्तं
सर्गे सर्गे विसृजसि रवे गोभिरुद्रिक्तसोमैः।
दीप्तैः प्रत्याहरसि च लये तद्यथायोनि भूयः
सर्गान्तादौ प्रकटविभवां दर्शयन्रश्मिलीलाम्॥ ३०॥

प्रज़लऽवनि अमृतमय किरणौ सऽऽत्य्
ब्रह्मा प्यठऽः थावर ज़ंगम इ ज़गत
ही च़्यथ सिर्यिः प्रथ सृष्टी विज़िः
नविसरऽः नोव नोव छुख बनावान
पानय अम्युक कारण आसनऽः किन
प्रलयिः विज़ि पानऽसई लय ति करान
ऐश्वर्यवान च़्यथ रश्मि लीला च़ऽः
सृष्टी आदि-अन्तऽः वक्तऽः हावान॥ ३०॥

श्रित्वा नित्योपचितमुचितं ब्रह्मतेजः प्रकाशं
रूपं सर्गस्थितिलयमुचा सर्वभूतेषु मध्ये।
अन्तेवासिष्विव सुगुरुणा यः परोक्षः प्रकृत्या
प्रत्यक्षोऽसौ जगति भवता दर्शितः स्वात्मनात्मा॥ ३१॥

सृष्ट-थ्यत-सम्हारऽः चक्रऽः निशि मुऽक्त
सर्वदा परिपूर्ण छुक आसऽवुन
थ्यकनी ब्रह्मतीज़ प्रकाशदार रूपुक
आसरऽः च़्यथ सिर्यिः च़ऽः रटऽवुन
भऽक्तयन नऽन्य् पऽऽठय् तमि आत्मुक दर्शुन
युस स्वभावऽः किन छुनऽः वछनऽः इवऽवुन
तत्वदृष्ट ग्वरऽः दीव सऽञ्ज्य् पऽऽठिन
यमीय सम्सारऽः मंज़ऽः छुख हावऽवुन॥ ३१॥

लोकाः सर्वे वपुषि नियतं ते स्थितास्त्वं च तेषा-
मेकैकस्मिन्युगपदगुणो विश्वहेतोर्गुणीव।
इत्थंभूते भवति भगवन्न त्वदन्योऽस्मि सत्यं
किन्तु ज्ञस्त्वं परमपुरुषोऽहं प्रकृत्यैव चाज्ञः॥ ३२॥

त्रिलूकी सर्वदा च़्यई मंज़ आसऽनऽः किन
छुख च़ई सारी ज़गतुक कारण
अकी विज़ि सारिनई मंज़ रोज़नऽः किन
निर्ग्वन अऽऽसित ति ज़न स्वगण
च़्ये सऽऽत्य् पऽज़्य् पऽऽठय् कुनई अऽऽसित ति
बऽः, मायायि इञ्दि ज़ोरऽः सऽऽत्यन
कम अकऽल मूर्ख स्वभावऽः किन तऽः, च़ऽः
परम परुष सोरुइ ज़ानऽवुन भगवन॥ ३२॥

संकल्पेच्छाद्यखिलकरणप्राणवाण्यो वरेण्याः
संपन्ना मे त्वदभिनवनाज्जन्म चेदं शरण्यम्।
मन्ये चास्तं जिगमिषु शनैः पुण्यपापद्वयं त-
द्भक्तिश्रद्धे तव चरणयोरन्यथा नो भवेताम्॥ ३३॥

मऽऽनित छुस बऽः त्वता च्यऽऽन्य् करनऽः सऽऽत्य्
फल म्यूल म्येः बडऽः ब्वुड मज़ऽदार
संकल्प यच्छायि म्यानि सार्यै इन्द्रयियि
प्राण मन वऽऽनी बन्येयिः शूभिदार
पुन्य-पाप प्रऽऽन्य् ति छि वारऽः वारऽः गलऽवऽन्य्
ज़न्म अऽऽर्त्यन बन्यौ रक्षाकार
नतऽः चानि चरणऽः कमलऽच्य् इः भक्ती
श्रद्धा किथऽः पऽऽठय् बनिहे म्येः यार॥ ३३॥

सत्यं भूयो जननमरणे त्वत्प्रपन्नेषु न स्त-
स्तत्राप्येकं तव नुतिफलं जन्म याचे तदित्थम्।
त्रैलोक्येशः शम इव परः पुण्यकायोऽप्ययोनिः
संसाराब्धौ प्लव इव जगत्तारणाय स्थिरः स्याम्॥ ३४॥

प्वज़ छु शरनागत च़्येः गोमुत
ज़्यनऽः मरनऽः निश छु स्वकऽल्योमुत
त्वता फल तोति अक ज़न्म च़्येः मंगान छुस
यच्छायि पनऽनि अयूनी आसऽः ज़ामुत।

त्रलूकी स्वऽऽमी सर्वसृष्ट शान्त
पव्यत्र शरीर आस्यम फ्वल्योमुत
संसारऽः सदरस ज़गत तारऽनस क्युत
दऽर नाव शुभिदार बऽः बन्योमुत॥ ३४॥

सौषुम्णेन त्वममृतपथेनैत्य शीतांशुभावं
पुष्णास्यग्रे सुरनरपितृन् शान्तभाभिः कलाभिः।
पश्चादम्भो विशसि विविधाश्चौषधीस्तद्गतोऽपि
प्रीणास्येवं त्रिभुवनमतस्ते जगन्मित्रतार्क॥ ३५॥

सुषुमनायि हञ्ज़ि अमृतमय वति किन
प्राणअपान चन्द्रमऽः भाव प्रऽऽवित
शान्त किर्णऽः दार संद्या कलायौ किन
दीवता मनऽष त प्यतृ छुक रछित
अदऽः पऽऽनिस त अनीक औषधियन मंज़
अच़ित त्रलूकी सुखी बनऽऽवित
ज़गत मित्रता च़्यऽऽन्य् ही सिर्यिः भगवान
इथय पऽऽठय् नऽन्य् पूरऽः छि बोज़नऽः इथ॥ ३५॥

मन्दाक्रान्ते तमसि भवता नाथ दोषावसाने
नान्तर्लीना मम मतिरियं गाढनिद्रां जहाति।
तस्मादस्तंगमिततमसा पद्मिनीवात्मभासा
सौरीत्येषा दिनकर परं नीयतामाशु बोधम्॥ ३६॥

अन्धकार त मल गलित अन्तर्मुऽख बनित ति
स्वुन-मूहऽ-अन्धकार, म्यऽऽन्य् बुऽद्ध न त्रावन
छय च्यऽऽन्य् भक्तिज़न, जल गटऽःनाशक–
प्रकाश ब्रह्मज्ञानऽः पनऽनि प्रज़ऽलावतन
इथऽः पऽऽठय् न्यूल या व्वज़ुल पम्पोशः
रात मुऽकऽलनऽः सऽऽती, छुनऽः केन्ह फ्वलन
मगर सिर्यि खसिथई तेज़प्रवऽः प्यनऽः सऽऽत्य्
यकदम पूरऽः पऽऽठिन, छू सुः खुलन॥ ३६॥

येन ग्रासीकृतमिव जगत्सर्वमासीत्तदस्तं
ध्वान्तं नीत्वा पुनरपि विभो तद्दयाघ्रातचित्तः।
धत्से नक्तंदिनमपि गतौ शुक्लकृष्णे विभज्य
त्राता तस्माद्भव परिभवे दुष्कृते मेऽपि भानो॥ ३७॥

यऽम्य् अज्ञानन जगत सोरुई च़ोप
ग्वडऽन्यथ छिहन सुई गालन
तथ प्यठ ति हृदयस मंज करित दया अदऽः
गटऽःपछ ज़ूनऽःपछ छुक बनावन।
अथ प्राणअपान दोह-रात अन्धकारस ति
ही व्यापक सिर्यिः च़ऽः दयावान आसन
तवय म्यून पापऽः फल कष्ट गालनऽः बापत
आस्तऽः पानय म्येः सर्वदा रछन॥ ३७॥

आसंसारोपचितसदसत्कर्मबन्धाश्रिताना-
माधिव्याधिप्रजनमरणक्षुत्पिपासार्दितानाम्।
मिथ्याज्ञानप्रबलतमसा नाथचान्धीकृतानां
त्वं नस्त्राता भव करुणया यत्र तत्र स्थितानाम्॥ ३८॥

सम्साऱ बननऽः प्यठऽः ज़ेनमति पुन्यऽ पापऽः
दार कर्म बन्धनौ सऽऽत्य् बनेमऽत्य्
अऽऽज़-व्यऽऽज़ ज़्यनऽःमरनऽः ब्वछित्रेषि सऽऽतिन
पथर प्येमऽत्य अऽऽरित बन्येमऽत्य्
ब्ययि अपज़ि ज़ऽऽन्य् हऽन्दि घूरऽः अन्धकारऽः सऽऽत्य्
पूरऽः पऽऽठिन अऽस्य् अन्य् बन्येमऽत्य्
पनऽनी दया करित रछतऽः च़ई असि
यति तति आसौ अऽस्य प्येमऽत्य्॥ ३८॥

सत्यासत्यस्खलितवचसां शौचलज्जोज्झिताना-
मज्ञानानामफलसफलप्रार्थनाकातराणाम्।
सर्वावस्थास्वखिलविषयाभ्यस्तकौतूहलानां
त्वं नस्त्राता भव पितृतया भोगलोलार्भकाणाम्॥ ३९॥

प्वज़ अप्वज़ वऽन्य् वऽन्य् ज़्यव ति कलेयिः
शौच़ लज़ा हीन अज्ञऽऽनी
सफल त न्यषफल प्रार्थना करनऽः किन
सबरिः रऽस्य् अऽस्य् छी आसऽऽनी
प्रथ अवस्थायि मंज़ सऽऽरी व्यषियि भूग
ब्ययि ब्ययि ब्ययि ब्ययि काञ्छऽऽनी
व्यषियि भूग छाञ्डान चंचल बालक
मोल छुख, मऽऽल्य् पऽऽठय् रोज़ रछऽऽनी॥ ३९॥

यावद्देहं जरयति जरा नान्तकादेत्य दूती
नो वा भीमस्त्रिफणभुजगाकारदुर्वारपाशः।
गाढं कण्ठे लगति सहसा जीवितं लेलिहान-
स्तावद्भक्ताभयद सदयं श्रेयसे नः प्रसीद॥ ४०॥

महाकालऽः सुन्द कऽऽसिद बुजरऽः रूपऽः किन
ख्युत ताम शरीरस करिनऽः पुच्रऽःपार
तऽम्य् सऽन्ज़ाई खोफनाक भयंकर त्र्येः फनदार
सर्फऽः शकलि थफ न त्रावन हार
फऽऽञ्स्य् यकदम ज़ुव च़हऽवऽन्य् हटिस प्यियि
तमि ब्रोंह ही भक्तन अभयदार
कल्यानऽः खऽऽतरऽः गछ़तऽः प्रसन्न असि
करतऽः भवऽसागरऽः ही प्रभू पार॥ ४०॥

विश्वप्राणग्रसनरसनाटोपकोपप्रगल्भं
मृत्योर्वक्त्रं दहननयनोद्दामदंष्ट्राकरालम्।
यावदृष्ट्वा व्रजति न भिया पञ्चतामेष काय-
स्तावन्नित्यामृतमय रवे पाहिनः कान्दिशीकान्॥ ४१॥

सारिनई प्रानन ग्रास करन वाजिनिः
ज़्यवि हऽन्दि व्यस्तारऽः वोल भयन्कर
महाकालऽः सुन्द मुऽख बडऽः तेज़ दन्दऽः दार
क्रूदऽः भरित ब्वुथ-ज़ालऽवऽन्य् न्येथर
वछित खोफऽ सऽऽती शरीर-मरनऽः ब्रोंठई
न्यथ अमृत मय च़्यथ सिर्यिः जल
पऽऽन्य्-पानय कर रक्षा असि च़लऽवन्यन
च़लन वति निशति इम छि बेखबर॥ ४१॥

शब्दाकारं वियदिव वपुस्ते यजुः सामधाम्नः
सप्तच्छन्दांस्यपि च तुरगा ऋङ्मयं मण्डलं च।
एवं सर्वश्रुतिमयतया मद्दयानुग्रहाद्वा
क्षिप्रं मत्तः कृपणकरुणाक्रन्दमाकर्णयेमम्॥ ४२॥

युजर त सामवीद तीजुक शब्दमय
स्वरूप च़्यथसिर्यिः ज़न च़ोन आकाश
सत छन्द ज़न सत ग्वर्य् छी चऽऽनी
मण्डुल चोन ऋृक्वीदुक प्रकाश

सारिनई वीदन हुन्द स्वरूप आसनऽः किन
ब्यियि बनिथ दयालू म्ये प्यठ भगवान
म्येः अनग्रह करनऽः बापत बोज़ जल
मऽऽन्य् इम कमपायि आरऽक्रेन्द नाद॥ ४२॥

नाशं नास्मच्चरणशरणा यान्त्यपि ग्रस्यमानाः
देवैरित्थं सितमिव यशो दर्शयन्स्वं त्रिलोक्याम्।
मन्ये सोमं क्षततनुममागर्भवृद्धया विवस्व-
ञ्शुक्लच्छायां नयसि शनकैः स्वां सुषुम्णांशुभासा॥ ४३॥

ही च़्यथसिर्यिः म्यऽऽन्य् किन च़ऽः हावान
त्र्यन लूकन पनुन प्रज़ऽलवुन यश
चान्यन चरनन शरन युस भक्तिज़न
दीवताहौ ख्योमुत ति छुनऽः सु नष्ट।
क्षीन ज़न गऽऽमऽच़्य् च़न्द्रऽः अमा कला
सुशमना किर्नऽः तीज़ऽः बडऽरित क्यथ
वारऽः वारऽः पनऽन्य् ज़ूनऽः पछि ज्यूती
ब्यियि करऽनावान छिहन प्रापत॥ ४३॥

आस्तां जन्मप्रभृति भवतः सेवनं तद्धि लोके
वाच्यं केनापरिमितफलं भुक्तिमुक्तिप्रकारम्।
ज्योतिर्मात्रं स्मृतिपथमितो जीवितान्तेऽपि भास्व-
न्निर्वाणाय प्रभवति सतां तेन ते कः समोऽन्यः॥ ४४॥

युस कान्ह ज़्यनऽः प्यठऽः लगि चानि सीवायि
छिन सु रुत, अऽस्य अलऽगई थावन
इहऽः लूक परिलूक उपाय बडि ब्वुड सु
रुत फल तम्युक कुस करि वरनन।
अगर कान्ह सत्ज़न अन्तऽः समयस ति
छु चोन ज्योति स्वरूप सुमरन
सु ति छिहन ह्यकान म्वकऽलऽऽवित च़ऽः
च़्येः स्वम कति छु कान्ह ति आसन॥ ४४॥

अप्रत्यक्ष त्रिदशभजनाद्यत्परोक्षं फलं त-
त्पुंसां युक्तं भवति हि समं कारणेनैव कार्यम्।
प्रत्यक्षस्त्वं सकलजगतां यत्समक्षं फलं मे
युष्मद्भक्तेः समुचितमतस्तत्तु याचे यथात्वाम्॥ ४५॥

न नऽन्य दीवता ति इम छिः पूज़ान
तिम ति छि कोञ्छमुत फल प्रावान
स्यज़ छयेः इः कथ दयि युथ आसि कारण
तिछई ज़गतस मंज़ कऽऽम ति बनान
न्वन छुक च़ऽः प्रथ जायि चऽऽन्य् भक्ती करित
युस न्वुन फल छि प्रऽऽवित ह्यकान
छुस सुई ब्ययि ब्ययि मंगान बऽः दयि च़्येः।
इथऽः पऽऽठय् ति छुसत सदा छ़ाण्डान॥ ४५॥

ये चारोग्यं दिशति भगवान्सेवितोऽप्येवमाहु-
स्ते तत्त्वज्ञा जगति सुभगा भोगयोगप्रधानाः।
भुक्तेर्मुक्तेरपि च जगतां यच्च पूर्ण सुखानां
तस्यान्योऽर्कादमृतवपुषः को हि नामास्तु दाता॥ ४६॥

पूज़ा करनऽः सऽऽत्य दय दिवान ओरज़ुव
इम लूक ज़न इः कथ छि मानान
तिम ज्ञऽऽनी ऐश्वर्य वान ब्ययि
भूग त यूगई थदि-थ्वुद मानान
सम्सारस मंज़ सुऽखऽः भ्वुर ओरज़ुव
ही भूगऽः मूक्षि दातऽः म्यानि भगवान
अमृतऽमय च़्येः च़्यथ-सिर्यि नाथस
भ्यन्न कुस कुनि छु अऽऽसित ह्यकान॥ ४६॥

हित्वा हित्वा गुरुचपलतामप्यनेकान्निजार्था
न्नैरेकार्थीकृतमिव भवत्सेवनं मत्प्रियार्थम्।
तेषामिच्छाम्युपकृतिमहं स्वेन्द्रियाणां प्रियाणा-
मादौ तस्मान्मम दिनपते देहि तेभ्यः प्रसादम्॥ ४७॥

ही द्यनऽः नाथऽः म्यानि टाछि यन्द्रययि
म्योन ह्यतऽः कार छयेः योत काञ्छान
अनगिनत व्यषय तऽ बऽड चञ्चलता
पनऽन्य् पूरऽः पऽऽठय् इमऽः दूर त्रावान
चऽऽन्य् पूज़ा उपासना यऽऽच़ई
छयेः पनुन कऽऽम कार पूरऽः मानान
इहुन्द उपकार छुस वुन्य ब काञ्छान
म्येः ब्रोन्ह करतख अनुग्रह प्रदान॥ ४७॥

किं तन्नामोच्चरति वचनं यस्य नोच्चारकस्त्वं
किं तद्वाच्यं सकलवचसां विश्वमूर्ते न यत्त्वम्।
तस्मादुक्तं यदपि तदपि त्वन्नुतौ भक्तियोगा-
दस्माभिस्तद्भवतु भगवंस्त्वत्प्रसादेन धन्यम्॥ ४८॥

क्वसऽः सना कथ छि कुनि करनऽः इवान
विश्वमूर्तः ख्युसऽः नऽ च़ऽई उच्चारण करान
कथन या व्यषयन मंज़ छा त्युथ केन्ह
स्वरूपऽः चानि निश युस भ्युन्न आसान
प्रेमऽः ज़ोरऽः, त्वतायि मंज़, इः केन्ह म्ये व्वनुई
सुति स्वरूप चोनुई न्वन आसान
दयायि चानिः सऽऽत्य् इः करितन कल्यान असि
करऽवुन त कर्म ति छुख च़ई आसान॥ ४८॥

या पन्थानं दिशति शिशिराद्युत्तरं देवयानं
या वा कृष्णं पितृपथमथो दक्षिणं प्रावृडाद्यम्।
ताभ्यामन्या विषुवदभिजिन्मध्यमा कृत्यशून्या
धन्या काचित्प्रकृतिपुरुषावन्तरा मेस्तु वृत्तिः॥ ४९॥

ख्युसऽः प्राणऽः वृत्ति वन्दऽः ब्रोन्ह कुन वथ
दीवयान उत्तरायन हावान
ब्ययि बरसातऽः प्यठऽः क्रहऽन्य् पितृयानऽ नऽऽव्
दक्षिनायन अपानऽः वथ हावान
तिमौ निशि भ्युन विश्ववत अभिज़्यत
कर्तव्य हीन थ्यकऽवऽन्य् कुसऽताम
प्रकृती पुऽरऽषस मंज़बाग रोज़ऽवऽन्य्
वृत्त रूज़तन म्येः सदा भगवान॥ ४९॥

स्थित्वा किञ्चिन्मन इव पिबन्सेतुबन्धस्य मध्ये
प्राप्योपेयं ध्रुवपदमथो व्यक्तमुद्दाल्य तालु।
सत्यादूर्ध्वं किमपि परमं व्योम सोमाग्निशून्यं
गच्छेयं त्वां सुरपितृगती चान्तरा ब्रह्मभूतः॥ ५०॥

करित मन लय प्राणअपानऽः मंज़बाग
सीतबन्धऽः कदलऽः ठहरित पूज़नी
अनुत्तर पदवी प्रऽऽवित चूरिम
लम्बिका वथ तालऽः मंज़ऽः च़टिथई।

दीवयान पितृयानऽः मंज़ मूलऽः ब्रह्मुक
साक्षात्कार करित प्राण-अपानऽः शून्य्
पज़रऽः ख्वतऽः थ्वद चिदाकाशः रोज़ऽवुन
अलौक्यक स्वरूप चोन ग्वछुस प्रावनुई॥ ५०॥

सर्वात्मत्वं सवितुरिति यो वाङ्मनःकायबुद्धया
रागद्वेषोपशमसमतायोगमेवारुरुक्षुः।
धर्माधर्मग्रसनरशनामुक्तये युक्तियुक्तां
स श्रीसाम्बः स्तुतिमिति रवेः सुप्रशान्तां चकार॥ ५१॥

करित रागऽःद्वेषऽः मन शान्त, युस श्री साम्ब
समता यूगस प्यठ ठहऽरिथई
सिर्यिः भगवानऽः सऽञ्ज्य ज़गत रूपता ओस
ज़ानऽन्य काञ्छान नालऽः रटिथई
पुन्यपापऽः फाञ्सि मंज़ऽः नेरनऽः बापत
मन वानी काया त ब्वुऽज़्य् थऽज़ई
चितरूपऽः सिर्यिः भगवानऽन्य् रऽच्य् इः
आत्मविश्रान्तिदा त्वता ओस करऽनई॥ ५१॥

भक्तिश्रद्धाद्यखिलतरुणीवल्लभेनेदमुक्तं
श्रीसाम्बेन प्रकटगहनं स्तोत्रमध्यात्मगर्भम्।
यः सावित्रं पठति नियतं स्वात्मवत्सर्वलोका-
न्पश्यन्सोऽन्ते व्रजति शुकवन्मण्डलं चण्डरश्मेः॥ ५२॥

भक्ती श्रद्धाद्यक दीवियन हन्द्य् टऽऽठय्
श्री साम्बन इः सिर्यि त्वता
रहस्य ति प्रकट ति ब्ययि प्रकटरहस्य्
स्वरूपऽः ज्ञानऽः भरित कऽर वन्दना
नेयमऽः पूर्वक युस पाठ यम्युक करि
सम्सऽऽरियन स्वात्म रूप जानता
अन्तऽः कालस प्यठ शुकऽदीवऽऽन्य पऽऽठय्
चित रूपऽः सिर्यिः मण्डुल फल प्रावता॥ ५२॥

इति परमरहस्यश्लोकपञ्चाशदेषा
तपननवनपुण्या सागमब्रह्मचर्चा।
हरतु दुरितमस्मद्वर्णितार्कणिता वो
दिशतु च शुभसिद्धिं मातृवद्भक्तिभाजाम्॥ ५३॥

सिर्यि भगवानऽः संज़ त्वता आसनऽः किन
छि आगम शास्त्र त ब्रह्म ज्ञानऽ भर्ऽ
पञ्चाह श्लूकन हंऽज़ रऽच्य् अस्तुती
आत्मऽः रहस्य दार युऽसऽः म्येः कर्ऽ
मऽऽज़ा ज़न रछितन तुहि परवन्यन
दुऽख दऽऽद्य् पाप ह्यथ दूर कर्ऽ कर्ऽ
कल्याण रूप श्रेष्ट सिद्धी दियिनवऽः
भऽक्तयन भक्ती हऽर् कर्ऽ कर्ऽ॥ ५३॥

उपसंहार

सम्पूर्ण गयि अज इः लीला
श्री ईश्वर स्वरूपनिः दयायि सऽऽत्य्॥ १॥

साम्ब जी कृष्णऽ भगवानऽः सऽन्द्य् न्यचिव
दऽऽद्य् बलनऽः खऽऽतरऽः कऽर भक्तियि सऽऽत्य्॥ २॥

हिन्दी पऽऽठय व्यसतारऽः जान पऽऽठय्
तरजमऽः क्वरमुत श्री ग्वरऽः दीवन॥ ३॥

सुई पऽर्य् पऽर्य् दीनन ति क्वर जयंकार
स्वात्मऽः स्वरूप सारिनई ज़ीवन॥ ४॥

श्री ईश्वर स्वरूपन्यन दासन हुन्द दास
अनपढ अज्ञऽऽन्य् गुण्ज "दीन" दास॥ ५॥

स्वदर्शन गुन्ज ज्ञानऽवान मोल तस
विवेकानन्दन तारऽः तोरमुत॥ ६॥

लीलावती अर्धाङ्गनी तऽम्यसंज्य्
श्री गाशऽः काकन वुज़ऽनऽऽमज्य्॥ ७॥

ग्वरऽः दया दीनस छि प्यठ बडऽःखास
साम्बस्त्वती कऽऽशुर करनऽः सऽऽत्य, गव पास॥ ८॥

ग्वरऽः दीवन तस गटऽः अऽऽस गऽऽजमऽच्य्
वैरांग दित बुऽद्ध भक्ति भावस लऽऽजमऽज्य्॥ ९॥

आचार्य रामेश्वरन भ्ययि शारिका दीवी
प्रभा जी तऽम्य्सऽञ्ज़्य् सूर खऽऽरमऽच़्य्॥ १०॥

शारिका दीवी सतगरऽः शक्ती
तस दया दृष्टी पूरऽः थऽऽवमऽच़्य्॥ ११॥

भगवत लीला नऽन्य तस हऽऽवमऽच़्य
जय गुरु देव तस बऽऽनी बनऽऽवमऽच़्य॥ १२॥

ईस्वी सन द्वसतथई मंज लोल दिथ
इ त्वता कऽऽशिर पऽऽठय् फिरऽनऽवमऽच़्य॥ १३॥

सतग्वरन शऽऽन्ती प्रदान तस करऽमऽच़्य
जय ग्वरु देव बोलो माल तम्य् फिरमऽच़्य॥ १४॥

"दीन"



परमार्थसार

कशमीरी पद्यानुवाद सहित

ॐ जय गुरुदेव

ॐ नमः चिदात्मपरमार्थवपुषे

परं परस्थं गहनादनादिम्
एकं निविष्टं बहुधा गुहासु।
सर्वालयं सर्वचराचरस्थं
त्वामेव शंभुं शरणं प्रपद्ये॥ १॥

थदि ख्वुतऽः थ्वुद मायातीतः सुः
ग्वडऽः रुस कुनई हृदयन मंज़ निवास
सारिनई हुन्द ओल सऽऽरिसई मंज़ सुः
तस्य स्वात्मस शिवस म्योन नमस्कार॥ १॥

गर्भाधिवासपूर्वक
मरणान्तकदुःखचक्रविभ्रान्तः।
आधारं भगवन्तं
शिष्यः पप्रच्छ परमार्थम्॥ २॥

ज़्यन-मरन आवलनऽः थऽऽव्थरेयाव यलि
गुरुदेव कपिलस करुण ज़ारऽःपार
दिम थ्वुद उपदीश यमि सऽऽत्य जल जल
सम्सारऽः सागरस लगि म्येः तार॥ २॥

आधारकारिकाभि-
स्तं गुरुरभिभाषते स्म तत्सारम्।
कथयत्यभिनवगुप्तः
शिवशासनदृष्टियोगेन॥ ३॥

श्यशस ल्वुग सु उपदीश करने
आधार कारिका तिमन नाव
अभिनवगुप्त बऽः तिमय कारिकायि
शिवदृष्टी हन्दि प्रकाशिः हाव॥ ३॥

निजशक्ति वैभवभरात्
अण्डचतुष्टयमिदं विभागेन।
शक्तिर्माया प्रकृतिः
पृथ्वी चेति प्रभावितं प्रभुणा॥ ४॥

शिवऽः शक्ती भरबुकऽः फ्वलऽवऽन्य
च़्वन ग्वगऽलन मंज़ ननिरऽऽवऽन
शक्ति माया प्रकृत्ति पृथ्वी
भ्युन भ्युन तिमन नाव थोवुन॥ ४॥

तत्रान्तर्विश्वमिदं
विचित्रतनु-करण-भवन संतानम्।
भोक्ता च तत्र देही
शिव एव गृहीतपशुभावः॥ ५॥

तऽथ्य मंज़ नाना रूपी बन्यौ
दीह यन्द्रय लरि तय जाये
पानय भोग तय पानय भूगान
शिव नाथई पशुता धारे॥ ५॥

नानाविधवर्णानाम्
रूपं धत्ते यथाऽमलः स्फटिकः।
सुरमानुषपशुपादप-
रूपत्वं तद्वदीशोऽपि॥ ६॥

निर्मल स्वठका म्युन भ्युन रंग जन
युथ हावोस त्युथ तोरऽः हावे
दीव इन्सान हयवान कुल्य् कऽटय् ह्यू
भगवान पानय पनुन पान हावे॥ ६॥

गच्छति गच्छति जल इव
हिमकरबिम्बं स्थिते स्थितिं याति।
तनु करण भुवनवर्गे
तथाऽयमात्मा महेशानः॥ ७॥

कुवलि मंज प्रकवुन तऽ नागस मंज रहिथ
इथऽः पऽऽठय् चन्द्रमऽः अकस भासान
तन यन्द्रयि लरि जायि ह्यू
शिव तिथय पऽऽठय पनुन पान हावान॥ ७॥

राहुरदृश्योऽपि यथा
शशिबिम्बस्थः प्रकाशते तद्वत्।
सर्वगतोऽपि अयमात्मा
विषयाश्रयणेन धीमुकरे॥ ८॥

न वुछिनऽः इवऽःवुन राह इथऽः पऽऽठय्
चन्दरमस अन्दरई लभनऽः इवान
कर्म करनऽः विज़िः ब्वुज़ अऽऽनस मंज
व्यापक शिव तिथय पऽऽठय् द्रेण्ठ इवान॥ ८॥

आदर्शे मलरहिते
यद्वद् वदनं विभाति तद्वद् अंयम्।
शिव-शक्तिपातविमले
धीतत्त्वे भाति भारूपः॥ ९॥

साफ शफाफ अऽऽनस मंज इथऽः पऽऽठय्
वारऽः पऽऽठय आमलूख बुथ छि वुछान
शक्ती पातऽःलद न्यर्मल ब्वुज़ मंज़
तिथय पऽऽठय आत्मा रव प्रज़लान॥ ९॥

लूकन साधकन त शक्ती पातन
मंज वनऽनऽःआयि अकि अकि ज़ान
यूगारूडन मंज व्वन्यु बूज़ियू
आसान क्युथ ह्यू गाश ज़ोतान॥

भारूपं परिपूर्णं
स्वात्मनि विश्रान्तितो महानन्दम्।
इच्छासंवित्किरणैर्
निर्भरितमनन्तशक्तिपरिपूर्णम्॥ १०॥

सर्वविकल्पविहीनं
शुद्धं शान्तं लयोदयविहीनम्।
यत् परतत्त्वं तस्मिन्
विभाति षट्त्रिंशदात्म जगत्॥ ११॥

गाशऽः रूप पूर्ण
पानस मंज़ई ठहऽरित पूर्णानन्द
इच्छा ज्ञान क्रिया
ब्यथि सारी ज़गत शक्ती वोल शुद्धानन्द॥ १०॥

न छिस विकल्प संकल्प
शुद्ध शान्त त ज़्यनऽः मरनऽः निश मुक्तानन्द
थदि ख्वतऽः थ्वुद तऽ
शयत्रहऽःतत्त्वमय ज़गत तऽस्य मंज़ बन्द॥ ११॥

दर्पणबिम्बे यद्वत्
नगरग्रामादि चित्रमविभागि।
भाति विभागेनैव च
परस्परं दर्पणादपि च॥ १२॥

विमलतमपरमभैरव–
बोधात् तद्वद् विभागशून्यमपि।
अन्योन्यं च ततोऽपि च
विभक्तमाभाति जगदेतत्॥ १३॥

अऽऽनस मंज़ लरि जायि, करितव विचार
छुना अऽऽनय योत आसान
मगर अकस तमिक, तमि अऽऽनऽः निशः भ्युन
त पानऽवन्य ति, अलग अलग भासान॥ १२॥

इथय पऽऽठय् इ ज़गत त अम्युक प्रपंच
निराकार शिवई योत अऽऽसित
तमि ज्ञानऽः गाशऽः निशऽः भ्युन तऽ
पानऽः वऽन्य् ति अलग अलग भासान॥ १३॥

शिव-शक्ति-सदाशिवता
मीश्वर-विद्यामयीं च तत्त्वदशाम्।
शक्तीनां पञ्चानाम्
विभक्तभावेन भासयति॥ १४॥

चित-आनन्द-यच्छा-ज्ञान-क्रिया
पऽऽञ्चन शक्तियन हुन्द प्रकाश भ्युन भ्युन
शिव शक्ति सदाशिव रूप भगवान
ईश्वर त शुद्धविद्या रूपऽः हावान॥ १४॥

परमं यत् स्वातन्त्र्यं
दुर्घटसंपादनं महेशस्य।
देवी मायाशक्तिः
स्वात्मावरणं शिवस्यैतत्॥ १५॥

थदि ख्वतऽः थऽज़ स्वतन्त्र शक्ती
भगवानऽः संऽज, न बननी कऽऽम करान
तमी माया शक्ती सऽऽत्य
शिव पानय पान खटिथ थवान॥ १५॥

मायापरिग्रहवशाद्
बोधो मलिनः पुमान् पशुर्भवति।
काल कला नियतिवशाद
रागाविद्यावशेन संबद्धः॥ १६॥

माया हुन्द जामऽः लऽऽगित ब्वुज़्ज़ान
छु मलदार पुरुष ज़न प्वश बनान
काल कला नीयति हन्दि ज़ऽर्यिः
रागऽः अविद्यायि गण्ड्नऽः इवान॥ १६॥

अधुनैव किंचदेवे-
-दमेव सर्वात्मनैव जानामि।
मायासहितं कञ्चुक –
षट्कमणोरन्तरङ्गमिदमुक्तम्॥ १७॥

वन्य्क्यनऽःसई इ चीज़ यमि प्रकारऽः
सोरुई बई योत छुस ज़ानान
माया इमौ सान श्ययौ जामौ ज़न
ज़ीवात्माहस अन्द्री गन्डान॥ १७॥

कुम्बकमिव तण्डुलकण-
विनिविष्टं भिन्नमप्यभिदा
भजते तत्तु विशुद्धिं
शिवमार्गौन्मुख्ययोगेन॥ १८॥

तिम शेःजामऽः क्वुम ज़न त्वमलऽः फलिस वलान
तथ सऽऽत्य् भ्युन अऽऽसित ति तऽथ्य् मंज भासान
मगर शिव मार्गचि रचि वतिः पकनऽः सऽऽत्य्
तिम शेः गण्ड तिः निर्मल शिवभावई बनान॥ १८॥

सुख-दुःख-मोहमात्रं
निश्चयसंकल्पनाभिमानाच्च।
प्रकृतिरथान्तःकरणं
बुद्धिमनोऽहंकृतिः क्रमशः॥ १९॥

सुऽख दुऽख त मोह यलि स्वुम आसि
तथ छु प्रकृत नाव आसान
निश्चय संकल्प ब्ययि अभिमान
बुऽद्ध, मन त अहंकार बनान॥ १९॥

श्रोत्रं त्वगक्षि रसना
घ्राणं बुद्धीन्द्रियाणि शब्दादौ।
वाक्पाणि-पाद-पायू –
पस्थं कर्मेन्द्रियाणि पुनः॥ २०॥

ज्ञान इन्द्रय त कर्म इन्द्रय
आवाज वगैरऽः कारबारस मंज़ अनान
कन चम अऽछयू ज्यव त नस
ज़्यव अथऽः ख्वर गुदा उपस्थ बनान॥ २०॥

एषां ग्राह्यो विषयः
सूक्ष्मः प्रविभागवर्जितो यः स्यात्।
तन्मात्रपञ्चकं तत्
शब्दः स्पर्शो महो रसो गन्धः॥ २१॥

इमौ इन्द्रयौ रऽटय् व्यषय
अऽऽविल त तिमन सऽऽत्य् कुनिई
तिमई पऽऽञ्च़ तन्मात्र- शब्द
स्पर्श-रूप-रस त गन्ध आसान॥ २१॥

एतत्संसर्ग वशात्
स्थूलो विषयस्तु भूतपंचकताम्॥
अभ्येति नभः पवन –
स्तेजः सलिलं च पृथ्वी च॥ २३॥

तिमई तन्मात्रायि पऽऽञ्च़
पानऽः वऽन्य अखअकिस मेलनऽः सऽऽत्य्
आकाश वायु नार पोन्य् पृथ्वी
सोबोत पञ्च महाभूत बनान॥ २३॥

तुष इव तुण्डुलकणिका —
मावृणुते प्रकृतिपूर्वकः सर्गः।
पृथ्वीपर्यन्तोऽयं
चैतन्यं देहभावेन॥ २४॥

चैतन्य स्वरूप आत्मा ज़न त्वमलऽः फ्वल
प्रकृती प्यठऽः पृथ्वी हन्दि तोहऽः सऽऽत्य् वलनऽः इवान
इहो सम्सार ग्वडऽः शरीर बनित
तऽथ्य् शरीरस प्यठ आत्म भावना करान॥ २४॥

परमावरणं मल इह,
सूक्ष्मं, मायादि कंचुकं, स्थूलम्।
बाह्यं विग्रहरूपं —
कोशत्रयवेष्टितो ह्यात्मा॥ २४॥

शिव दृष्टी किन ग्वडऽन्युक वलुन आणवमल
मायाऽऽयी शेः परदऽः द्वयुम सूक्ष्मऽः पलव आसान
प्रकृती प्यठऽः पृथ्वी ताम शरीर त्रयुम स्थूल वलुन
इमज्वई त्रयौ सऽऽत्य वुलमुत शिव, ज़ीव बनान॥ २४॥

अज्ञान तिमिरयोगाद्
एकमपि स्वं स्वभावमात्मानम्
ग्राह्य-ग्राहकनाना —
वैचित्र्येणावबुध्येत॥ २५॥

हाय कुस जीवात्मा लासऽऽनी तऽ लामिसाल
अज्ञानऽः अन्यर प्यनऽः अकलि निश गव कंगाल
कथ पनऽनिस सहज़ स्वभाव आत्माहस
कऽसमऽः कऽसमऽः सोदा त सोदागार मानान॥ २५॥

रस-फाणित-शर्करिका
गुड-खण्डाद्या यथेक्षुरस एव।
तद्वद् अवस्थाभेदाः
सर्वे परमात्मनः शंभोः॥ २६॥

रस प्वछ़ शकर गोर या खण्ड
छिना अकिसई गणऽ रसस तीत्य् ब्वथ्य् आसान
ज़ाग्रत स्वपुन सुषप्त वगैरऽः जीवऽः अवस्थायिः
अकिसई चिदात्माशिवऽः सऽन्दी रूप आसान॥ २६॥

विज्ञानान्तर्यामि —
प्राणविराड्देहजातिपिण्डान्ताः।
व्यवहारमात्रमेतत्
परमार्थेन तु न सन्त्येव॥ २७॥

ज़ान केन्ह वनान त केन्ह अन्तरयऽऽमी
केञ्चव व्वन प्राण त व्यराठ स्वरूप केञ्चव
केन्ह वनान क्वलऽः धर्म त केन्ह पनऽनुई म्वर
अलग अलग मत छिस अलग अलग नाव बनान
वुछुम शिव दृष्टी त इम नाव सऽऽरी
कारबारई योत, पज़र नऽ कुनी आसान॥ २७॥

रज्ज्वां नास्ति भुजङ्ग —
स्त्रासं कुरुते च मृत्युपर्यन्तम्।
भ्रान्तेर्महती शक्ति —
न विवेक्तुं शक्यते नाम॥ २८॥

रज़ि मंज छु नऽः सरुफ
भ्रम यलि गछ़ि मरनस नऽः कमी रोज़ान
भ्रमुक अगाध ताकत
छुनऽः सहल पऽऽठय् वनऽनऽः इवान॥ २८॥

तद्वद् धर्माधर्म —
स्वर्निरयोत्पत्तिमरणसुखदुःखम्।
वर्णाश्रमादि चात्म—
न्यसदपि विभ्रमबलाद्भवति॥ २९॥

कति धर्म अधर्म कति स्वर्ग त नरुख
ज़्युन-मरुन सुऽख-दुऽख वर्ण-या आश्रम कति
अमी भ्रमऽः ज़ोरय छि बोज़नऽः इवान
असलियत छयक न कुनिकेन्ह आसान॥ २९॥

एतत् तदन्धकारं
यद भावेषु प्रकाशमानतया।
आत्मानतिरिक्तेष्वपि
भवत्यनात्माभिमानोऽयम्॥ ३०॥

वछितौ कोताः छु अन्धकार
प्रकाश रूप जगत पनऽनुई पान।
मोहऽः भ्रमऽः सऽऽत्य् असि ज़ोन व्वपर
तऽ पानय मशरोव आत्मुक ज्ञान॥ ३१॥

तिमिरादपि तिमिरमिदं
गण्डस्योपरि महानयं स्फोटः।
यदनात्मन्यपि देह –
प्राणदावात्ममानित्वम्॥ ३१॥

अन्धकारस ति वऽछ़ द्वगऽन्य् गटः
मुगन्डस प्यठ जन फ्यल छु बडान
आत्मा गव नऽः शुर्यं-बऽऽच़ दीह या प्राण
इमय जऽऽन्य् असि पान, ज़न भगवान
अमि ख्वतऽः क्याः अन्यर त क्या अज्ञान ॥ ३१॥

देह प्राण विमर्शन
धीज्ञान नभः प्रपञ्चयोगेन।
आत्मानं वेष्टयते
चित्रं जालेन जालकार इव॥ ३२॥

ज़ाग्रत सुषप्त शरीर दीह त प्राण मानान पान
ब्वुज़ ज्ञान स्वपन शरीर त शून्य मिलऽनावान
तऽऽजुबऽः किथऽः कऽन्य आत्माहस ज़गत वलान
पऽऽटय् क्युम् ज़न पान, पानय बन्द करान॥ ३२॥

स्वज्ञानविभवभासन
योगेनोद्वेष्टयेन्निजात्मानम्।
इति बन्धमोक्षचित्रां
क्रीडां प्रतनोति परमशिवः॥ ३३॥

अज्ञानऽः त अन्धकारऽः बेह्यस गोमुत
यूगी ज्ञानऽः प्रकाशऽः पानस वुज़ऽनावान।
पऽऽन्य् पानऽः पान गण्डान त खोलान
अलौक्यक स्वतन्त्र खेलाः परम शिव– खेलान॥ ३३॥

सृष्टि स्थिति संहारा
जाग्रत्स्वप्नौ सुषुप्तमिति तस्मिन्।
भान्ति तुरीये धामनि
तथापि तैर्नावृतं भाति॥ ३४॥

सृष्ट वनतस थ्यत या सम्हार
ज़ाग्रत स्वपुन वनतस या स्वषुप्त
तुर्य रूपसई मंज छी इम फ्वलेमऽत्य्
मगर सु तुर्यात्मा शिव, कुनि न वलनऽः इवान॥ ३४॥

जाग्रद्विश्वं भेदात्
स्वप्नस्तेजः प्रकाशमाहात्म्यात्।
प्राज्ञः सुप्तावस्था
ज्ञानघनत्वात्ततः परं तुर्यम्॥ ३५॥

प्रपञ्च पानऽः वऽन्य् अलग अलग भासऽनावऽवुन
जीवात्मा संऽज़्य् जाग्रत ब्रह्म सुन्द विराट- स्वरूप
प्रकाश योतई फ्वलऽनावऽवुन
ज़ीवात्मा सुन्द स्वपुन छुस तीज़ आसान
ज्ञानई योत यथ मंज सुई
जीवात्मा सऽञ्ज्य् स्वशप्ती ज्ञानवान दशा
मगर ज्ञानऽःघन तुर्या, इमन मंज़ अऽऽसित ति
इमौ थ्वुद अमायिक शिवरूप आसान॥ ३५॥

जलधर-धूम-रजोभि-
र्मलिनीक्रियते यथा न गगनतलम्।
तद्वन्मायाविकृतिभि-
रपरामृष्टः परः पुरुषः॥ ३६॥

अऽबुर अऽऽसतन दह या गर्दगुभार
आकाशस छा कुनि सऽऽत्य मल प्यवान
ज़ीवस अऽऽसतन कऽऽत्याः मायायि गण्ड
चैतन्यात्मा शिव न ज़ान्ह गण्डनऽः इवान॥ ३६॥

एकस्मिन् घटगगने
रजसा व्याप्ते भवन्ति नान्यानि।
मलिनानि तद्वदेते
जीवाः सुख-दुःख-भेदजुषः॥ ३७॥

नटिस मंज अऽऽसतन मल या अतऽर
ब्यइस नटिस छा तम्युक असर वातान
इथय पऽऽठय् मलौ त कर्मौ पनऽन्यौ मूजूब
ज़गतस मंज़ सुख दुःख अलग अलग भूगान॥ ३७॥

शान्ते शान्त इवायं
हृष्टे हृष्टौ विमोहवति मूढः।
तत्त्वगणे सति भगवान्
न पुनः परमार्थता स तथा॥ ३८॥

यूगियस मंज सतूगुण, योग रूप, भासान
करमिष्टस रज़ोगुण कर्मई योत
तमूगुणी मूडस मंज वछतन बेअकली
आत्मा गुणातीत समरूप क्षूभहीन आसान॥ ३८॥

यदनात्मन्यपि तद्रूपा—
वभासनं तत् पुरा निराकृत्य।
आत्मन्यनात्मरूपा
भ्रान्तिं विदलयति परमात्मा॥ ३९॥

कन थव ह्यस थव छुखय त्रुक
परमार्थसारुक सार छुई इहोय टुख
शुर्य् बज्ज्य् लरि धनऽः शरीर गव न पान
दीह प्राण पुर्यष्टक शून्य गव न पान
इहोय मल यलि अछयौ प्यठऽः छु तुलान
दय दया अदऽः पूरऽः पऽऽठिन करान
विराठ स्वरूप विश्व युस छु भगवान
सुइ गव पान, संव्यत सुई गव ज्ञान
ती भास छुस पूरऽः पऽऽठय् करऽनावान॥ ३९॥

इत्थं विभ्रमयुगलक—
समूलविच्छेदने कृतार्थस्य।
कर्तव्यान्तरकलना
न जातु परयोगिनो भवति॥ ४०॥

इथय पऽऽठय् भ्रमऽ जूर्य् मूलऽः मुञ्जि गऽऽलित
दयि दयायि इः यूगी कृतकृत्य बनान
तीर्थ यत्रा जप तप पाठ पूज़ा
केन्ह कर्म करनऽच्य् न यच्छा तिं व्युथान ॥ ४०॥

पृथिवी प्रकृतिर्माया
त्रितयमिदं वेद्यरूपतापतितम्।
अद्वैतभावनबलाद्
भवति हि सन्मात्रपरिशेषम्॥ ४१॥

अद्वैत भावना पूरऽः पऽऽठय् करनऽः ज़ोरऽः
पृथिवी प्यठऽः मायायि ताम सोरुई ज़गत
पूरऽः पऽऽठय् ज्ञानऽः रूपई छुस बनान,
सत्मात्रई योत छुस बोज़नऽः इवान
तऽ, तात्विक रूप "स" अनुभव करान॥ ४१॥

रशना कुण्डलकटकं
भेदत्यागेन दृश्यते यथा हेम।
तद्वद्- भेदत्यागेन
सन्मात्रं सर्वमाभाति॥ ४२॥

कमरबन्द गुणुस दूर कान्ह ति स्वनऽ वस
शकलि फरक त्रऽऽवित छुना स्वनईयोत आसान।
इथय पऽऽठय भीदऽः भाव त्याग करित
अकऽत्रऽः त्वत ज़गत सत्मात्र "स" आसान॥ ४२॥

तद्ब्रह्म परं शुद्धं
शान्तमभेदात्मकं समं सकलम्।
अमृतं सत्यं शक्तौ
विश्राम्यति भास्वरूपायाम्॥ ४३॥

इहोय "स" कार न्यर्मल ब्रह्म सम त जगतरूप
आनन्द सत्मात्र-सार प्रकाश
यच्छा ज्ञान क्रिया शक्तियौ ख्वट पानस मंज़
त तिछुन्दुई प्रकाश-रूप बनिथ गछान॥ ४३॥

इष्यत इति वेद्यत इति
संपाद्यत इति च भास्वरूपेण।
अपरामृष्टं यदपि तु
नभः प्रसूनत्वमभ्येति॥ ४४॥

शब्दार्थ

जगतस मंज़ इः केन्ह यछऽनःज़ानऽनः करनःइवान
ति अगर त्र्यन दैवी शक्तियन न्यबर भासान
त्यलि छःनऽः तथ आकाशि पोशिक पऽऽठय्
बिलकुल केन्ह असलियत आसान॥ ४४॥

भावार्थ

इहय गयि यच्छा त इहोय ज्ञान
इहय गयि क्रिया पानऽः भगवान
अभि न्यबर अगर कान्ह केन्ह वनी
ति आकाशऽः पोशई ज़ान॥ क॥

तथा

इहोय सकार जगत तम्य परमऽः शिवन
योछ जोन त बनोवन
इमऽःनई त्र्यन शक्तियन मंज़ सोरुइ समावान
अमि भ्युनय कान्ह केन्ह वनिय ति नभऽपोश ज़ान॥ ख॥

शक्ति त्रिशूल परिगम-
योगेन समस्तमपि परमेशे।
शिवनामनि परमार्थे
विसृज्यते देवदेवेन॥ ४५॥

इहोय सकार ज़गत परमऽः प्रकाश
परं ब्रह्म संऽज यच्छा ज्ञान त क्रिया ज़ान
इमन यलि पानऽःवऽन्य कुनई गव
सुई शिवशक्ती मंज आः आः विश्राम ज़ान॥ ४५क॥

अकऽत्रऽः तत्वन हुन्द इ सोरुइ ज़गत "स"
यच्छा ज्ञान त क्रिया "औ" स्वरूपई ज़ान
त्यली तऽमिसई भगवानऽःसऽन्ज़ि दयायि सऽऽत्य्
तमिसइ शिवशक्ती मंज़ "आःआः" छु विश्राम॥४५ख॥

इः वुन भीद रूप अकऽत्रऽः त्वत "सकार" ज़गत
किथऽःकऽन्य् छु भीदाभीद शक्ति "औवस" मंज वातान
तमि पति अभीद शिवभाव आःहस मंज़ लय गछ़ान.
इः गढ़ि अन्तरिक समाध, बोज़ वुन्य व्युथान॥ ४५ख॥

अनुत्तर शिव भाव में पहुँच कर अब यह परम
योगी जगत की तरफ नीचे आते हुए भी
वास्तविक परमार्थ दृष्टि से ऊपर ऊपर ही
चढ़ता जाता है॥ ब्वन कुन ह्युर खसान।
(श्री ईश्वरस्वरूप)

पुनरपि च पंचशक्ति
प्रसरणक्रमेण बहिरपि तत्।
अंडत्रयं विचित्रं
सृष्टं बहिरात्मलाभेन॥ ४६॥

ब्यियि पऽऽञ्च्न शक्तियन इः अलौकिक शिव
त्र्यन ग्वगलन मंज़ दुबारऽः फ्वलऽरावान
त स्वरूपसई मंज़ संहार क्वरमुत
पनऽःनुई स्वरूप न्यबर कुन सृष्ट करान॥ ४६॥

इति शक्तिचक्रयन्त्रं
क्रीडायोगेन वाहयन्देवः।
अहमेव शुद्ध रूपः
शक्ति महाचक्रनायकपदस्थः॥ ४७॥

अहं परामर्श करुम इथुई
अहमेव अहमेव अहमेव
बई छुस बई छुस त बई छुस
ज़गत शक्तियन हऽन्ज़ मशीन फिरान
गिन्दुना करान
न छुम ह्युन न छुस कनान
साफ शफाफ न रंग न रूप
बऽड मिशीन स्वातन्त्र शक्ती
तत् प्यठ् सरदऽऽरिया करान॥ ४७॥

मय्येव भाति विश्वं
दर्पण इव निर्मले घटादीनि।
मत्तः प्रसरति सर्वं
स्वप्नविचित्रत्वमिव सुप्तात्॥ ४९॥

द्वयिम दशा द्वयम अमि ख्वतऽः थऽज़
यति विश्वप्रतिबिम्ब परामर्श करान
इथऽः पऽऽठय् अऽऽनऽः मंज़ऽः लरि-जायिः
तिथय म्यी मंज़ऽः इः सोरुई ज़गत नेरान॥ ४९॥

अहमेव विश्वरूपः
करचरणादिस्वभाव इव देहः।
सर्वस्मिन्नहमेव
स्फुरामि भावेषु भास्वरूपमिव॥ ४९॥

आत्म व्याप्ती परामर्शस मंज़ छुस ज़गतरूप
यथ मंज़ दीह अथऽः ख्वर स्वभाव आसान
चीज़न मंज़ युस असलुक गाश
ति बई पानऽसई मंज़ पानऽःज़ोतान॥ ४९॥

दृष्टा श्रोता घ्राता
देहेन्द्रियवर्जितोऽप्यकर्तापि।
सिद्धान्तागमतर्कां-
श्चित्रानहमेव रचयामि॥ ५०॥

थऽदि ख्वुतऽः थऽज़ छयम दशा
शिव व्याप्ती परामर्श छिस वनान
न छुस शरीर न इन्द्रय न केन्ह करवुन
तोति छुस वछान बोज़ान त मुशक ह्यवान
सिद्धान्त आगम त तर्क शास्त्र
अनगिनत त अलौक्यक बई बनावान
मुऽक्तसर अथऽः या ब्वुज़ मंज़ऽः इः केन्ह द्राव
सऽऽरी पोश ज़न बऽई फ्वलान
देव्योवाच भैरवोवाच
सवाल ति जवाब ति बई आसान॥ ५०॥

ईश्वर स्वरूपस लगऽहऽऽ पऽऽर्य्
यम्य सऽन्ज़ दयायि युत ताम वोत
ब्रोन्हकुन पकऽनस ग्वण्डुम कमर
श्री सत्वर स्वऽऽमी लक्ष्मन जू कृपा करान॥

इत्थं द्वैतविकल्पे
गलिते प्रविलङ्घ्य मोहिनीं मायाम्।
सलिले सलिलं क्षीरे
क्षीरमिव ब्रह्मणि लयी स्यात्॥ ५१॥

इथय पऽऽठय् द्वयत गोलुम
मोह मायायि प्यठ्य् तुजिम व्वठ
सोरुई केन्ह स्वात्मा-अहं ज़ोनुम
दीह इन्द्रियन हंऽज़ च़टऽम थप
अदऽः शिव भाव म्येः प्रोवुम
ब्रह्माण्डस मंज क्वडुम थक
पोन्य् म्यूल पऽऽनिस, द्वध द्वधस
छुखय त्रुक त जऽऽनिथ ह्यख॥ ५१॥

इत्थं तत्त्वसमूहे
भावनया शिवमयत्वमभियाते।
कः शोकः को मोहः
सर्वं ब्रह्मावलोकयतः॥ ५२॥

परम यूगियन क्वुर परामर्श
भीदई ज़ोनुन अभीद रूप
सोरुई केन्ह वुछुन स्वरूप
दुऽख त मोह छुस आनन्द रूप॥ ५२॥

कर्मफलं शुभमशुभं
मिथ्याज्ञानेन संगमादेव।
विषमो हि संगदोषः
तस्करयोगोऽप्यतस्करस्येव॥ ५३॥

सऽऽदस बनावान चूर संगदूष
पासस बनावान ख्वट संगदूष
कऽम्य् कुवर, कुकर्म या सुकर्म
करनवोल दय, सोरुइ करिथ थवान
अज्ञान "म्यइ कुवर" बन्यौ संगदूष
कर्मफल रुत क्रुत ती बन्यौ संगदूष॥ ५३॥

लोकव्यवहारकृतां
य इहाविद्यामुपासते मूढाः।
ते यान्ति जन्ममृत्यू
धर्माधर्मार्गलाबद्धाः॥ ५४॥

कारबारा छुस सोरुई "बई करान"
मूड बेकऽल युस इहोइ ज़प छु करान
ज़्युन मरुन तस नऽऽल्य हऽऽञ्कल प्यवान
धर्मअधर्म कुलफौ बन्द गछान॥ ५४॥

अज्ञानकालनिचितं
धर्माधर्मात्मकं तु कर्मापि।
चिरसंचितमिव तूलं
नश्यति विज्ञानदीप्तिवशात्॥ ५५॥

धर्म-अधर्मुक कर्मफल स्वम्बरोवमुत
अज्ञानऽः अन्ज़ऽऽन्य् विज़ि सगरोवमुत
पज़ि ज्ञानय नाश तत यखदम् गछान
फम्बऽः डेरस त्यम्बराः ज़न प्यवान॥ ५५॥

ज्ञानप्राप्तौ कृतमपि
नँ फलाय ततोऽस्य जन्म कथम्।
गतजन्मबन्धयोगो
भाति शिवार्कः स्वदीधितिभिः॥ ५६॥

ज्ञानऽः सऽऽत्य् कऽर्य्मतिस ति फल गलान
इः योगी नऽ ज़ान्ह ज़न्म ह्यवान
ज़्यनः मरनऽक्य् गण्ड तस म्वकऽलेय
शिवँऽः सिर्यः स्वात्म तीज़य प्रज़लान॥ ५६॥

तुषकम्बुककिंशारुक —
मुक्तं बीजम् यथाङ्कुरं कुरुते।
नैव, तथाणवमाया-
कर्मविमुक्तो भवाङ्कुरं ह्यात्मा॥ ५७॥

क्वम् तोह त क्यसरा व्युथ यथ दान्यस
तथ छा व्ययि ज़ान्ह तर नेरान
आणव मायी कार्म मल गऽल्य्
ब्ययि छुनऽः दुबारऽः ज़्युन आसान॥ ५७॥

आत्मज्ञो न कुतश्चन
बिभेति सर्वं हि तस्य निजरूपम्।
नैव च शोचति यस्मात्
परमार्थे नाशिता नास्ति॥ ५८॥

पान छुस ज़ोन्मुत कस छुस खोचुन
सोरुई केन्ह छुस पनऽनुई स्वरूप
रावि क्याः तस तय कस छुस वदऽनुई
परमारथस छुनऽः ज़ान्ह नाश आसान॥ ५८॥

अतिगूढहृदयगञ्ज
प्ररूढपरमार्थरत्नसंचयतः।
अहमेवेति महेश्वर-
भावे का दुर्गतिः कस्य॥ ५९॥

परमार्थऽक्य् गंज हृदयस मंज़ छिस्
ब्ययि कुस लाल छुस वुन्य् छ़ाऽड्डुन
बई छुस ज़गतुक ईश्वर स्वरूप
ज़ऽऽन्य् पतऽः कान्ह बलाय छयनऽः पोरानय॥ ५९ क॥

मोक्षस्य नैव किंचिद्
धामास्ति न चापि गमनमन्यत्र।
अज्ञानग्रन्थिभिदा
स्वशक्त्यभिव्यक्तता मोक्षः॥ ६०॥

मूक्षस छुन कुनि खास बाग आसान
न छु तमि खऽऽतरऽःकुन गछ़ऽनुई
अज्ञानऽः गण्ड च़ऽटय् त पऽऽन्य् पानय अदऽः
चिदानन्द शक्ति भाव प्रज़लान॥ ६०॥

भिन्नाज्ञानग्रन्थि-
र्गतसंदेहः पराकृतभ्रान्तिः।
प्रक्षीणपुण्यपापो
विग्रहयोगेऽप्यसौ मुक्तः॥ ६१॥

अज्ञानऽक्य् गण्ड वारऽः छिस च़ऽटय्मऽत्य्
सऽऽरी शख छिस दूर गऽऽमऽत्य्
भ्रऽऽन्ती गऽऽजिन पुन्य-पाप म्वकऽलेस
शरीरई मंज़ छु मुऽक्तं आसान॥ ६१॥

अग्न्यभिदग्धं बीजं
यथा प्ररोहासमर्थतामेति।
ज्ञानाग्निदग्धमेवं
कर्म न जन्मप्रदं भवति॥ ६२॥

नारऽः द्वद ब्योल छुनऽः ब्ययि तर कडऽवुन
तथ ज़ान्ह कुल ह्युल छुनऽः नेरान
ज्ञानऽः नारऽः दऽज़्य्तन प्वज़ अप्वज़ कर्मफल
तिम कर्म छिनऽः ब्ययि, ज़न्म दिवान॥ ६२॥

परिमित बुद्धित्वेन हि
कर्मोचतभाविदेहभावनया।
संकुचिता चितिरेतद्-
देहध्वंसे तथा भवति॥ ६३॥

कर्म क्वर द्रवतऽः ब्वज सऽऽत्य् सोरुई
ब्रोन्ह कुन ज़न्मऽः बनि हे जान
गण्ड क्वर अखण्ड संवित् भावस
युथ व्वव ब्योल त्युथ ह्युल नेरान॥ ६३॥

यदि पुनरमलं बोधं
सर्वसमुत्तीर्णबोद्धकर्तृमयम्।
विततमनस्तमितोदित
भारूपं सत्यसंकल्पम्॥ ६४॥

दिक्कालकलनविकलं
ध्रुवमव्ययमीश्वरं सुपरिपूर्णम्।
बहुतरशक्तिव्रात –
प्रलयोदयविरचनैककर्तारम्॥ ६५॥

सृष्ट्यादिविधिसुवेधस-
मात्मानं शिवमयं विबुद्ध्येत।
कथमिव संसारी स्याद्
विततस्य कुतः क्व वा सरणम्॥ ६६॥

पनऽनुई पान ज़ानि, न्यर्मल स्वरूपई,
ज्ञानऽःरूप, सारिनई थ्वुद आसऽवुन
ज़ानऽवुन त करऽवुन, अऽऽन्तऽः रुऽस सिर्यः
युस नऽ लोसि ज़ान्ह, शुद्धऽसंकल्प गाशः॥ ६४॥

देशऽरुस, कालऽःथ्वुद, न्यथ अविनऽऽशी
ईश्वर भई छुस परिपूर्ण
ज़गतस सृष्ट थ्यत संहार करऽवुन
कुनुई त गण्डरुस ताकत वोल॥ ६५॥

सृष्टी करऽवुन पानऽः ब्रह्मा भई
कल्यान करवुन परमात्मा
अदऽःतस यूगियस बापार म्वकऽलेस
ज़गत रूप तस छुनऽः ज़्युन या मरुन॥ ६६॥

इति युक्तिभिरपि सिद्धं
यत्कर्म ज्ञानिनो न सफलं तत्।
न ममेदमपितु तस्ये-
ति दाढर्यतो न हि फलं लोके॥ ६७॥

ज्ञऽऽनी कर्म, दयि कार, मानान (ज़ानान)
फल छुनऽः कुनि केन्ह कांछान
यज्ञुक फल यज़मान पुरषस
ब्रह्मनस दखिना यऽऽच्च मेलान॥ ६७॥

इत्थं सकलविकल्पान्
प्रतिबुद्धो भावनासमीरणतः।
आत्मज्योतिषि दीप्ते
जुह्वज्ज्योतिर्मयो भवति॥ ६८॥

इथय पऽऽठय् आत्मऽच्य अग्नी ज़ालान
परामर्श वावऽः सऽऽत्य् रेह खारान
संकल्प सऽऽरी हुमान तऽथ्य् अन्दर
गाटुल ज्ञऽऽनी वछतऽः प्रज़लान॥ ६८॥

अशनन यद्वा तद्वा
संवीतो येन केनचिच्छान्तः।
यत्र क्वचन निवासी
विमुच्यते सर्वभूतात्मा॥ ६९॥

ई प्यव ती ख्यव ई बन्यौ ती व्वुल
योत वोत तऽत्य् रूद आत्मस मंज़
शान्त पुरुष वुछतन जीवन्मुऽक्त छू
सऽऽरिसई ज़गतस पान मानान

हयमेधशतसहस्रा-
ण्यपि कुरुते ब्रह्मघातलक्षाणि।
परमार्थविन्न पुण्यै-
र्न च पापैः स्पृश्यते विमलः॥ ७०॥

अश्वमेध करितन हथ या सासा
अनगिनत करितन ब्रह्महत्या
परमार्थ ज़ोनुन पुन्यपाप मुकऽल्येस
न्यमर्ल ईश्वर स्वरूप ज़ोतान॥ ७०॥

मदहर्षकोपमन्मथ-
विषादभयलोभमोहपरिवर्जी।
निस्तोत्रवषट्कारो
जड इव विचरेदवादमतिः॥ ७१॥

अहंकार हर्ष ब्ययि काम क्रूद त्रोवमुत
शूक भय लूभ मोह छुन त्योगमुत
पाटौ त हवनौ थ्वुद छु ख्वतमुत
बेफिकिर मस्तानः फेरान॥ ७१॥

मदहर्षप्रभृतिरयं
वर्गः प्रभवति विभेदसंमोहात्।
अद्वैतात्मविबोध-
स्तेन कथं स्पृश्यतां नाम॥ ७२॥

अभिमान हर्ष ब्ययि सार्ये खुर्य् नावऽः
द्वयत सरसई छयेः आसान
आत्मऽः ज्ञानऽःकिस अद्वथतऽ नागस्
इमऽः नावऽः छयनऽ वऽऽतित ह्यकान॥ ७२॥

स्तुत्यं वा होतव्यं
नास्ति व्यतिरिक्तमस्य किंचन च।
स्तोत्रादिना स तुष्येन्
मुक्तस्तन्निर्नमस्कृतिवषट्कः॥ ७३॥

कान्ह दीवता छुसनऽःआत्मस निशि भ्युन
यस कुन त्वता तय हवन करिहे
जीवन म्वक्त छु पाटऽः हवनऽः थ्वुद सुः
यमि सऽऽत्य स्वात्मा ख्वुश करिहे॥ ७३॥

षट्त्रिंशत्तत्त्वभृतं
विग्रहरचनागवाक्षपरिपूर्णम्।
निजमन्यदथ शरीरं
घटादि वा तस्य देवगृहम्॥ ७४॥

शयित्रऽः तत्त्व सेरि सामानऽः, लरिः
इन्द्रययि बर दारिः शूभ शरीरस
पनऽनिस त परदिस शरीर त चीज़स
शिवऽः सुन्द मन्दराह छू मानान॥ ७४॥

तत्र च परमात्ममहा-
भैरवशिवदेवतां स्वशक्तियुताम्।
आत्मामर्शनविमल-
द्रव्यैः परिपूजयन्नास्ते॥ ७५॥

अथ्य् मन्दरस मंज़ इ शूभिदार यूगी
शक्तिमान भैरव परमऽशिवनाथस
आत्मपरामर्श न्यर्मल सामग्रियिः
दोह त रात निरन्तर पूज़ा करान॥ ७५॥

बहिरन्तर परिकल्पन-
भेदमहाबीजनिचयमर्पयतः।
तस्यातिदीप्तसंवि-
ज्वलने यत्नाद्विना भवति होमः॥ ७६॥

अन्दिरिम न्यबरिम संकल्पाद्यक
भीदऽरूप सम्सार अग्नऽः वत्राः
जोशदार चितज्ञानऽः अग्नस हुमान
पऽऽन्य् पानऽः यज्ञः स्यद्ध सपदान॥ ७६॥

ध्यानमनस्तमितं पुन-
रेष हि भगवान् विचित्ररूपाणि।
सृजति तदेव ध्यानं
संकल्पालिखितसत्यरूपत्वम्॥ ७७॥

अलौक्यक रूपन पानय च्येनान
संकल्पस मंज़ पज़रुक व्यचार
पऽज्य पऽऽय सुऽई गयि भगवत धारना
सोरुइ आत्मरूप शिवई ज़ानान॥ ७७॥

भुवनावलीं समस्तां
तत्त्वक्रमकल्पनामथाक्षगणम्।
अन्तर्बोधे परिवर्तयति-
यत्सोऽस्य जप उदितः॥ ७८॥

अरदाह त हत भवन शयित्रऽः वय त्वत
यन्द्रयिः सऽऽत्य ह्यथ अन्दरी माल छयम
सुमरण तमिची ब्वज़ मंज़ फिर-फिर
यूगियस आत्मुक ज़प प्रकटान॥ ७८॥

सर्वं समया दृष्टया
यत्पश्यति यच्च संविदं मनुते।
विश्वश्मशाननिरतां
विग्रहखट्वाङ्गकल्पनाकलिताम्॥ ७९॥

शुम्शान मोनमुत सोरुई सम्सार
अडजि-क्रंज शरीरव शूभरोवमुत
सोरुइ केन्ह छु समरूप वुछऽवुन
पनऽनुई आत्मा शुद्धऽः संव्यथ॥ ७९॥

विश्वरसासवपूर्णं
निजकरगं वेद्यखंडककपालम्।
रसयति च यत्तदेतद्
व्रतमस्य सुदुर्लभं च सुलभं च॥ ८०॥

ज़गऽतऽक्य् रस रूप मदिरा बरमऽच़
इन्दिरेयि ज़ऽऽन्य् हंज़ि कलऽःखपरे
यूगियन व्रथ थोव लोलऽःसान मज़ऽःदार
आसान ति, मुशकिल ति, युस आसान॥ ८०॥

इति जन्मनाशहीनं
परमार्थमहेश्वराख्यमुपलभ्य।
उपलब्धृताप्रकाशात्
कृतकृत्यस्तिष्ठति यथेष्टम्॥ ८१॥

ज़्यनऽःमरनऽः निशि छू मुऽक्त सू गोमुत
महीश्वर भाव थ्वुद् खज़ानऽ प्रोवमुत
लभित ज्ञान, प्रकाशऽवान, कृत कृत्य् बन्योमुत
इथऽः कर्यस खुऽश, तिथ पऽऽठय् रोजान॥ ८१॥

व्यापिनमभिहितमित्थं
सर्वात्मानं विधूतनानात्वम्।
निरुपमपरमानन्दं
यो वेत्ति स तन्मयो भवति॥ ८२॥

इथय पऽऽठय् पनुन पान व्यापक ज़ोन्मुत
सारिकुई आत्मा, भीद गऽऽलित अभीद
बे नज़ीर आत्मलाभ आनन्दस सऽऽत्य्
ज़ान करिथ ती पूरऽः पऽऽठिन बनान॥ ८२॥

तीर्थे श्वपचगृहे वा
नष्टस्मृतिरपि परित्यजन्देहम्।
ज्ञानसमकालमुक्तः
कैवल्यं याति हतशोकः॥ ८३॥

मरनऽः विज़ि अदऽः तस समृत गलितन
तीर्थऽः या वातलघरि प्राण त्रऽऽवितन
ज्ञान प्राप्ती विज़ि मूक्ष छू गोमुत
बेगम कैवल्य धाम वातान॥ ८३॥

पुण्याय तीर्थसेवा
निरयाय श्वपचसदननिधनगतिः।
पुण्यापुण्यकलङ्क-
स्पर्शाभावे तु किं तेन॥ ८४॥

तीर्थस मरनस स्वर्गस वातान
वातलाघरि मरिः नर्कस गछान
धर्माधमऽः दूशऽः म्वकऽल्योमुत छु
इम गण्ड तस छिनऽः केन्ह आसान॥ ८४॥

तुषकम्बुकसुपृथक्कृत-
तंडुलकणतुषदलान्तरक्षेपः।
तंडुलकणस्य कुरुते
न पुनस्तद्रूपतादात्म्यम्॥ ८५॥

तद्वत् कंचुकपटली-
पृथक्कृता संविदत्र संस्कारात्।
तिष्ठन्त्यपि मुक्तात्मा
तत्स्पर्शविवर्जिता भवति॥ ८६॥

दान्यस द्वग ह्युत
तोह कुवम थ्वुद तुलुस
ब्ययि ज़न वाटऽहोस
दानि बनिसा॥ ८५॥

मायायि जामऽः च़ऽटय्
सम्व्यच़ म्वक्त गयि
सम्सकारःऽ शरीर छुस
त तमि सऽऽत्य् क्याः॥ ८६।

कुशलतमशिल्पिकल्पित—
विमलीभावः समुद्रकोपाधेः।
मलिनोऽपि मणिरुपाधे-
र्विच्छेदे स्वच्छपरमार्थः॥ ८७॥

एवं सद्गुरुशासन-
विमलस्थिति वेदनं तनूपाधेः।
मुक्तमप्युपाध्यन्तर-
शून्यमिवाभाति शिवरूपम्॥ ८८॥

लाल छू ग्वर्मुत बऽडय् कऽऽरीगरन
डबस मंज ज़ितिनिः बन्द रोज़स
डबऽः मंजऽः क्वड यलि ब्ययि ज़ोत्यौना
दृष्टान्त ब्वउ छुई वारऽः कन थाव॥ ८७॥

सत्ग्वरऽः उपदीश, अभ्यासतऽ शास्त्र परित
न्यर्मल संव्यथ यस्य श्यशास
शरीरऽच व्यऽऽधी यलि त्यलिः त्रावि सुः
शिवऽरूप पदवी ज़रूर प्रावान॥ ८८॥

शास्त्रादिप्रामाण्याद्
अविचलितश्रद्धयापि तन्मयताम्।
प्राप्तः स एव, पूर्वं
स्वर्गं नरकं मनुष्यत्वम्॥ ८९॥

ज़िन्दऽःपानऽः प्रोवमुत स्वर्ग या नरखा
या मनषऽः भावय थक क्वडमुत
शास्त्र, अनुभव त गुरुदीव ति हावान
मरनऽः पतऽः इन्सान ती प्रावान॥ ८९॥

अन्त्यः क्षणस्तु तस्मिन्
पुण्यां पापां च वा स्थितिं पुष्यन्।
मूढानां सहकारी-
भावं गच्छति गतौ तु न स हेतुः॥ ९०॥

मरनऽच्य् घऽर छय अज्ञऽऽन्य् पुरऽशस
पुन्य पाप स्वम्बरित ब्वथ हावान
परमार्थ लाभ यऽम्य यूगियन प्रोवमुत
तस तम्युक लेन द्येन छुनऽः आसान॥ ९०॥

येऽपि पदात्मत्वेन विदुः
पशुपक्षिसरीसृपादयः स्वगतिम्।
तेऽपि पुरातनसंबोध-
संस्कृतास्तां गतिं यान्ति॥ ९१॥

इम पऽश्य तय काव सरफ या कनि आससः
प्रानि ज़न्मऽः ज्ञानऽः वान बन्येमऽत्य्
तिमव ति यमि ज़न्मऽः मुऽक्ती प्रास कऽर
ज्ञानुक प्रभाव छू यूत आसान॥ ९१॥

स्वर्गमयो निरयमय-
स्तदयं देहान्तरालगः पुरुषः।
तद्भङ्गे स्वौचित्याद्
देहान्तरयोगमभ्येति॥ ९२॥

शरीरस मंज़ रोजऽवुन इः मनुष
प्रोन वासना फल, सुऽख दुऽख भूगान
इः शरीर गलित ति, वासना तऽ कर्म फल
नोव नोव शरीर-सम्बन्ध प्रावान॥ ९२॥

एवं ज्ञानावसरे
स्वात्मा सकृदस्य यादृगवभातः।
तादृश एव तदासौ
न देहपातेऽन्यथा भवति॥ ९३॥

पूर्ण यूगियस ज्ञान प्राप्ती विज़िः
पनुन स्वात्मदीव युथ गाश प्रज़लान
तमि पतऽः सर्वदा तऽथ्य ह्यू बन्योमुत
मरनऽः पतऽः तमि भ्युन न केन्ह प्रावान॥ ९३॥

करणगणसंप्रमोषः
स्मृतिनाशः श्वासकलिलताच्छेदः।
मर्मसु रुजाविशेषाः
शरीरसंस्कारजो भोगः॥ ९४॥

स कथं विग्रहयोगे
सति न भवेत्तेन मोहयोगेऽपि।
मरणावसरे ज्ञानी
न च्यवते स्वात्मपरमार्थात्॥ ९५॥

इन्द्रेयि नऽशतन सुमृत मऽशतन
हटिस मंज़ शाहस घन्यर गछितन
प्राण बन्द गछितन बन्द बन्द श्रुक्य्तन
शरीरस स्वभाविक दऽऽद्य् करितन॥ ९४॥

इम दुऽख शरीरऽक्य् ज़ान्हति यूगियस
मरनऽः विज़ि हावान छिनऽः मूहस
पनऽनिः आत्मलाभ शैवी प्रासी
निशिः सु ज़ान्ह ति छुनऽः छ्यनान॥ ९५॥

परमार्थमार्गमेनं
झटिति यदा गुरुमुखात्समभ्येति।
अतितीव्रशक्तिपातात्
तदैव निर्विघ्नमेव शिवः॥ ९६॥

पूर्ण शक्ति पातऽः दयि सऽन्ज़ वथ लबऽन
सत्गुऽरऽः उपदीश जल स्यद्ध गोस
झठ-पठ व्यग्नऽः रुउस शिवभाव प्रोवुन
अक्रमऽः प्रासी अऽथ्य् छि वनान॥ ९६॥

सर्वोत्तीर्णं रूपं
सोपानपदक्रमेण संश्रयतः।
परतत्त्वरूढिलाभे
पर्यन्ते शिवमयीभावः॥ ९७॥

अमि ख्वतऽः बदल छुई क्रमऽः क्रमऽः प्रावुन
अकि अकि पाविः (चक्रऽः) छुई हेरि खसुन
वारऽः वारऽः शिवऽः नयि पूर्णऽः रूप आत्मस
थदि ख्वुतऽः थज़ऽरस अदऽः थक कडुन
मरनऽः पतऽः अदऽः सू शूभिदार यूगी
शिवऽः मय अवस्था छू प्रावान॥ ९७॥

तस्य तु परमार्थमयीं
धारामगतस्य मध्यविश्रान्तेः।
तत्पदलाभोत्सुक-
चेतसोऽपि मरणं कदाचित्स्यात्॥ ९८॥

योगभ्रष्टः शास्त्रे
कथितोऽसौ चित्रभोगभुवनपतिः।
विश्रान्तिस्थानवशाद्
भूत्वा जन्मान्तरे शिवीभवति॥ ९९॥

क्रमऽःक्रमऽः पकऽवुन आत्मलाभ काञ्छवुन
यूगी अगर ज़ान्ह मंज़ वति मूद
या अगर आत्मलाभ पासी ब्रोन्ठई
कुनि वक्तऽः हन्गऽःतऽ मन्गय मूद
अदऽः तस शास्त्रव यूगऽःभ्रष्ट नाव कुवर
मरनऽः पतऽः अलौक्यक स्वर्ग भूगान
तमि पतऽः ब्ययि जन्मऽः आत्मलाभ प्रऽऽविथ
शिव भावस छू सुः वातान॥ ९८, ९९॥

परमार्थमार्गमेनं
ह्यभ्यस्याप्राप्य योगमपि नाम।
सुरलोकभोगभागी
मुदितमना मोदते सुचिरम्॥ १००॥

मूक्षिदा शिवमार्गऽः अभ्यास कुवरमुत
स्वरूपस आसि नऽः पूरऽः वोत्मुत
पछ़ थव दीवऽः लूकऽः रऽत्य भूग भूगान
स्वमनऽः च़ेर तान्य् ख्वश रोज़ान॥ १००॥

विषयेषु सार्वभौमः
सर्वजनैः पूज्यते यथा राजा।
भुवनेषु सर्वदेवै-
र्योगभ्रष्टस्तथा पूज्यः॥ १०१॥

प्रथ कुनि मुलकय चक्रवर्त राजस
इथऽः पऽऽठय् सऽऽरी लूक छि नमान
अमिस यूगऽः भ्रष्टस तिमन स्वर्गन मंज़
दीवता तिथय पऽऽठय् पूज़ा करान॥ १०१॥

महता कालेन पुन-
र्मानुष्यं प्राप्य योगमभ्यस्य।
प्राप्नोति दिव्यममृतं
यस्मादावर्तते न पुनः॥ १०२॥

कऽऽफी वक्तस स्वर्गा भूगित
ब्ययि मृति-लूकय ज़न्म ह्यवान
तत शरीरस मंज़ वारऽः यूग सऽऽधित
अमृत प्रऽऽवित ज़्यतऽमर च़लान॥ १०२॥

तस्मात् सन्मार्गेऽस्मिन्
निरतो यः कश्चिदेति स शिवत्वम्।
इति मत्वा परमार्थे
यथातथापि प्रयतनीयम्॥ १०३॥

पज़ि वति युस कान्ह पकऽवुन इथऽः पऽऽठय
बेशक शिवभाव तस छु बनान
ती ज़ान दीनो शिवऽः नयि पकतो
ह्वऽल गण्डित तऽथ्य कुन आस्तऽः गछान॥ १०३॥

इदमभिनवगुप्तोदित-
संक्षेपं ध्यायतः परं ब्रह्म।
अचिरादेव शिवत्वं
निजहृदयावेशमभ्येति॥ १०४॥

शस्त्रन सारिनई छुवटरित सार कुवड
अभिनव गुप्त पाद भगवानन
व्यमर्श तय व्यचार करि यथ युस भागिवान
शिवयाव प्राप्त करि जल्दीसान
परं ब्रह्म शास्त्रस फल दातस
पनऽःनिस हृदयस चिदानन्दऽः रूपस
च़ेरऽः ब्रोन्ह जाय लभि मंज़ आत्मस
शिवऽः भाव प्राप्त करि वाह वाह मुऽक्त गछि
कयाः वनुन तसऽत्रिस गाटऽजारस॥ १०४॥

आर्याशतेन तदिदं
संक्षिप्तं शास्त्रसारमतिगूढम्।
अभिनवगुप्तेन मया
शिवचरणस्मरणद्दीप्तेन॥ १०५॥

शिव चरनन द्यान करऽःवुन ओस अख
अभिनवगुप्त पाद प्रज़लवुन ग्वर
आर्य छन्दस मंज़ हथ श्रूख गण्डिनस
परमार्थ सार नऽऽव्य् यत शास्त्रस॥ १०५॥

गुरु क्रम पूजा

गुरु क्रम पूज़ऽःबऽः शिवनाथ आदि दीव
त्र्यम्बक नाथ छिस शूभऽरावनस॥ १॥

दुर्वासाहस सऽऽरी ज़ानन
सोमानन्द ह्यथ प्रणाम तस॥ २॥

नमस्कार अऽऽसतन वसुगुप्त उत्पलदीव लक्ष्मन गुप्तस
इहुन्द नाव न्वन क्वड अभिनव सऽऽबन
शिवमार्ग होवुन यथ जगतस॥ ३॥

क्षेमराज स्वऽऽमी ब्वुड ह्यू शिष्य ओस
टीकाकार अभिनव गुप्तस
परमार्थ सार रुउट योगराज सऽऽबन
टीका करिथ मुऽक्ती लभऽनस॥ ४॥

तथ मंज़ ब्रोहं कालि मनऽः दीव मुण्गाः
अथऽः प्यठ थोवनऽः सऽऽत्य शऽऽन्ती दिचनस॥ ५॥

राम जी श्यश ओस थ्यकऽवुन तऽम्यसुन्द
समाध हावान प्रथ श्यशस॥ ६॥

महताब काक सोन क्रऽण्डगामि ज़ायोव
सीवा करऽण बऽड राम जीयस॥ ७॥

नाराण दासस न्यचुवः ज़ायोव
राम जीयन लक्ष्मन कुवर नाव तस॥ ८॥

ईश्वर स्वरूप वुन शारिका दीवीय
साक्षात् शिवरूप भगवानस॥ ९॥

तऽम्य् सऽञ्ज् शश छी कऽऽत्या बऽढय बऽढय्
तिहुन्दई ख्वरऽः मल "दीन" नाव तस
सत्ग्वरऽः दया छयस नतऽःअनपढ़ छू
वात्यस न कान्ह ति मूर्खऽ भावस
सुऽदऽः लाल गुन्ज मोल बेमार तस ओस
तस निश ति अऽऽशीरवाद ल्वुभऽनस
तऽथ्य् मंज़ ग्वरऽः दया नऽन्य् तस द्रायिः

कऽऽशुर फ्युर ल्वुग यथ शास्त्रस
ग्वरऽःदीवऽः बोज़तम ज़ऽऽरी म्यऽऽनी
मन्ज़ूर थवतम भक्ति भावस
पादन बऽलगऽहऽऽय पऽऽरी पऽऽरी
शिवऽःनाथ च़ई छुख म्येः रछऽःनस
दीनस नाथ बन क्या गछी कम च़्येः
प्योमुत छुस बऽः मऽञ्ज़ आवऽलनिस
तमि मंज़ऽः खारतम अपोर तारतम

सम्सारऽः सागरस बे सारस (ॐ)
वनऽःनुक तरीका छु, नतऽः कत अन्दर
कुस फटि या कुस तारे कस
सोरुय ज़गथा स्वरूप छु च़ोनुय
आवलुन या पोशि बाग वनतस
सोरुय ज़गथा स्वरूप छु पनऽनुय
आवलुन या पोशि बाग वन्तस॥

जय गुरु देव



ज़ऽऽव्युल शैव

नरुक तऽ स्वर्ग

बऽ छुस सोचान। बऽ छुस न गुऽनऽः मात। नः ज़ानऽः केन्ह। नऽ ज़ानऽः लय न तरनुम। नऽ छुम जान ह्वट। युथ बति लूकन हऽन्द पऽऽठय। केन्ह लीखित। लय तऽ तरनुम सान। मुऽधुरि हटि परित। खुऽश करऽहऽऽ पनुन पान। तऽ जहान। मेः छु अक ग्वरऽः अनुग्रह। अक ग्वरऽः कृपा। यमि सऽऽत्य्। पञ्चाह वहऽरिस होश आम। यथ अडऽकजि ज़्यविः। ग्वरऽः कृपा नऽन्य द्रायि। सत्वरऽः खाब परान परान। ज़्यव आयि॥

वुलऽः वुउन्य् बऽ ति वनऽः। वन्यकयन्नक्यन आमु खास ग्वनऽः मातन हन्द्य् पऽऽठय्। माडरण ओपन वर्स। माडरण पोइट्री मऽन्ज़। वनऽः। कलम बन्ध करऽः। नरूक त स्वर्ग। प्रथ वक्तऽः प्रथ जायि। अथस क्यथ। प्रथ कऽऽञ्सि मनऽशस॥ १॥

स्वर्ग तऽ नरुक। यऽत्य् छू। यऽथ्य ज़गऽतस मऽञ्ज़। ब्रोंठऽः कनि। अथस क्यथ। हर वक्तऽः हर जायि। प्रथ कऽऽत्रि मनऽशस॥ २॥

मनुक सोच । मनुक विच़ार। मनऽच्य् गिलन। मनऽच्य् त्राय। इछ़ आसि। इछ़ थवि। सुऽई छि। स्वर्ग त नरुक। अथस क्यथ। हर वक्तऽः हर जायि। प्रथ कऽऽञ्सि मनऽशस॥ ३॥

खवाम खाह। क्या गोम। वुउन्य् क्याः करऽः। क्वत गछऽः। बनिथ आम। चारय न केन्ह। बऽई ओसऽसा ? दुऽखऽः बानऽः। न्यर्दय दयस। म्यऽई क्युत थवुन। इः सोरुई केन्ह। ब्ययि सारिनई लूकन। सुऽख तऽ सावय। ख्युन तऽ च्युन। मज़ऽः तः अऽऽश। गिन्दुन तऽ द्वकुन। करान तऽ छावान। म्यऽई योत। वदुन तऽ रिवुन। पथर प्योमुत। हय क्याः गौम। इहोय स्वभाव। इहोय सोच। इहोय व्यच़ार। गव ब्वुड नरुक। अथस क्यथ। हर वक्तऽः हर जायि। प्रथ कऽऽञ्सि मनऽशस॥ ४॥

इ गव तऽ ति गव। दयि करुन गव। युथ क्वुर त्युथ क्वुर। दयऽः नई क्वुर। म्येः क्याः गव? गछ़ि क्याः म्येः? इ छु सोरुइ। बनऽः नुई। बनऽः नी। प्रकृती हुन्द स्वभाव। बऽः छुस यमि सारी थ्वुद। जानऽः त नाकारऽः निशिः दूर दूर। न छुम ह्युन। न छुम कनुन। बऽ छुस। यमि शरीरऽः थ्वुद। यमि ख्यालऽः थ्वुद। यमि जहानऽः थ्वुद। पऽऽन्य् पानय। सोरुई केन्ह। नः गोम केन्ह। नः गछ़यम केन्ह। गव तऽ गव । कस सना गव? म्येः क्याः गव? वुऽन्य क्या गव। इहोय सोच। इहोय व्यच़ार। छु असली स्वर्ग। अथस क्यथ। प्रथ वक्तऽः प्रथ जायि । हर कऽऽञ्सि मनशस॥ ५॥

बऽः छुस ना कहीव्य्। म्येः ह्यू कुस। धनऽः दौलत। ख्युन च्युन। लरि जायि। श्वर्य बऽऽच।
खसऽः वुन घुउर। वसऽः वऽन्य् नाव। म्यऽऽन्य हिश। ब्यथि कस छेयः। सोरुई ज़गत।
म्येः निशि ब्वन। म्योनुई त्रोवमुत ख्यवान। मगर याद नऽः कऽऽञ्सि। हुमिस दितुम। हुमिस करुम।
मगर तावन ज़दस। यादई छुस नऽः। इः छु यहसान फरामोश। हुमिस अछिन गटऽः वऽछ्ऽमऽच्च।
वछु ना वुछ। अहंकार क्याः छुस। किबऽर क्याः छुस। अगर यछ़स। म्यचि़ सऽऽत्य मिलऽःनावन।
आर छुम इवान। नतऽः हावऽःहऽऽय। ज़ऽः हारऽः मा लयि। इथुई सोच। इथुई व्यचार।
पनुन पान। ब्वुड मानान। ब्वुड ज़ानान। इहोइ छुः। बडऽः ब्वड नरुक। अथस मऽन्ज।
प्रथ वक्तऽः प्रथ जायि। हर कऽऽञ्सि मनऽशस॥ ६॥

वाः वाः वाः। बऽ छुस खुऽशनसीब। म्यऽऽन्य् अथऽःखुऽर। कऽऽञ्सि कऽऽञ्सि इवान बकार।
छुम नऽः ज़्यादऽः। दिमऽः हऽऽ। ताकत नऽः म्येः। करऽः हऽऽ। जानई जान प्रथ कऽऽञ्सि।
तोति जान। कम ज़्यादऽः। दयि नाव। दयिः कृपायि सऽऽत्य। ग्वरऽः दयायि सऽऽत्य।
छुम याद। नतऽःबऽ कुस। मऽऽञ्चऽः क्रील। बऽ हयकऽः केन्ह करित। इ क्वुर ति क्वुर।
दयि नऽई क्वुर। बऽ ओसुस बहानः। दयि सऽन्दि करनुक। तऽम्य् सोरुई केन्ह। करिथ थौमुत।
मगर म्येः ग्वछ़। हयस रोज़ुन। यादावऽऽरी रोजऽन्य्। यादाश्त रोज़ुन। भगवानऽः सन्ज़िः कृपायि हुन्द।
ग्वरऽः सऽन्दि अनुगृहुक। इहोय व्यच़ार। इहोय सोच। यस आसि तऽ तस। स्वर्गइ योत।
अथस क्यत। हर वक्तऽः हर जायि। प्रथ कऽऽञ्सि मनऽशस॥ ७॥

हा पानो। छुऽपऽः कर। छुऽपऽः छय रुऽपऽः सऽऽन्ज़। करख तऽः स्वनऽः सऽञ्ज।
छुऽपऽः करित। वारऽः वऽछ। दय किथऽः कऽन्य। इः सोरुई केन्ह। करान तऽ ज़ानान।
लदान रछान तऽ लूरान। अगर तगीय वुछुन। हयस थवुन। वुद्ध रोज़ुन। सुई छुई। असल स्वर्ग।
अथस क्यथ। हर वक्तऽः हर जायि। प्रथ कऽऽञ्सि मनऽशस॥ ८॥

अनुग्रह। शक्तिपात। दयि कृपा। ग्वरऽः सऽन्ज़ नज़र। यमि सऽऽत्य्। सोन ग्वरऽःदीव।
भगवान ईश्वरस्वरूप। अकि नज़रिः सऽऽत्य्। अकिस अऽछय् टीट्टि मऽन्ज़। भखशावान। बऽऽगरावान।
अगर आसी बानऽः। अगर आसी ह्यस। अगर तगी रटुन। सुई छुई। सुई छुई। असली स्वर्ग।
अथस क्यत। हर जायि हर वक्तऽः। प्रथ कऽऽञ्सि मनऽशस॥ ९॥

सोन गुऽरऽःदीव। श्री ईश्वर स्वरूप। भगवान श्री लक्ष्मन जुव। बडि लोलऽः। बडि मायि। लोलऽसान।
करान रोजान। अनुग्रह रूप। परमार्थसारुक सार। अद्वयतऽः उपदीश। कथि कथि मऽन्ज।
सारिनई लूकन। हयन्दयन मुसलमानन। सिकन ईसायन। भीदऽः भावऽः रुउस।
प्रेमऽः सान। लोलऽः सान। दिवान रोज़ान। लोलऽः मस। लोलऽः मस्ती। नज़ऽरि सऽऽत्य।
कथि कथि मऽन्ज़। दीनन। दीनदासन। यऽथ्य् ज़गतस मंज़। दिवान, हावान। बडि खुऽतऽः बुउड।
स्वर्ग-स्वर्ग-स्वर्ग। ज़ीवन मुऽक्ती। अथस क्यथ। हर वक्तऽः हर जायि। प्रथ कऽऽञ्सि मनशस॥ १०॥

शिव आनन्द

ॐ गव ज्ञाणऽः नाद-ब्यन्द परम आनन्द
ओंकार सुई गव-युस ज़गत आनन्द॥ १॥

अनाहत सुई गव-सुई गव आहत
चित आनन्द यछ़ा - बनान ज्ञानऽः आनन्द॥ २॥

ब्रोंहकुन सोरुई-अमि कुई फुउलुन छु
अहं रूप युस बनान-पानऽः परमऽः आनन्द॥ ३॥

अ गव अनुत्तर तस कुस वाति
ज़ानुन ति गव करुन-करुन कुउत वाति॥ ४॥

करनऽः ज़ाननऽः ब्रोंठई-युस पान बेबन्द
सुई पान पऽऽन्य पानऽः-सुई परमऽः आनन्द॥ ५॥

करुन ज़ानुन द्वनऽःवय-तऽथ्य मंज़ छि व्यास
अन्द मंज़-गुउड, सोरुई, सुई महा-आनन्द॥ ६॥

चैतन्यरूप छु-च़ीतना शक्ती-
ती गव अ तऽ आ-युस ब्रह्मऽआनन्द॥ ७॥

यछ़ा तऽम्य् सऽन्ज़ई यलि दऽर छि गछ़ान
इ बनान ई अदऽः-स्वतन्त्र आनन्द॥ ८॥

यछ़ा पनुन पान, पानय ज़ानान
- उ त ऊ सुई गव पूरऽः ज्ञानऽःआनन्द॥ ९॥

ज़ऽऽनित खोच़ान च़ेनान सम्सार
षण्ठ च़ोर सुई गव युस अनाख्य आनन्द॥ १०॥

यछ़ा भगवती तमिस-शिवस केन्ह न मानान
धकऽःदित छयस वनान-ज़ान कृया आनन्द॥ ११॥

अ तऽ इ, अ तऽ उ-अदऽः मीलित गछ़ान
ए-ऐ-ओ-औ-कृया रूपऽः आनन्द॥ १२॥

अं रूप भगवती, अदऽः रुत सम्यूग
आः रूपऽः दोफ्युर-बनान शिवऽः आनन्द॥ १३॥

पूर्ण शिवऽः सुन्द-फलुन अऽथ्य छि वनान
परा त्रिंशिकायि मऽन्ज -स्वर शिवऽः आनन्द॥ १४॥

शक्ती हुन्द फुऽलुन अमि बोन्ह आसान
यलि दया कर्यस ग्वर
वनि दीनऽः आनन्द॥ १५॥

तमाशः

दयि सुन्द गिन्दुना दोह तऽ रात छुस वछान
तमाशः छुस वछान तमाशः छुस वछान॥ १॥

अती ताफ अती शिहुल अती तुउत अती तरुन
अती न्यूल अती वुऽज़ुल अती छुउत अती क्रहुन
इथय पऽऽठय् प्रथ केन्ह वदलऽवुन छुस वछान
तमाशः छुस वछान तमाशः छुस वछान॥ २॥

अती ज़्युन अती बडुन-अती बुडुन अती मरुन
अती बुऽछऽः अती त्रेश-अती लोल अती खरुन
थानऽः वैचित्र कालऽः वैचित्र, छुस वछान
तमाशः छुस वछान-तमाशः छुस वछान॥ ३॥

कथन हुन्द ज़ोर कोताः सखत आसान
अकि कथि खुऽश गछान-ब्ययि कथि सऽऽत्य वदान
पीठी-श्वरी हुन्द मोह-ज़ाल छुस वछान
तमाशः छुस वछान-तमाशः छुस वछान॥ ४॥

इः भगवान ति कोता अजब छु आसान
कऽऽञ्सि अनुगृह कऽऽञ्सि निगृह छु करान
खर्यन सुऽनऽः बुन्यरिः अर्यन वुउडि चन्ड वछान
तमाशः छुस वछान-तमाशः छुस वछान॥ ५॥

अजब छु इ दुनिया अजब छुस बऽ इनसान
अती प्वज़ अती अपुज बऽ आसान नऽ आसान
असल पऽऽठय् दीनऽः, शिवई योत छु वछान
तमाशः छुस वछान तमाशः छुस वछान॥ ६॥

सुई शिवनाथ युस आत्मऽः रूप आसान
नऽ ज़्यवान नऽ मरान नः ज़ान्ह ति बदलान
सुई वछ वछऽवुन वछुन-वुछमुत वछान
तमाशः छुस वछान-तमाशः छुस वछान॥ ७॥

ईश्वर प्रणिधान

अनुग्रह योत युस सारिनई करान
पुशराव तऽस्य् शिवनाथस पनुन पान
सु नो नाकारऽः ज़ान्ह ति यछ़ान
पुशराव तऽस्य शिवनाथस पनुन पान॥ १॥

पनुन च्येः छुई क्याः सुई छु सोरुई
तऽम्य सुन्दुई गिन्दुना इ जगत सोरुई
आदि-दीव महादीव यस लूक छि वनान
पुशराव तऽस्य शिवनाथस पनुन पान॥ २॥

कलऽः न्वमरित

जन्म दिन

भगवान ईश्वर-स्वरूप (५-५-१९८६)

कलऽः न्वमरित छुस वछान दोह रात सुई
यथ दिलस मऽन्ज़ युस खनित तसवीर चोन॥ १॥

सुई छु कऽऽलास-खीरऽ सागर-काबऽः सुई
ईरोशलम-हरमन्दर-दरबार चोन॥ २॥

ग्वछ़ म्येः रोज़ुन कलऽः न्वमरित हर समय
बऽः म्योन तऽ म्येः मारतन हंकार म्योन॥ ३॥

इन्सान छुस इन्सऽऽनियत दिम, म्योन हक
युथ बऽः रोज़ऽः ज़रखरीद गुलाम चोन॥ ४॥

शक्ति-पातच अक नज़र त्रऽऽवित म्येः कुन
भीद ज़ऽऽलित-दिम हऽऽवित दीदार चोन॥ ५॥

सुई छु सुई छू-सुई छू सुई छू सुई छू सुई
युथ छु त्युथ छू यति तति छू यार म्योन॥ ६॥

भक्ती त शक्ती मुऽत्तीयि म्येः क्या करुन
गुछ म्येः रोज़ुन छयनऽः रुस, ख्याल चोन॥ ७॥

यति तति, अज़ पगाह, युथ त त्युथ
केन्ह नऽ मऽन्ज़य कति द्राव राह चोक म्योन॥ ८॥

दीन वुउनऽःहम, लादीन छुस अक क्युमाइ
कति छु अलग, कुनि, "दीनऽः" केन्हकार च्योन॥ ९॥

वसुन त खसुन

हय क्या गोम-"केन्ह अलग ना म्योन"
वऽन्य् वऽन्य् लूक छि-ब्वन ब्वन प्यवान
भई छुस सोरुई-"केन्ह अलग ना म्योन"
ज़ऽऽन्य् ज़ऽऽन्य् यूगी-थुउद थुउद खसान

जवानी और बुडापा

आ के जाए ज़रूर - वह जवानी देखी
आ के ले जाए अपने साथ - वह बुडापा देखा
मर के मरना सब ने है
यह तो फैसला है जरूर
ज़िन्दः जो मर कर रहे
वह है इन्सान भरपूर॥

झूठा है फर फर

कर कर के तू नाकर नाकर-नाकर के तू कर
झूठी तेरी काया माया-झूठा है फर फर॥ १॥

ना जी ना सब कुछ है सचा, सचा है भगवान
सचा है हां सब कुछ सचा-झूठा है फर फर॥ २॥

जब है तेरा मेरा कहना-तब तो सब है झूठ
मैं हूं, मैं ने, मेरा, कहे से-झूठा है फर फर॥ ३॥

सचा है भगवान क्यों वह-कुछ भी करेगा झूठ
तेरा मेरा सोचने से ही-झूठा है फर फर॥ ४॥

जब से जाना मैं ने यह कि-सब कुछ है भगवान
तब से जीना मैं ने यह कि-झूठा है फर फर॥ ५॥

तेरा मेरा भी है सचा-यह तो है स्वभाव
स्वभाव भूले तब ही भाई-झूठा है फर फर॥ ६॥

करना मेरा सब कुछ मैं हूं-क्या झूठ है क्या सच
सच झूठ ओर इन से ऊञ्चा-झूठा है फर फर॥ ७॥

दीना शरण प्रभू की ले ले-जो है सब कुछ आप
आप ही आप, आप को समझो, झूठा है फर फर॥ ८॥

"फर-फर"-आनव मल-में शिव नहीं यह शरीर हूं
(मलं अज्ञानं इच्छन्ति—)

कुछ पहेलियां

क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ १॥

समझा किस ने आज तक है यह-समझा ही तो सब
ने है यह
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ २॥

तुझ से बाहर दिख कर भी यह-तेरे अन्दर ही अन्दर
यह
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ ३॥

तूने ही यह चाहा-तूने ही यह सोचा-कर कर के
फिर कुछ न किया
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ ४॥

जब हो तुम, तब ही है यह, तुम न हो तो, गुम ही है
यह
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ ५॥

विरला कोई ढूंढ़ने निकले-इन में से कोई विरला पाए
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥६॥

जो भी देखो-तू ही तू है-सब कुछ यह कुछ भी नही है
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ ७॥

तेरे अन्दर सब कुछ है यह-सब के अन्दर तू ही है यह
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ ८॥

चाहा जिस ने वह है खोया-पाया जिसने वह है
खोया
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ ९॥

पास होकर दूर ही है यह-दूर हो कर तू ही है यह
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ १०॥

सच यह ही है-झूठ यह ही है-सच झूठ और कुछ
भी नही है
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ ११॥

पैदा हुवा और बडा-बूढ़ा हुवा तो मरा-कौन जिया
और कौन मरा
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ १२॥

मैंने कहा-तूने सुना-सुनकर हंसा-सुनकर रोया, क्यों
हंसा-और क्यों रोया
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ १३॥

कितने आये-कितने गये-कहां से आये कहां गये
आना जाना क्यों हुवा
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ १४॥

जिस देह को तो पाले पोसे मल मल कर साफ करे
वह है गन्ध भरा घड़ा?
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ १५॥

घर कुटुम्ब यह बाल बचे-जिन के लिए तू इतना
करे वह ही तुझ को जलाए, गडे
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ १६॥

बस कर बस कर-दीन अब बस कर,
समझ समझ कर तू है तस्कर
जान जान कर फिर भी भूले
क्या समझे खाक समझे-दीनानाथ जी॥ १७॥

जिधर देखता हूं-उधर तू ही तू है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है।

(अज्ञात)

जहां भी देखो तो तू ही तू है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है॥ १॥

शिव से लेकर पृथ्वी तक यह
छतीस तत्व का रूप-तू ही तू है
तेरा रूप इक इक सब तू ही तू है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है॥ २॥

माला का दाना इक भी जो टूटे
तो माला का नाम पूरा ही फूटे
इक इक मनका बस तू ही तू है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है॥ ३॥

जो शिव है सो पृथ्वी-जो पृथ्वी सो शिव है
ऊँचा नीचा जिधर है सो शिव है
एक एक तत्त्व देख-बस तू ही तू है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है॥ ४॥

एक में छत्तीस-छत्तीस में है एक
तभी एक है जब छतीस में एक
एक ही न हो तो कुछ भी नही है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है॥ ५॥

है एक एक पूर्ण परम शिव परम शिव
दाना ही खर्मन-खर्मन परम शिव
दाना न हो तो खर्मन नही है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है॥ ६॥

सूरज न हो तो कुछ भी रहे ना
पृथ्वी न हो तो रव किस काम का
इक इक तारा तेरा रूप ही है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है॥ ७॥

अहमक न बन तू अहंकार छोड दे
मैं-मैं ने-मेरा, इकबार छोड दे
अहम रूप बन जा-बे लाग तू है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है॥ ८॥

द्वई को छोड़ दे-इक रूप बन जा
सब कुछ में बस इक-इक रूप बन जा
कि सब कुछ में इक तू सिरफ तू ही तू है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है॥ ९॥

जो मैं हूं तो तू है-जो तू है तो मैं हूं
अवल से अखीर बस मैं ही मैं हूं
अय दीन-दुनिया-अहं तू ही तू है
कि हर शय में जलवह तेरा हू-ब-हू है॥ १०॥

हारऽः बऽऽत

कुनइ आस तय कुनिसई छु गछुन
कुनिसई द्युन तऽति हिसाब किताब॥ १॥
कुनुई लबिथ हारऽः बऽऽत ज़्यूनुम
त्रयपि शयपि रोवुम सोरुइ शबाब.॥ २॥

एक दिन भगवती शारिका देवी ने हुकुम दिया कि कोडियों के खेल (हारऽः बऽऽत) पर कुछ कहो-तो उपर के बन्द मेरे मुंह से निकले-असल में यह उनकी आन्तरिक प्रेरणा ही थी मतलब यह है कि एक हासिल होने से सारा जगत हाथ में आता है और तीन (काम, क्रोध, लोभ) या छः (षट् कुञ्चुक) माया में पड़ने से सब कुछ खो जाता है। सारी आयु व्यर्थ हो जाती है॥

केन्ह न ति

यान्य् बुउथि दुनियाहऽ प्यठऽ ज़ेरोज़बर
तान्य बनि सोरुइ कुनई शीरो-शकर॥ १॥

अक त ज़ऽः बुउड लुऽकुट सोरुई खयाल
छु कुनुई-छू हिवुई-ज़ानुन महाल॥ २॥

असलियत वुछ अमलियत वुछ, असलियत
जाय-वक्तस-शकलिः क्याः छि असलियत॥ ३॥

वोनऽःथस ज़्येः, इःति न सऽः, इः ति नऽः
पथ मुच़्यौ ना, च़इं योतन-केन्ह ति नऽः॥ ४॥

केन्ह न मऽञ्जय छु इ द्रामुत इः छु तिः
छुनऽः केन्ह ति, ती छि ज़ान, इः छु तिः॥ ५॥

केन्हनऽ वुउछ, क्युत छु आसान, कति छु
युस वुछन वोल-सुई छुक च़ऽः, कति छु॥ ६॥

केन्ह ति छुक-पान ज़ान तो केन्हनऽ तिः
पोन्य् शिठयौ-शीन बन्यौ-केन्हनऽ तिः॥ ७॥

ज़्यथ रूपुक छु शिठुन इः, इः छु तिः
ज़ान क्या छु-केन्हनऽ तिः, तिः-इः छु तिः॥ ८॥

अऽलफस खुउत मद ज़ीर लजिस-पेश आस
ए-ऐ-ओ-औ-कऽर्य् कऽर्य् अं आः बन्याम॥ ९॥

क्या बन्योस-क्या न बन्योस-केन्हनऽ तिः
खुऽद दऽऽरी-आकाश पृथ्वी-केन्ह न तिः॥ १०॥

दीन बन-लादीन बन चऽः केन्हनऽ तिः
ईश्वर-स्वरूप-शिवरूप-सोरुई-केन्ह छु तिः॥ ११॥

परात्रिंशिका सार

मातृकाचक्र

अलिफ ज़बर अ अलिफ मद आ
अलिफ जेर इ अलिफ पेश उ

अऽलफस खुउत मद-ज़ीर लजिस पेश आस
ए-ऐ-ओ-औ कऽर्य कऽर्य अं आः बन्यास॥ १॥

पेश आस क्रूठ जगथा-बिहित गव
ऋ-ॠ-लृ-ॡ छी गवाह दम फुउटय् गव॥ २॥

आनन्द-इच्छा-जऽऽन्य धकऽः सऽऽत्य हुश्यार गव
ए-ऐ-ओ-औ-कऽर्य् कऽर्य् बाकार बन्यौ॥ ३॥

फुऽलऽना पनऽनुई वुछन अं वनुन
पनऽनी शक्ती सऽऽत्य गिन्दुन आः करुण॥ ४॥

अ प्यठऽः आहस ताम इम शुराह
शिव रूप वुउछ शुरऽऽहिम अमा कला॥ ५॥

आहऽः मऽञ्जऽक्य् शून्य् ज़ऽः मा ज़ानुक च़ऽः शुन्य्
क्या वनय ब्रोन्हकुन छु इहोय छन्य् छन्य्॥ ६॥

शून्य तय शून्य पानऽःवऽन्य मील्य् शुऽन्य बन्यौ
कऽऽ प्यठऽः क्षहस ताम विश्वरूप शिव-शक्ति
बन्यौ॥ ७॥

क ख ग घ ङ - पञ्च महाभूत पृथ्वी प्यठऽः ता
आकाश
च छ ज झ ण - तन मात्राय पऽऽञ्च मशकऽ प्यठऽः
ता आवाज
ट ठ ड ढ ण वुउछ पाञ्च़ कर्मऽ इन्द्रय
त थ द ध न पाञ्च़ ज्ञानऽः इन्द्रय, क्या बऽ वनय
प फ ब भ म - मन बुऽद्ध अहंकार-प्रकृत त पुरुष
य र ल व मायायि हऽञ्ज़ऽः रज़ऽः ब्ययि महा माया
हर्ष
श ष स ह शुद्ध विद्या, ईश्वर, सादाशिव, शक्ति ज़ान
क्ष गव कऽ तऽ सऽ शक्तियि जऽः यलि मेलान॥ ८॥

निराकार, साकार, बनुन गव इहोय क्रम
शुद्ध विद्या, वाच्य वाचक ज़ान, च़ली भ्रम॥ ९॥

स रूप सकार ब्रह्म यलि त्रिशूल औवस, त आहस
म्यूल
सारी जगतुक बीज़ रूप "सौः" न वुजुल न
न्यूल॥ १०॥

इथऽः पीपल कुलिकिस अकिस बेल्य् फलिस मंज़
सोरुइ पीपल कुल तिथय पऽऽठय् जगत "सौ"
अमृतऽः बीजस मंज़॥ ११॥

अमि बीजुक करि परामर्श युस भाग्यवान, यूगी
तमी वक्तन छु प्रावान शिवभाव शूभिदार, यूगी

अहं-त (म-ह-अ)

अ प्यठऽः हमस ताम गव अहं
जगतस मऽञ्ज़ बुउन वसुन
म-ह-अ गव ह्युर खसुन
त वान वटुन
युस कर्मऽः वान यूगी
इहऽऽय खसऽः वस परामरशिः
ओं-सोहं-सौः-अहं-महअ सर्वदा शाद

वैराग्यशतक के दो श्लोक

गामऽः शाहरऽः फ्यूरुस कोहन त बालन
अथ्य् कुनि आम न कान्ह ति फला
मऽशरित क्वऽल पनुन छलिम खुउर कमीनन
तोति छुम इः चन्दऽः बिलकुल खुला
कावऽः सऽञ्च्य् पऽऽठिन छ्यट फऽल्य् ताम खेम
कुनि किन सम्योम न सुऽनऽः ड्डुऽला:
हा म्यानि लालचऽः, पापऽः कि आगरऽः
क्याः च्य़ेः इईय ना ज़ान्ह तसला॥ १॥

खुउनऽः वटऽः खऽन्य् खऽन्य् सोर्योस ति बऽः
अथि इयम ना अक मुऽक्तऽः फुऽला
सत समन्दर छाञ्टि सऽऽत्य छऽऽञ्ड म्येः
तृषनायि त्रेंशि म्योल न अक ति गुउला
शमशानन प्यठ मन्त्र पऽर्य् पऽर्य्
द्रोह त रात गऽऽलित गोस नला
हा म्यानिः लालचऽः,पापऽः कि आगरऽः
क्याः च्य़े इईय ना ज़ान्ह तसला॥ २॥

विर्ला ही

अनुगृह सहन करे कोइ कोइ
निगृह बरदाश्त विर्ला ही
साफ चीज़ को हर कोई समझे
छुपे हुए को विर्ला ही॥ १॥

जग से उपर है ही है वह
जग के अन्दर कोन है ओर
जग के अन्दर जो कोइ जाने
उस को जाने विर्ला ही॥ २॥

कुछ नही अन्दर कुछ नही बाहर
सब कुछ अन्दर सब बाहर
अन्दर बाहर इस से उपर
जाने कोई विर्ला ही॥ ३॥

किस ने जाना किस ने देखा
देखा सब ने जाना भी
देखने जानने वाला जाने
जग में कोई विर्ला ही॥ ४॥

दूर वह ही है पास वह ही है
न दूर न पास कुछ भी नहीं है
आपना ही आप, आप ही समझे
सच मुच हैं वह विरला ही॥ ५॥

जाने वाला था क्या कुछ भी
आने वाला क्या कुछ है
जो है सो है अब ही अब है
जाने कोई विर्ला ही॥ ६॥

बनना क्या है बिगडा क्या है
खोया क्या है पाना क्या
जो है सो है, है ही है, है
जाने कोई विर्ला ही॥ ७॥

सुख में रहना सब को भाए
दुख में रहना है मुशकिल
सुख में दुख में सम रहे तो
योगी जानो विर्ला ही॥ ८॥

जो है होना हो के रहेगा
टाल सके न कोई भी
होने में जो उस को देखे
वह ही शिव है विर्ला ही॥ ९॥

सच को सच तो सब कहते हैं
झूठ बिना सच जाने कौन
सच झूठ दोनों जहां से निकले
वह सच जाने विर्ला ही॥ १०॥

किस को पूजूं कैसे पूज़ों
पूजा जाने वाला मैं
मैं ही, मैं को, मैं से पूजूं
पूजारी हूं विर्ला ही॥ ११॥

अपने को सब प्यार करे है
किसी को प्यार करेगा कौन
सब को एक नज़र से देखे
ब्रह्मज्ञानी है विर्ला ही॥ १२॥

क्या है सम्झा क्या है सोचा
क्या देखा क्या सुन लिया
चुप क्यों नहीं तू रहता है "दीन"
चुप है रहता विर्ला ही॥ १३॥

रावुन लबुन

पनऽःनुई पान ब रावरित आस
ब्ययि पानय, सुई लबऽने।
रोवुम क्याः-लबुन छुम क्याः
कति लबऽः क्याः कुस म्येः वने॥ १॥

बई अई छुस-त रोवुम क्याः
पानऽः पनुन पान-बऽ लबन क्याः।
अन्दरी पानो-वछतो ज़ान
सोरुई पानई हनि हने॥ २॥

न्यबरऽः रोवुक-अन्दरऽः लब
तऽत्य वुछ वारऽः तऽत्य छुइ रब।
न्यबर्युम सोरुई-अन्दरय छुई
छुउपऽः कर छऽपऽः शाह वनखु॥ ३॥

अपुज़ कति आव-पज़ऽरस ज़ाव
पज़र आव अपुज़ वछने।

म्येः ओस चिकऽचाव
बऽ वछऽः हऽऽ नाव
मगर यति रोवुम पनऽनुई नाव
रठ बाल नाव
अदय चऽऽन्य् नाव
दीनो पऽऽन्य् पानऽः अन्द वाते॥ ४॥

जन्म दिन १९८७

बदलेंगे न हरगिज़ चाहे अभी कज़ा हो
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा हो॥ १॥

भगवान ने किया है हम को तेरे हवाले
खायेंगे खुश होकर जो देगा तू निवाले
तेरा दिया है अमृत-चाहे न क्यों सज़ा हो
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा हो॥ २॥

चाहे तू पार कर दे चाहे अभी डुबो दे
अर्पन है मेरा सब कुछ जो चाहे इस को कर दे
तेरे किए में हमको आनन्द का मज़ा हो
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा हो॥ ३॥

दिल को किया हवाले तेरे अज़ल से है
हम को न अब मतलब किसी भी गज़ल से है
मानन्दे ध्रुव रहेंगे चाहे कोई फज़ा हो
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा हो॥ ४॥

लायक अगर हम होते-आते न हम सवाली
पूर्ण जो हम भी होते-करते न आगे झोली
भगवान ने खाली-मोड़ा नहीं किसी को
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा हो॥ ५॥

हम सब का है मालिक-ईश्वर स्वरूप स्वामी
वह ही है शिव हमारा-वह ही है मेरा वाली
उस की हर एक हरकत-इस दीन को फिज़ा हो
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा हो॥ ६॥

कहते हैं तुम को हम-ईशः ईशः
रखो लाज हमारी-हमेशः हमेशः

स्वपन

गुऽर म्येः वुछुम-प्रज़लान वुछुम
प्रजलान वुछुम
स्वपनस मंज़ प्रकट वुछुम
प्रजलान वुछुम-प्रजलान वुछुम॥ १॥

शिव ओस आनन्दमय बिहित
अऽऽठ दीवियिः अन्द्य् अन्द्य् बिहित
करणीश्वरी ह्यथ वुछुम
प्रज़लान वुछुम प्रज़लान वुछुम॥ २॥

बुनऽःकनि दीनऽः शिवरूप वुछुम
प्यठऽः कनि गुऽर गाशऽः रूप वुछुम
प्रकाश प्रजलान सुई वुछुम
प्रज़लान वुछुम प्रज़लान वुछुम॥ ३॥

परमऽःत्वत (तत्त्व)

पानो वनि अनतन
च़्यतस कर पान, पानऽः चेनतन॥ १॥

सुई च़्यत युस छु आनन्दऽः रूप
आनन्दऽः रूपई शिवऽः स्वरूप
सऽई स्वरूप, सुऽर्य् सुऽर्य् ब्ययि सुउरतन
च़्यतस कर पान, पानऽः चेनतन॥ २॥

ज़गतस मंज़ वुछतन विश्वमय रूप
विश्वमय ज़ान विश्वतीर्न स्वरूप
द्वनऽःवऽन्य् मंज़ पान, वारऽः वछतन
च़्यतस कर पान, पानऽः चेनतन॥ ३॥

त्वत भवन काल-मन्त्र पद-वरन
शनऽःवय इम छि ज़गतऽक्य् हद
हदःसई मऽन्ज़, हदऽःरूउस वछतन
च़्यतस कर पान, पानऽः चेनतन॥ ४॥

ज़ान छुक पानऽः, ज़ान ती मान
विश्वरूप सोरुई पनऽनुई पान
मीलित तऽथ्य् सऽऽत्य, वनि अनतन
च़्यतस कर पान, पानऽः चेनतन॥ ५॥

युत ताम ज़ानक ज़ानुन छुम
युत ताम मानक करुन केन्ह छुम
तुऽत ताम पान, रोवमुत मानतन
च़्यतस कर पान, पानऽः चेनतन॥ ६॥

पानई सुई पानई च़ई
करित ज़ऽऽनित तमि वरऽऽई ति च़ई
सहज़ऽः पान छा न्यब्रऽः वनि इवन
च़्यतस कर पान, पानऽः चेनतन॥ ७॥

दीनऽः क्याः गुऽई, क्याः छाञ्डन
सतुगुऽरऽः चरण कोनऽः नालऽ रटन
तिमऽनऽई मंज़ दय, न्वन आसन
च़्यतस कर पान, पानऽः चेनतन॥ ८॥

"वुऽन्य् क्याः गव"

इः गछुन छु गछि-वुन्य् क्याः गव
गछ़ऽवुन छु गछिथई-"वुन्य् क्याः गव"॥ १॥

क्वर्मुत दयि सुन्द बदल्या ज़ान्ह
सु नो यच्छान नाकरऽः ज़ान्ह
"हय क्याः गोम" सोच, असि दुऽख प्यौ
सोच वारऽः पऽऽठिन-"वुन्य् क्याः गव"॥ २॥

इ बन्यौ ति बन्यौ दयि क्वर्मुत
कर्मऽःल्युख आसान छु हुउखमुत
कर सु कऽऽञ्सि ज़ाञ्ह ति मिटयौ
इहऽऽय छय कथ-"वुन्य् क्याः गव"॥ ३॥

कुउर कऽऽञ्सि ति इः नऽ च़्येः गुउछुई
च़ऽः कर ती इः च़्ये खुउश करी
वाद व्यवाद क्याज़ि करुन प्यौ
सोच वारऽः पऽऽठिन "वुन्य् क्या गव"॥ ५॥

गछि नो केन्ह, गव नो केन्ह
ई छु ती, बनिथई सोरुई केन्ह
ती छऽई ज़ान ती चेन तव
सोच वारऽः पऽऽठिन "वुऽन्य क्या गव"॥ ६॥

क्याज़ि खुउतुई क्रूद नाहकऽः पाकय
कुउसऽः फरऽक प्ययी कऽऽञ्सि केन्ह वुउनुनय
च़ऽः छुक अमि थुउद ती याद थव
सोच वारऽः पऽऽठिन "वुन्य क्या गव"॥ ७॥

दीनऽः वनतऽः क्याः छुक च़ऽः सोचान
दयि नाव कोनऽः सुऽरान रोज़ान
सत्गुऽरऽः सऽई पान पुशरावतौ
ज़प कर गरि गरि "वुउन्य् क्या गव"॥ ८॥

सुऽई शारिका

जन्मदिन शारिका देवी जी १९८६

शापऩ हऽन्ज़ युऽसऽः आरिका
सुऽई शारिका सुऽई शारिका॥ १॥

कुऽसऽः शारिका-सुऽई शारिका
चक्रीश्वरस युऽसऽः मध्यमा
मध्यमा हऽन्ज़ ति मध्यमा
सुऽई शारिका सुऽई शारिका॥ २॥

पाप शाप दूर करऽनावऽवऽन्य्
भक्त्यन पार करऽनावऽवऽन्य
गुऽरऽः द्वारऽच युऽसऽः द्वारिका
सुऽइ शारिका सुऽइ शारिका॥ ३॥

तऽभ्य सुन्द राग द्वीश मौ च़ऽः वऽछ
न्यब्रिम वलुन सुई मौ च़ऽः वऽछ
अन्दरय च़ऽः ज़ानुन शारिका
सुऽई शारिका सुऽई शारिका॥ ४॥

कथ कथ तऽम्यसऽन्ज़ ओपदीश
आदि आदेश गव ओपदीश
आदनऽच्य् ज़िठ सऽऽन्य् शारिका
सुऽई शारिका सुऽई शारिका॥ ५॥

दीनो च़ऽः रोज़ तऽस्य् शरन
युऽसऽः गुरुदीवस प्वज़ परन
यषटऽः दीवी चऽऽन्य शारिका
सुऽई शारिका सुऽई शारिका॥ ६॥

सारुक सार

यस्मिन्सर्वं यतः सर्वं यः सर्वतश्च यः।
यश्च सर्वमयो नित्यं तस्मै सर्वात्मने नमः॥

यथ मऽञ्ज़ इः सोरुई - यति द्राव इः सोरुई
युस इः सोरुई - यथ प्यठ इः सोरुई
प्रथ केन्ह इः सोरुइ - शायि शायि सोरुई
जुव सुई सोरुई - विज़िः विज़िः सोरुई
सु कुनुई सोरुइ - वन्दस पान सोरई

सत्गुऽरऽः चरनन तल रोज़

सत्गुऽरऽः चरनन तल च़ऽः रोज़
सत्गुऽरऽः सायस तल च़ऽः रोज़
तऽम्य्सन्दुई ज्ञानऽः बोज़
तऽम्य्सऽन्दिसई ध्यानस रोज़॥ १॥

प्रथम पुरुष त्रावतन
मध्यम बोलऽनावतन
उत्तम पुरऽषस मऽन्ज़ च़ऽः रोज़
सत्गुऽरऽः चरनन तल च़ऽः रोज़॥ २॥

गोमुत मशऽरावतन
इनऽः वोल प्रारनावतन
वुन्यक्यनसई मंज़ चऽः रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ३॥

नर रूप हुशयार थावतन
शक्ती गिन्दऽनावतन
शिवऽः रूपस मंज़ चऽः रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ४॥

सोरुई शिवऽः रूपई वछ
इदम अहं रूपई वछ
अहं रूपस मंज़ चऽः रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ५॥

ग्वडऽःन्युक त्राव-द्वयिमि ब्रोंह
म्योनई बोजक प्रथ कुनि ब्रोंह
प्रथ्माभासस मंज़ चऽः रोज़
(मधि घामस मंज़ चऽः रोज़)
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ६॥

ग्वडऽः ति सुई-पतऽः ति सुई
मऽन्ज़ भाग अहं रूप ति सई
सू हं सू चे़नान रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ७॥

यति नो केन्ह तऽत्य् सोरुई
तति नो केन्ह यऽत्य सोरुई
यति तति आत्मस मंज़ चऽः रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ८॥

पानऽई वुछ पानई बोज़
हताहत त्राव अनाहत बोज़
तऽथ्य् सोज़स मंज़ चऽः रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ९॥

"हय क्याः गोम" ज़ान्ह मो वन
"वुऽन्य क्याः गव", वन वन वन
ती वनऽःवान खुऽश चऽः रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ १०॥

दमई छुक दमई कर
दमस सऽऽतिन लय-खुय कर
दमस सऽऽतिन मीलित रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ११॥

दीनो दीन छुक पानय
नाथो नाथ गुऽरऽः जानय
दीना नाथस मंज़बाग रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ १२॥

प्वत खयाल

"सत" रूप वुछ शिव सोरुई
औ रूप गव त्रेः शक्ती
आःआः करान ज़िन्दऽः रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ १॥

पानसई यछान रुत सारी
पनऽनिस गयि दुनयादारी
सारिनई रुत काञ्छान रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ २॥

अक-अक अछुर सुई ज़ानतन
पदऽः रूप पद पद मानतन
मन्त्र वीर्यस मऽन्ज़ चऽः रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ३॥

वैखरी-रूप न्वन ज़गथा
मध्यमा पश्यन्ती अन्दर-रूपा
न्यबर अन्दर, परा मऽन्ज़ रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ४॥

यथ मऽञ्ज़ सोरुई-यति द्राव सोरुई
सऽऽरिसई मऽन्ज़ युस सोरुई
सारिकुई रूप-न्यथ सोरुई
तऽस्य सर्वात्मस, नमऽवुन रोज़
सतुऽरऽः चरनन तल चऽः रोज़॥ ५॥

जन्म दिन १९८७

क्वुर्मवऽ दिल हवालऽः भगवन
छुम एतिबार बे-हद

अर्पन इः ज़ुव जान तुऽही
छुम तुहुन्द प्यार बे-हद

रोज़नम मरित अछ्य् वऽछय्
छुम शोकि दीदार बे-हन्द

मिलऽनोवऽवस ज़िन्दय पानस सऽऽत्य्
छिवऽः पऽज़्य् पऽऽठय, प्वज़ यार, बे-हद

ज़ाननऽः नऽः ज़ाञ्ह इवान

पानो ज़ान इः छुनऽः ज़ाननऽः ज़ाञ्हति ति इवान
ज़ानुन इः छुनऽः ज़ाञ्ह जाननऽः इवान, छय असल
ज़ान॥ १॥

ज़ानन वऽऽलिस ज़ानि कुस,
सु छुनऽः ज़ानऽःनी ज़ाञ्ह बनान
सोरुइ ज़ानान, गरि गरि ज़ानान
ज़ाञ्ह नऽः ज़ानऽनऽः इवान॥ २॥

सुई पान-सुई प्राण-सुई अपान ति आसान
प्रानस अपानस-मंज़स सुई
पानय पनुन पान, आसान॥ ३॥

वनौ यूत व्वन इः वनऽनुई छि ज़ान
ति ति नो ज़ान
ज़ानऽनऽः वनऽनऽः थ्वद सुई आसान
मगर ज़ानान तऽ वनान॥ ४॥

सनि न्यन्द्रिः मऽञ्ज़ कस छि खबर
"म्येः छयेः खबर"
युस तऽथ खबर नऽआसऽनस ति खबर-दार
सुई सु आसान॥ ५॥

अनुभव करुन-आसानऽ-नऽ आसानऽः मऽञ्ज़ वुछुन
चेनुन चेनन वोल
ति चेनुन ति, अन्दरय फटुन
स्वात्मऽलाभ आसान॥ ६॥

इः लाभ नो छु नुऽव - न छु प्रोन
इः छु सर्वदा अऽऽसिथऽई अऽऽसित
न ज़ानऽनी ज़ानुन - ज़ोनमुत न ज़ानुन
छु नऽः रऽऽवित - तऽ रऽऽविथऽई अऽऽसित
आसान॥ ७॥

न छुस नाव - न काल - न आकार
नऽः छु कुनि केन्ह आसान
मगर ति सोरुई ति सुई पानय-
दीनऽः छु सोरुई केन्ह आसान॥ ८॥

अभ्यास करते करते

दूर्यौ दूर्यौ कोर कुन दूर्यौ
दोरुस पतय चऽः रटुन शाह
मन हा दूर्यौ नाहकय पाहकय
दोरुस पतय चऽः रटुन शाह॥ १॥

शाहई रटून शाहऽः मंज़ऽः रटुन
युत दूरियौ तऽत्य् चऽः रटुन शाह
तगियई रटुन, शाह छुई बनुन
दोरुस पतय चऽः रटुन शाह॥ २॥

शऽऽही करिहे फेरिहे थोरिहे
फेरान छु इः अज़ इबतिदा
रटित रटुन फीरित अनुन
दोरुस पतय चऽः रटुन शाह॥ ३॥

शाह बनिथिई अऽम्य नचुन ह्युतुनय
नतऽःओस समव्यथ गाशी योत
सोचनऽः रूपई फेरनि इः द्राव
दोरुस पतय चऽः रटुन शाह॥ ४॥

शाह तय शाह वछ-मऽञ्ज़ बाग शाह वछ
द्वन मऽञ्ज़ यति तति रोज़न वोल
कुनई बनिथ कुनई रटुन
दोरुस पतय च़ऽः रटुन शाह॥ ५॥

शाहच रज़ छय कुनी रज़ अख
यमि रज़ि इः छु रटनऽः इवान
अमी वगि सऽऽत्य कोबू करतन
दोरुस पतय च़ऽः रटुन शाह॥ ६॥

वनऽः तस अभ्यास या अनुसन्धान
प्राणायाम या हुबुल्ल नफऽस
अमि वरऽऽय ना ज़ान्ह अथि इवान
दोरुस पतय च़ऽः रटुन शाह॥ ७॥

मनऽःकुई व्यवहार - दूरुन आसान
वृतियन व्यवहार भासकर वनान
योगः चित्त वृति निरोधः
दोरुस पतय च़ऽः रटुन शाह॥ ८॥

क्या गुई पानो - सऽऽत्य च़ऽई न्यूनक
लेखुन सोचुन ति गव व्यवहार
बस कर शाहस कुन च़ऽः ह्रास कर
दोरुस पतय च़ऽः रटुन शाह॥ ९॥

दीनो वहमऽः क्या छुक च़ऽः करान
दूर्यौ ना कुन गव ना कुन
दूरित चलित अऽत्य छु रूज़ित
शाहऽ मऽञ्ज़ऽः शाह छुक, शाहनशाह॥ १०॥

जय गोपाल

जय गोविन्द जय गोपाल
जय कृष्ण जय कृपाल
सारे जग के शाम लाल
भक्त जन के राम लाल
कर दया हे दयाल
बना दे दास को निडाल।

बदल दो मेरी चाल
जानते हो तुम मेरा हाल
कर दो अब मुझे निहाल
दे दो मुझ को अपना खयाल।
धन दौलत है ज़वाल
मगर इस का भी है सवाल
क्या ज़वाल क्या अच्छा हाल
सब कुछ है तेरा ख्याल
सब में है मेरा ही हाल
दीन में तुम दीन दयाल
ईश्वर-स्वरूप का हूं माल
इस लिए मांगता ख्याल
कर दो पूरा मेरा सवाल
जय गोविन्द जय गोपाल।

परामृशत च प्रथमां प्रतिभाभिधां संकोचकलङ्ककालुष्यशून्यां भगवतीं संविदम्

(परात्रिंशिका)

व्यच़ार किन व्यचारतन-
-वारऽःपऽऽठय् विमरशतन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन
प्रतिभा नाव या अकलि सलीम ज़ानतन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ १॥

परिपूर्ण सुऽई-तस नो केन्ह कमी
कमी हऽन्दि कमीनऽ पनुक तति नो नाव
न्यर्मल भगवती - समव्यथ ज़ानतन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ २॥

काञ्क्षायि रुउस सुऽई-मऽऽज छि आसऽवऽन्य
यछुन काञ्छुन नऽ तस ब्रोञ्ह ति पकान
प्रथ जायि नऽन्य् पऽऽठय् प्रथ केञ्ह हावान
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ ३॥

संकूचऽः मलिन्यार तऽमिकुई क्रहन्यार
तमि निशिः न्यर्मल आसऽवऽन्य छयेः
ऐश्वीर्य वान सुऽई भगवती ज्ञानतन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ ४॥

तस थ्वद नो कुनि केन्हति आसान
सृष्ट थ्यथ संहार सुऽई छि करान
सुमृत तऽम्य्सऽञ्ज़ई अनुगृह आसन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ ५॥

कान्ह कऽऽम करनऽः ब्रोंह-युसऽ जोश आसान
सऽई मुकलित-युसऽः तसला बनान
जोशस तऽ तसलियस युऽसऽः वाट आसन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ ६॥

यतिः कान्ह नाम-रूप, स्वति स्वऽई आसान
नाम-रूप वरऽऽय ति स्वऽई आसान
केन्ह ति क्वनि जायि-स्वऽई पानः आसन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ ७॥

तऽमसुन्द बजर-कोताह छु आसान
सोरुइ विश्व यऽडय् मऽन्ज़ ईरान
तोति मस वालऽः तऽन्य् स्व आसन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ ८॥

ज़ाग्रत बह्यऽः सुन्द व्यराठ स्वरूप स्वऽई
स्वपुन पनऽनुई तीज़ स्व व्यमरशन
न्यन्दऽर ति स्वऽई ज्ञानऽः रूप आसन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ ९॥

हरकति रुस हरकत, स्पन्द रूप आसान
प्रथ हरकति स्वऽई, बरकत आसान
मच्चऽरऽवऽन्य्-वटऽवऽन्य् अछयूटीण्ट वछतन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ १०॥

परामर्श करतन - दीनो विमरशतन
मन-वऽऽनी-ब्बुज मऽन्ज विमरशतन
पुनुन पान तऽस्य् मीलित वछतन
सारिनई ग्वडऽः आसऽवऽन्य् विमरशतन॥ ११॥

ताँ की होया

ताँ की होया ताँ की होया ताँ की होया बोल
किसी भले-बुरे दा भाई-कदी पोल ना खोल॥ १॥

जे तू बोले ए की होया-ताँ तू है नादान
रब पर जो है तेरा भरोसा, ताँ की होया बोल॥ २॥

ताँ की होया, बोले हमेशा, रहन्दा खुश पूरा
इस जग नूं बना ले स्वर्ग, ताँ की होया बोल॥ ३॥

जो है होना हो के रहेगा कोई न साके टाल
जानके सबकुछ रबदा कीता-ताँ की होय बोल॥ ४॥

रोवे कोई तरले मारे-पिट्टे छाती ज़ोर
होगा वही जो होना होगा-ताँ की होया बोल॥ ५॥

करना फरज़ है तेरा भाई-फलदाता दातार
कर कर के तू ना कर भाई-ताँ की होया बोल॥ ६॥

दीना कर ले रब पर भरोसा, जो है तारनहार
अनुगृहमय प्रभू जान के तू, ताँ की होया बोल॥ ७॥

पान म्योनुई

गव क्याः इ गछुन ओस
ओस हो सुई पान(१) म्योनुई
गछि क्या ती इ गछुन छु
आसि सुति सुई पान म्योनुई
छु क्याः ई छु तऽ ती
सुति हो सुई पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन बो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ १॥

पान म्योनसुई-अहं रूप सुई
शिव रूप सुई, पान म्योनुई
निर्मल सुई-निराकाङ्क्ष सुई
निराभास सुई पान म्योनुई

(१) पान-अन्तरात्मा, शरीर से भिन्न, दूर-दूर

तनऽःथ्वद सुई-मनऽःथ्वद सुई
थदि थ्वद सुई पान म्योनुई
सोरुई सुई-तस भ्यन तो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ २॥

आगुर सुई समन्दर सुई
दर्याव सुई पान म्योनुई
पकऽः वुन सुई ब्यूठ ति सुई
बठि ति सुई पान म्योनुई
यति तति सुई-युथ त्युथ सुई
यलि त्यलि सुई पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन नो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ ३॥

शिव हो सुई प्वष हो सुई
पषु-पतिनाथ पान म्योनुई
ख्यन ति सुई ख्यवान सुई
मज़ऽःति सुई पान म्योनुई
गिन्दुन सुई करान दोह रात
मऽर्य् मऽर्य् ज़िन्दऽः पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन नो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ ४॥

दीह मशराव-खसऽवस वछ
हरकत सुई पान म्योनुई
हरकति मऽञ्ज़ बरकत सुई
शक्ती सुई पान म्योनुइ
दोन मऽञ्ज़बाग युस छु सुई
मिलऽवन सुई पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन नो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ ५॥

दीह ति सुई-प्राण ति सुई
मन ति सुई-पान म्योनुई
तिमन मऽञ्ज़ सुई, ह्वेरिः ब्वनः सुई
जोरऽः रुउस सुई पान म्योनुई

छूवच्चर ति सुई-पूर्ण सुई
मोहऽ माया सुई, पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन तो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ ६॥

ज़ान ति सुई ज़ानऽःवुन सुई
ज़ोनमुत सुई पान म्योनुई
कऽर्य् कऽर्य् सुई-न करऽवुन सुई
करन बोल सुई, पान म्योनुई
करनऽ ज़ऽऽन्य थ्वद-विश्वतीर्न
विश्वमय सुई पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन नो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ ७॥

आभास सुई-आसान सुई
मुशकिल सुई पान म्योनुई
नऽज़दीक सुई-दूर ति सुई
पानऽःसई मंज़ पान म्योनुई
ज़ानक क्याः-च़ऽः करक क्याः
पानई च़ऽई पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन नो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ ८॥

यग्जाह सुई भ्युन भ्युन सुई
मिलऽवित सुई पान म्योनुई
अक-ज़ऽः त्रेऽ अकुई छुई
चूर्युम सुई पान म्योनुई
बेदार सुई-श्वञ्गित सोई
स्वपनाह सुई पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन नो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ ९॥

दोद ति सुई-अर्यर सुई
ज़ाव म्वर सुई पान म्योनुई
ज़ाव नो ज़ान्ह-मरि नो ज़ान्ह
अऽऽसिथऽई छुई पान म्योनुई

ज़्यनऽः मरनऽः निश थ्वद हो सुई
छु त छुनऽः केन्ह पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन नो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ १०॥

इः लेखुन ति मच़राह सुई
ल्यूखमुत कऽम्य पान म्योनुई
लेखऽनुक केञ्ह ताकत सुई
लेखान सुई पान म्योनुई
लीखित सुई ल्यूखुन ति
अजूबऽः सुई पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन नो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ ११॥

कलऽः न्वमराव दीनो ज़ान
सत्ग्वर सुई पान म्योनुई
तऽस्य शरण गछ यऽम्य होवनय
शिव हो सुई पान म्योनुई
शक्ती सुई-ज़ीव हो सुई
त्रकऽः मत सुई पान म्योनुई
सोरुई सुई तस भ्यन नो केन्ह
ई छु तऽ ती पान म्योनुई॥ १२॥

रुउत रुऽङ्गऽः फुउल

रङ्गऽः रङ्गऽः बेरङ्ग बुउछमय म्ये सुः
रुउत रुऽङ्गऽः फुउल
वछनऽः ब्रोङ्ठुई छयम नऽः खबऽरऽई
कुउत सु च़्वल॥ १॥

च़्वल सु कुन ना-गव सु कुन ना
ज़ाञ्ह ति ना हा सु ग्वल
पानय अऽऽसित-पानऽई मशऽरित
पानय ज़न हा ड्वल॥ २॥

पानय रऽऽवित-पानय छऽऽञ्डित
कऽम्य् कर कति सु व्वल
वलनऽः वरऽऽइई-ज़न वलनऽः आमुत
वछतन इः स्यदऽः ह्वल॥ ३॥

तऽऽज़बऽः छु, सु-अजबऽई छु सु
कुनुई ह्युल तय फ्वल
कुन सु अऽऽसिथई-ग्वल ज़न तऽ फुउल
वछतन च़ऽः इः ह्युल॥ ४॥

तऽस्य अकिसई गऽई-इम ईत बनित
रज़ि रुउस ज़िन्दऽः त म्वर
तोति छु कुनुई-पानऽः छु अकुई
सुई ब्येल फ्वल॥ ५॥

ब्योल ति कुनुई ह्युल ति कुनुई
खल ति सुई फुउल फुउल
खल ति छु त्यली-यलि छु सू
कीवल अक ब्येल फुउल॥ ६॥

वुउन म्येः क्या इः वुछ म्येः क्याः इः
क्याः ताम स्युद्ध त ह्वल
दीनो वारऽः वुछ-अऽछय् वटऽनस क्युत
गण्ड वारऽः पऽऽठिन ह्वल॥ ७॥

बद्धि कडुन-परमऽधाम

च़ठ ति सोरुई-यथ च़ऽ बनान म्योन छुक
पथ कुन इ मुच़ी-ती च़ऽ पानय पान छुक
स्वात्मऽः दीव सुई, सुई च़ई शिवनाथ छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-च़ई सु परमः धाम
छुक॥ १॥

रठति सोरुई-यथ नऽ वनान म्योन छुक
युस भाव मुऽटी-सुई च़ऽ पानय पानऽः छुक
भ्युनभ्युन-स्वम्भरित-च़रअच़र-पानऽः छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-च़ई सु परमः धाम
छुक॥ २॥

जाय-शकऽल वक्तऽः थ्वद वछ क्याः चऽः छुक
राग-नीती-मायि-थ्वद वछ क्याः चऽः छुक
अहं पूर्ण-सुई चऽः पानय पानऽः छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-चई सु परमः धाम
छुक॥ ३॥

मंज़ यथ सोरुई-त यति द्राव-ती चऽ छुक
सऽऽरिसऽई मऽन्ज़-युस सोरुई ती चऽ छुक
सारि कुई सार सर्वात्म, ती चऽ छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-चई सु परमः धाम
छुक॥ ४॥

बडि ख्वतऽः ब्वड, कमऽः ख्वतऽःकम, ती चऽः छुक
मनऽः मऽञ्ज़ शोख, ब्वज़ मऽन्ज़ सोच, ती चऽःछुक
यछ़ान, ज़ानान, कर्म करान, ती चऽः छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-चई सु परमः धाम
छुक॥ ५॥

मरि शरीर सु यऽत्य् त्रावऽवुन चऽः छुक
अङ्ग अऽऽशनाब-धनऽ द्यार त्रावऽवुन चऽः छुक
यस न कान्ह ति गछि सऽऽतित सुई आत्मा चऽः
छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-चई सु परमः धाम
छुक॥ ६॥

म्येः क्वर केन्ह-म्योन छु इः, ती नो चऽः छुक
यछुन काञ्छुन-भ्रम छुई ब्वड, सु नो चऽः छुक
शिवऽ ध्यन केन्ह-आसऽवुन छुस-ती नो चऽः छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-चई सु परमः धाम
छुक॥ ७॥

यथ न केन्ह करुनुई छु ती हो चऽः छुक
यथ न केन्ह ज़ानुन छु ती हो चऽः छुक
अऽऽसिथऽई छुक-ज़ानऽवुन करऽवुन ति छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-चई सु परमः धाम
छुक॥ ८॥

युथ छुक, तिथऽई छुक-ई छुक, ती चऽः छुक
तमि कम नो-ज़्यादऽः केन्ह नो ती चऽः छुक
ती छु पूर्ण-परि पूर्ण ती चऽः छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-चई सु परमः धाम
छुक॥ ९॥

कम आसुन-पान मऽशरुन ती चऽः छुक
पान मऽशरित ब्यथि छाञ्डुन ती चऽः छुक
आसुन नासुन प्वज़-अप्वज सोरुई चऽः छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-चई सु परमः धाम
छुक॥ १०॥

ब्यचार वान चऽई-सहज विचार, ती चऽः छुक
अन्ज़ान शश-ज्ञानऽवान गुऽरऽःदीव चऽः छुक
स्वरूपि ईश्वर दीनानाथ ती चऽः छुक
बद्धि कडुन-वारऽ पऽऽठिन-चई सु परमः धाम
छुक॥ ११॥

कर कर के भी कुछ न कर

जो चाहे तू भला अपना
कर कर के भी कुछ न कर
इसी में है तेरा तरना
मर मर के कभी न मर॥ १॥

अहंकार करने का लेकर
कमाया धर्म अधर्म तू ने
जीना मरना जीत ले तू
कर कर के भी कुछ न कर॥ २॥

बन्दिश है यह फांसी है
कि में करने वाला हूं
किया जो है अर्पन कर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ३॥

वेद-शास्त्र तू पढ़ ले
गीता पर विचार कर ले
यह ही सार सब का है
कर कर के भी कुछ न कर॥ ४॥

करना सब प्रभु का है
न करना भी उसी का है
समझना आप को है गर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ५॥

किया सब कुछ उसी ने है
जो असली करने वाला है
बहाना हूं, विचार यह कर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ६॥

में करता हूं जो कहते है
मूर्ख उन को कहते है
वह ही मरता, जनम लेकर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ७॥

करने से पहले तू
कमर बान्ध और खडा हो जा
फल की कुछ फिकिर न कर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ८॥

फल जैसा हो वैसा हो
मीठा हो कि कडवा हो
दिया भगवान का जानकर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ९॥

कार्म मल यह ही है
अज्ञान सब यह ही है
कि करता हूं मैं कर कर
कर कर के भी कुछ न कर॥ १०॥

अरे ओ दीन बन जा दीन
अपने नाथ के आधीन
जिस का उपदेश यह ही है
कर कर के भी कुछ न कर॥ ११॥

लोकव्यवहारकृतां
य इहाविद्यामुपासते मूढाः।
ते यांति जन्ममृत्यू
धर्माधर्मार्गलाबद्धाः॥ (परमार्थसार)

आसन

कल आसि सर्वदा सर्वथा
माजि चित शक्ती कुन
भ्ययि केन्ह सोरुई
आसि त्रोवमुत होर दूर कुन

यहोई गव आसन द्वर
सुखऽः मुखऽः निवान स्वरूपस कुन
(भगवान ईश्वर स्वरूप)

खोवर्य् किन वारऽः वारऽःशाह न्युन अन्दर कुन
दछिन किन सुई वारऽः वारऽः त्रावुन न्यबर कुन
अन्द्रऽः न्यब्रऽः ह्यस थवुन द्वादशान्तस कुन
यहोई गव आसन द्वर
हंगऽः मङ्गऽः निवान स्वरूपस कुन
(भगवान ईश्वर स्वरूप)

एक साधु जी ने आश्रम में महात्मा
देब-गिरी जी (महन्त आबी गुज़र) के साथ
आकर पातञ्जल योग दर्शन में
बताये हुये सब शारीरिक आसन
दिखाये - वह आसन देखने के
पश्चात् भगवान ईश्वर स्वरूप जी
ने ऊपर कहे हुए दो अलौकिक
योग आसन बताए॥ दीन॥

म्योन आत्मा

तऽथ्य मंज़ रूज़ित, तमी मंज़ऽः द्रामुत
तोति तऽत्य् रूज़ित म्योन आत्मा
चूरिः ज़न रूज़ित-ननि ख्वतऽः न्वन छू
सोरुई केन्ह छु म्योन आत्मा॥ १॥

आसुन भासुन-भऽऽसित आसुन
न भऽऽसित ति आसुन भासनुई योत
आसनऽः भासनऽः थ्वद ति रूज़ित
सोरुई केन्ह छु म्योन आत्मा॥ २॥

आत्मा आत्मा पानऽः परमात्मा
छुनऽः केन्ह इः न छु म्योन आत्मा
म्यच्रिःफ्वल, गासऽः त्वल, रुऽपऽः फ्वल, स्वनःफ्वल
सोरुई केन्ह छु म्योन आत्मा॥ ३॥

पूर्णऽः मऽञ्ज़ऽः पूर्ण, पूरऽः द्रामुत
प्रकाशऽः मऽञ्ज़ऽः प्रकाश द्रामुत
यलि ज़ोन त्यलि वुछ प्रकाशई छु
लय प्रकाशस प्रकाश गोमुत
सुई प्रकाश, विमर्श रूप आत्मा
सोरुई केन्ह छु म्योन आत्मा॥ ४॥

ब्ययि कुनि कति इइः
किथऽः कऽन्य् आसि कुनि
ई छुतऽः ती छु म्योन आत्मा
सऽनिराव घनिराव
ज़ऽऽन्य् मऽञ्ज़ फालऽनाव.
सोरुई केन्ह छु म्योन आत्मा॥ ५॥

करऽवुन ति आत्मा
करान पानऽः आत्मा
करान यमि सऽऽत्य्
ति तिः आत्मा
इ करुण ज़ानुन
ति तिः सुई आत्मा
सोरुई केन्ह छु म्योन आत्मा॥ ६॥

दीनो ज़ान्तो ब्ययि ब्ययि चेन्तो
ओसुक छुक आसक ति सुई
रोवमुत छुई न केन्ह
लभऽःनुई छुई न केन्ह
सोरुई केन्ह छु म्योन आत्मा॥ ७॥

हृदय में अच्छी तरह लगा हुवा
पकी जड़ से सोच विचार का पौधा
मोक्ष लक्ष्मी रूप फूल है इसका
शिव मिलन का उत्सव फल मीठा।

शारिका देवी जन्म दिन १९८९

सारिनई लूकन यछ़ान ह्यतऽकार
शारिका दीवी कर नमस्कार॥ १॥

समता भावुक आसन छुस
ह्यसस कुन ह्यस आसन छुस
द्वह त रात तस ती कारुबार
शारिका दीवी कर नमस्कार॥ २॥

गुऽरऽः भक्ती करान द्वह तऽ रात
शिव भक्ती यऽऽच़ छयस कथ बात
कुनि जायि व्वुछ नऽ म्ये इछ़ कांह नार
शारिका दीवी कर नमस्कार॥ ३॥

शैवी शास्त्र परिमऽत्य् छिन
क्रमुक क्रम कर्म तमि ज़ऽऽनमऽत्य छिन
क्रमई योत वुछमुत छुन सम्सार
शारिका दीवी कर नमस्कार॥ ४॥

"वुऽन्य क्या गव" वनुन वनान छु स्वर्ग
"हय क्या गोम" वनऽनुई गव नरुक
दयस पान पुशरित शुकुरगुज़ार
शारिका दीवी कर नमस्कार॥ ५॥

अहंकार यकदम त्रोवमुत छुन
मलन त्र्यनऽवऽन्य नार दितुमुत छुन
गोल्मुत छुन अज्ञानऽः अन्धकार
शारिका दीवी कर नमस्कार॥ ६॥

शक्ति पातऽच्य् स्वऽ मूरत छिः
शक्ती रूप तऽस सूरत छिः
यूगऽः सिद्धी तऽम्य्सुन्द रोज़गार
शारिका दीवी कर नमस्कार॥ ७॥

दीनो गुऽरऽः भक्ती ह्यछ तस निश
ग्वरऽः चरनन तल ब्येह तस निश
यऽऽरी कऽर्नय ग्वरन यकबार
शारिका दीवी कर नमस्कार॥ ८॥

खयालाति परेशान

युस नऽ छु रोवमुत
नऽ कुन गोमुत
मूलऽः तलऽः छु सर्वदा व्यापक
त सोरुई केन्इ
सुई शुर ज़न क्वछि अऽऽसित
पारय दित छाङ्ड्डुन
लबनिः नेरुन छु
ति तिः सुई सोरुई केन्ह॥ १॥

छु नऽः रोवमुत छु लबिथई
तस यस आसन
अऽछय् अन्दर कुन तऽ
मन नामन बन्योमुत
मनऽः किस गुलामस
ब्व्यर मुऽख मनऽशश
छु रोवमुत तऽ
ज़ात्ह ति नऽ लबऽनऽः आमुत॥ २॥

व्वलऽमुत तऽ खटमुत
छु इः मलौ त्र्ययौ
तिम गऽऽलित छु
न्वनुई न्वन
इमन मलन हुन्द मल्युन वलुन
यकदम त्राव
त्यलि छुक पऽऽन्य् पानय
न्वनुई न्वन॥ ३॥

छु त छु - सुई योत छु
ति क्या छु-इः नऽः सु छु
तस वरऽऽय-कुनि नो केन्ह छु
ति क्याः छु-इः छाञ्डुन छु॥ ४॥

छाञ्डऽनुई छु रावुन
युस पऽऽन्य् पानऽः सुई छु
सु नऽः रोव तऽ नऽः छु छाञ्डुन
युस पऽऽन्य् पानय पान छु॥ ५॥

गव क्वत त गछि क्वत
कुस रावि तऽ कुस लब्यस
तस युस छु पानय पान
अऽऽसिथई अऽऽसित-
तस कुस कति लबि॥ ६॥

म्योन वनुन छु राबुन
मशराव मयोन वनुन
अन्द्रऽः न्यबऽरऽः छुक चऽई
पऽऽन्य पानऽः पनुन पान
न छुई केन्ह अलग
तऽ नऽः रोवुई केन्ह
नऽः रावी केन्ह॥
दीनो बोलो - जय गुरु देव

केन्हनऽः

मरिस मऽन्ज़ अमर वऽछय्
चरिस मऽन्ज़ कुनुई वऽछय्
वुछान वुछान केन्हनऽ वऽछय्
केन्हनस मऽन्ज़ सोरुई वऽछय्॥ १॥

न्ववई नीव द्रहोय वऽछय्
प्रोन तऽ नोव कुनुई वऽछय्
सऽऽरिसई मऽन्ज़ केन्हनऽः वऽछय्
केन्हनस मऽन्ज़ सोरुइ वऽछय्॥ २॥

व्वछऽःवुन ज़ान व्वछान वऽछय्
व्वछऽमति मऽन्ज़ऽः व्वछऽवुन वऽछय्
त्र्यनऽवय दीनऽः केन्हन वऽछय
केन्हनस मऽन्ज़ सोरुई वऽछय्॥ ३॥

राम रघुनन्दन
जन्म दिन १९८८

राम रघुनन्दन राम रघुनन्दन राम रघुनन्दन राम
शाम मुरारी शाम मुरारी शाम मुरारी शाम॥ १॥

पूर्ण प्रभू जी कर दो हमारा
बस एक ही काम
मुंह में हमारे चलता रहे
दिन रात आप का नाम॥ २॥

कृपा करके पिला दो हमको
भक्ती का वह जाम
जिस की मस्ती कभी न उतरे
सुबह हो या शाम॥ ३॥

राग द्वेष ने मारा हमको
कर दिया है बदनाम
इसी मोह माया को हमारे लिए
बना दीजिए शुभधाम॥ ४॥

राम के लक्ष्मण दीन के नाथ हो
ईश्वर स्वरूप अनाम
सर्वदा सर्वथा करता रहूँ मैं
मन ही मन साष्टाङ्ग प्रणाम॥ ५॥

सोरुई अहं (एक नृत्य)

सोरुइ केन्ह छू पनऽःनुई पान
सोरुइ केन्ह छू अहं आसान
स्वऽई छऽई ज़ान, ती चऽः ज़ान
पनऽः नुई पान
वाः वा वाः वाः वा वाह
सोरुई केन्ह छू अहं आसान॥ १॥

अकत्रः त्वत गञ्ज़रावुक
पनऽःनुई पान तिम मानुक
ज़गत सोरुई तिमऽई आसान
सत् रूपऽच, छऽई स्वऽई ज़ान
स्वई छऽई ज़ान पनऽनुई पान
वाः वा वाः वाः वा वाः
सोरुई केन्ह छू अहं आसान॥ २॥

सत् रूप ज़ान पनऽःनुई पान
युस न्यबर तऽः अन्दर आसान
न्यब्रऽःअन्द्रऽः कुनुई आसान
स्वई छऽई ज़ान पनऽनुई पान
वाः वा वाः वाः वा वाः
सोरुई केन्ह छू अहं आसान॥ ३॥

ह्यस कर ह्यस क्याः आसान
हुश्यऽऽरी ति न्यन्दर आसान
स्वपनस मऽन्ज़ ति बऽई आसान
तमि न्यबर न केन्ह आसान
स्वई छऽई ज़ान पनऽनुई पान
वाः वा वाः वाः वा वाः
सोरुई केन्ह छू अहं आसान॥ ४॥

यलि हुशयार त्यलि जहान
नतऽः कस छय कुनिः ची ज़ान
आत्मस भ्यन मो केन्ह चः ज़ान
स्वई छऽई ज़ान पनऽनुई पान
वाः वा वाः वाः वा वाः
सोरुई केन्ह छू अहं आसान॥ ५॥

ह्यस कर ह्यस छुस क्याः बऽ ?
ज़गतऽः वरऽऽय केन्ह छुसऽः बऽः ?
यलि छू इः त्यलि छू पान
बऽः तऽ इः सोरुइ, कुनुई आसान
स्वई छऽई ज़ान पनऽनुई पान
वाः वा वाः वाः वा वाः
सोरुई केन्ह छू अहं आसान॥ ६॥

सर्वं सर्वात्मम् ज़ान
सारी मऽञ्ज़ऽः सोरुई द्राव
सोरुई कुनुई - कुनुई आसान
वछतऽः सोरुई कुनुई पान
स्वई छऽई ज़ान पनऽनुई पान
वाः वा वाः वाः वा वाः
सोरुई केन्ह छू अहं आसान॥ ७॥

अकऽत्रः तत्त्व छु इः आसान
सत् रूप "स" तऽथ्य् वनान
मायायि हुन्द इः रूप प्रज़लान
यछान ज़ानान दय करान
"औ" रूप सुई त्रशूल आसान
तऽथ्य मऽञ्ज़ सोरुई केन्ह श्रपान
शिवऽः शक्ती ती आसान
"अः" रूप दो फ्युर चऽः ज़ान
असली मन्त्र "सौः" आसान
ब्यऽलिस मऽञ्ज़ युथ कुल आसान
सुई सोरुई, सोरुइ आसान
स्वई छऽई ज़ान पनऽनुई पान
वाः वा वाः वाः वा वाः
सोरुई केन्ह छू अहं आसान॥ ८॥

"अ" अनुत्तर शिव रूप ज़ान
"ह" जगत शक्ती ज़ान
"म" इमन द्वन मिलऽवान
नर रूप छी अऽथ्य् वनान
ग्वडऽन्युक पतिमिस सऽऽत्य मेलान
शिव शक्ति नर त्रिक वनान
सोरई ज़गत ति इहोय आसान
परा वाक् शक्ती छिः प्रज़लान
परा शक्त हुन्द गाश आसान
ज़गतस इहोय व्याकास आसान
म ह अ फीरित अच़ान
नररूप शक्तियिः शरन गछान
द्वनऽवय शिवस लय सपदान
अऽछय् वाहरान ब्ययि वटान
प्रसर त लय अथ्य् वनान
शिव शक्ति नर त्रिक बनान
भैरव पूज़ा इहऽऽय आसान
अमृतेश्वर कृपा करान
ईश्वर स्वरूप वथ हावान
सोरुई इः अहं प्रज़लान

स्वई छऽई ज़ान पनऽनुई पान
वाः वा वाः वाः वा वाः
सोरुई केन्ह छू अहं आसान॥ ९॥

जय गुरु देव

अशून्यमिव यच्छून्यं यस्मिन् शून्ये जगत्स्थितम्।
सर्गान्ते सति यच्छून्यं-तद्रूपं परमात्मनः॥

"भास्करी"

पानो वुछ-अनुभव कर

प्रथ कुनि मंज़भाग। छेन क्षनऽः क्षनऽः वुछ
कारुबार सोरुई। मऽञ्ज़ऽः छयनऽःदार वुछ
छ्यनऽः छ्यनऽःसई मंज़। केन्हनऽः वारऽःपऽऽठ्य् वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ १॥

सोरुई केन्ह न वुछऽवुन। अहं रूप पान वुछ
सुई केन्हनऽः। ह्यसऽः रूप अहं वुछ।
ह्यसऽः रूप अहं आत्मा। केन्हनऽः मंज़ऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मऽञ्ज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ २॥

वर्णऽः वर्णऽः मऽञ्ज़ भाग। "अ" अनुत्तर वुछ
प्रथ वर्णुक सु मूल। हनि हनि मऽञ्ज़ऽः वुछ
तऽथ्य् मूलस मऽञ्ज़। केन्हनऽः वारऽः पऽऽठयं वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ ३॥

बदलऽवुन सम्सार। रच़ि रच़ि रच़ि वुछ
सोरुई केन्ह यति। इवान गछान वुछ।
अऽथ्य् ज़्यतऽः मरि मंज़। अमर पान केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ ४॥

केन्हनऽः गव क्याः ताम। सुई विज्ञान वुछ
ज़ानऽःवनि थ्वद सुई। ज्ञान अज्ञान वुछ।
ज्ञान अज्ञान यतिः। पनुन पान केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ ५॥

गाशस त अनिघटि। कतिनस वाठ वुछ
प्राणस अपानस। न्यबरऽः अन्दरऽः म्युल वुछ।
सिर्यिः चन्दरमऽः वछवुन। पान केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ ६॥

साकार निराकार। वारऽः वुछ वारऽः वुछ
निराकार बुन्याद। साकार लऽर वुछ।
आसुन नासनस मंज़। च़ऽः केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ ७॥

दीह प्राण पुर्यष्टक। तन मन बुऽद्ध वुछ
इदं अहं रूपऽई। स्पनदनऽ सान वुछ।
शुन्य प्रमाता सुई। ती पान केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ ८॥

केन्हनऽः गव निराकार। विकल्पऽः रुउस सुई वुछ
विकल्प गव बऽः, म्येः, म्योन। मल त्रेः वुछ
त्रेनःवय छलित गाल। वलुन चऽः केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ ९॥

विकल्प ति गव पानऽई। तऽथ्य् मऽञ्ज़ "अहं" वुछ
तमि वरऽऽय निर्विकल्प। इयिः नऽः अथि ती वुछ
रूद आकाशि मंज़ऽः। इया वुछनऽः केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ १०॥

महा-भूतन हऽञ्ज़। बुनियाद आकाश वुछ
मीलित बनान सम्सार। बेसार वुछ
ब्ययि भ्युन भ्युन गछित। बनान केन्हनऽः, ती वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ ११॥

अनाक्षि सऽई मंज़। नाव जाय त काल वुछ
तमि न्यबर नभऽः पोश। खरऽः ह्वन्ग ह्यूः वुछ
सोरुई ज्ञान अज्ञान। तऽथ्य् मंज़ केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ १२॥

सोरुई शब्द द्वऽन। हुन्द च़ऽः ठऽन्य् वुछ
ठनि वराय युस शब्द। सुई मनि मंज़ वुछ
सुई परा रूप सुई। अनाहत केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ १३॥

वैखरी-मध्यमा-पश्यन्ती। थुउद वुछ
परावाक् सुई। शब्दब्रह्म रूप वुछ
सऽऽरिसऽइ मंज़ सु व्याप्त, केन्हनऽः। तऽथ्य् मंज़ वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ १४॥

छु त छुनऽः केन्ह ती वारऽः पऽऽठय् वुछ
ई छु तऽ ती वुछ। ती "अहं" रूप वुछ
"अहं" "सू हं सू"। केन्हनऽः मंज़ऽः ती वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ १५॥

अज़ छु पगाह छुनऽः। सम्सार अपुज वुछ
युत ताम छु त्वतताम। प्वज़ चैतन्य वुछ
तऽथ्य पज़रस मंज़। शून्य-केन्हनऽः ति वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ १६॥

केन्हनस तऽ आत्मस। फरक वछ क्याः वुछ
केन्हनऽ छु प्रमेय। आत्मा प्रमाता वुछ
नतऽः द्वनऽवय कुनी। फरक नो केन्हति वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ १७॥

ब्याक ति फरक। आत्मस तऽ केन्हनस वुछ
द्वनऽः वय प्रकाश पूरऽः। ब्ययि ना केन्ह ति वूछ
आत्मा व्यमरशऽवान। आकाश तमि रुउस वछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ १८॥

ह्यस गव चैतन्यता। च़ऽः चैतन्य वुछ
चैतन्यमात्मा। ती ज़ान ती वुछ
प्रकाश युस व्यमरशऽवान। वछान केन्हनऽः ति वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ १९॥

न्यबर्युम स्थूल रूप। आकाश व्याप्त वुछ
सूक्ष्म चिदाकाश। तऽथ्य मंज़ इ ति वुछ
तऽत्य् सुई परमऽ शिव। चैतन्य केन्ह ति वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ २०॥

वुछनऽः मंज़ः वुछमुत। पानो केन्हनऽः वुछ
वुछनवोल तिमन मंज़। "अहम्" वारऽः पऽऽठय् वुछ
वुछ वुछ ज़ान कर। ज़ऽऽन्य ज़ऽऽन्य केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ २१॥

ज़ाग्रत स्वपुन स्वशप्त। थुउद च़ऽः अनाक्ष पान वुछ
सृष्ट स्थ्यत सम्हार। तमि थुउद ती वुछ
मेय मान माता। ह्युर अहं केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ २२॥

केन्हनऽ वुछऽवुन। क्याः गव, वनुन वुछ
गछि कस गव कस। कर केन्ह, केन्हनऽः वुछ
धरैऽः सान ती ज़ान। नमः कर व्योम बुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ २३॥

श्येः त्रेः नव त काह। दहि ति शुदुई वुछ
दहि ति शुद्वई। हऽऽसिल आव "अक" वुछ
अलग अलग ति सोरुई। "अक" ब्यिइ न
केन्ह ति वुछ। तऽथ्य् केन्हनस मंज़
सोरुई केन्ह वुछ॥ २४॥

व्बड पीपल कुल। सच़ऽनि प्युत ब्योल वुछ
बीज़ कमि शकलिः। अहमस प्यठ फयुर वुछ
सुइ फयुर-नर-इदम। ज़गत केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ २५॥

आकाश सऽऽरिसई। सोरुइ तऽथ मऽञ्ज़ वुछ
प्रऽच़ छयः बऽड इः। कोकरि मऽञ्ज़ ठूल वुछ
ठूलस मऽञ्ज़ कोकऽर। ब्ययि केन्हनऽः वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ २६॥

रेडियो, टी-वी। लहऽरऽः केन्हनऽचि वुछ
सिर्यि प्रकाश वुशनेर। पकान केन्हनऽःमऽञ्ज़्य् वुछ
क्रोरऽः बज़ऽः लहरऽः। मेनान केन्हनऽःचय वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ २७॥

आकाशि मंज़ऽः। वुज़मल ज़ोतऽवऽन्य् वुछ
वुज़ऽः मलि पतः गघराय। बोलऽवऽन्य वुछ
ज़ोतऽनस त बोलनस। छा केन्ह वाट वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मऽञ्ज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ २८॥

सोरुई केन्ह शक्ती। हुन्द फुऽलुन वुछ
तऽम्य् सुन्द मऽऽलिक। पानऽः शिवनाथ वुछ
शक्ती त शिवस मंज़। ब्यन केन्हनऽः ती वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मऽञ्ज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ २९॥

म्योन त्रऽऽविथ पथकुन। मुऽचि सार वुछ
कर्ता धर्ता हर्ता सुई। घरि घरि वुछ
सुई शिव-शक्त, पान। शून्य्वत ति वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मंज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ ३०॥

केन्हनऽ मंज़ऽः केन्हनऽ। वछन वोल केन्हनऽः वुछ
वछन वोल अहम् रूप। सुई "दीनऽः" वारऽः वुछ
अहं-इदम, इदम-अहं। मंज़ऽः च़ऽः केन्ह ति वुछ
तऽथ्य् केन्हनस मऽञ्ज़। सोरुई केन्ह वुछ॥ ३१॥

"सार"

केन्ह नऽः गव अनाख्य्
विश्वतीर्ण वुछ
सोरुई माया
विश्वमय ती वुछ
द्वनऽःवय अहं फिरित
महअ "दीन" वुछ
तऽस्य "दीनस" मऽञ्ज़

ईश्वर-स्वरूप वुछ॥ ३२॥

घड़ी = पहर समय

उठ रे मना - उठ रे मना
तेरी घडी है कहां
यह ही घडी (समय) है तेरी
दूसरी घडी है कहां?

शाहन शाह

जन्म दिन १३-४-८८ को गुरु महाराज के सामने पढ़ा गया

अऽम्य कलऽःवऽऽल्य् खऽऽरऽस मयखानय तय
फीं फीं चऽऽवनस पय दर पय पयमानय तय

क्वरमस पान यकदम हवालय तय
सऽऽरिसऽई क्वर म्येः तऽस्य् कुन बयिनामय तय

अऽऽनस मऽञ्ज़ इथऽः कऽन्य् सोरसामनय तय
पर त पान वुछुम तऽस्य् मंज़ पऽऽन्य् पानय तय

मस बऽ गोस गुऽडऽनकी दामय तय
दिल फुउल म्येः व्वगऽनेम द्वनऽवय शानय तय

सोरुई होवनम किथऽः कऽन्य यकसानय तय
लोलऽः अशि सऽऽत्य् बई बई आम बानय तय

वनऽः कोताः ग्वरऽः नाथुन शानय तय
शाहनशाह सुई पानय ब्ययि केन्ह बहानय तय

दया करतम ही सत्‌ग्वरऽः पऽऽन्य् पानय तय
हर वक्तः दीनस ग्वछ मनि ग्वरऽःध्यानय तय

जो है जैसा है वैसा है शिव
जिधर है किधर है उधर है शिव।
शिव ही शिव है सब कुछ यह है शिव
और कुछ नहीं जो भी देखो वह है शिव।

हुबाब रबाब

जभी हुबाब निकलता है मेरा
तभी रबाब भजता है मेरा
मेरा नही यह सब कुछ है तेरा
हुबाब रबाब सब कुछ है तेरा॥ १॥

मैं ही तो तू है-तू ही तो मैं हूं
मुझ में भी तू है तुझ में भी मैं हूं
जो कुछ जिधर है सब कुछ है तेरा
हुबाब रबाब सब कुछ है तेरा॥ २॥

तेरे से भिन्न भी दिख कर यह तू है
अभिन्न यह सब कुछ सब कुछ तो तू है
कुदरत यह तेरी दुनिया यह तेरा
हुबाब रबाब सब कुंछ है तेरा॥ ३॥

जो कुछ है देखा जलवः है तेरा
जिस ने है देखा च्रशमः है तेरा
देखना तेरा करना है तेरा
हुबाब रबाब सब कुछ है तेरा॥ ४॥

दीन भी है तेरा नाथ है ही तेरा
दीननाथ तो इक दास है तेरा
जो दास है तेरा वह ही है तेरा
हुबाब रबाब सब कुछ है तेरा॥ ५॥

मुहऽःम्वत

(मोह में फंसा हवा पागल)

मंज़ऽः कनि रोज़तो अन्दस पानो
अन्दऽः कनि मण्ज़स रोज़ि मुहऽःम्वत॥ १॥

सऽऽरिसऽई मण्ज़ च्रऽः दय योत ज़ानतो
पनऽनिस मण्ज़ योत ज़ानि मुहऽःम्वत॥ २॥

शुर्य बऽऽच्र दीह धनऽः गयि मोहऽमाया
दीह तय मन छी वति डालान

अमि मंज़ऽ दीनो जल जल नेरतो
अथ मंज़ रोज़ान छुः मुहऽःम्वत

वुछुम हय

वुछम हय वुछुम हय वुछुम हय वुछुम हय,
पनऽःनुई आत्मा सोरुई वुछुम हय
कान्हनय उपर कान्ह पनुन नय वुछुम हय
अहं रूपई योत सोरुई वुछुम हय॥ १॥

सुई छुः दय तय सुई छु दाता
करता धरता हरता विधाता
तऽथ्य् मण्ज़ ज़गत इः नच्रऽवुन वुछुम हय
अहं रूपई योत सोरुई वुछुम हय॥ २॥

दयि कृपा सुऽई दयि सुन्द द्युन हय
ह्वल गण्डित छाडनि, कुन न नेरुन हय
उद्यम भैरव, प्रयतन, पानऽः सुई हय
अहं रूपई योत सोरुई वुछुम हय॥ ३॥

अहं रूप पान युस सुई भगवान हय
विश्वतीर्न सुई विश्वमय सुई हय
तमि न्यबर, सोरुई नभऽःपोश वुछुम हय
अहं रूपई योत सोरुई वुछुम हय॥ ४॥

ईय तस न्यबर ती सोरुई अन्दर हय
तमी निशि सोरुई केन्ह द्रामुत हय
तऽस्य मण्ज़ गछान लय रछ़ रछ़ वुछुम हय
अहं रूपई योत सोरुई वुछुम हय॥ ५॥

अछय् मुचऽरित वटऽवुन ति वुछुम हय
वटित सुऽखऽःसान मऽचऽरित खुर हय
खुर मऽचऽरावान अन्द्रयुम सुई हय
अहं रूपई योत सोरुई वुछुम हय॥ ६॥

प्रथ कुनि कथि मण्ज़ अहं वीर हय
मन्त्रवीर्य योत शक्ती स्वरूप हय
शक्ती स्वरूप ज़गत शिव रूप वुछुम हय
अहं रूपई योत सोरुई वुछुम हय॥ ७॥

वछान ति सुई वुछुन ति सुई हय
सुई वुछन वोल पानऽः ब्ययि नऽः कान्ह हय
वुछमुत सोरुई दीनऽः चऽई पानऽः हय
अहं रूपई योत सोरुई वुछुम हय॥ ८॥

व्यचार

बऽ छुस "कम" गव आनव मल
ज़ानुन म्योन च्योन माई मल
करुम त करऽहऽऽ कारम मल
त्र्यनऽःवय गालान शिवऽः सुन्द बल॥ १॥

मौ वन मौ वन इः कुउर म्येः
कुउर इः दयन च़्येः नो केन्ह
ज़िमऽदार मो बन वनित म्येः म्येः
म्येः वनऽःनुई छुई असली ह्वेह॥ २॥

ह्वेह छुई ब्वड ह्यो छुस कुसतान्य
इः शरीरई छुस बऽः आसान
इः नो च़ऽह, च़ऽह अति रोज़ान
मन्दरस किथऽ कऽन्य वनौ भगवान॥ ३॥

दीह अहंकार छऽई बऽड बेमऽऽर्य्
अमी मोरनक ब्ययि मऽऽर्य् मऽऽर्य्
दीहिक अवयव (बन्द-बन्द) कर द्राय स़ऽर्य
गालखऽई अहंकार खुलनय तऽऽर्य्॥ ४॥

यली मानक बऽः नो दीह
बऽछुस ज़ुव, ज़ुवऽः रुस इः
ज़ुव यलि नेरस दुऽदऽरि इः
वडरान ज़ालान तवऽई छिन इः॥ ५॥

चे़न्तो चे़नऽवन युस छुक च़ऽः
चैतन्यं आत्मा शिवऽ रूप च़ऽः
प्रकाश व्यमर्श योतऽई च़ऽः
साधनऽः वरऽऽय स्यध हो च़ऽः॥ ६॥

युस नऽन्य् पऽऽठय् नुउन तस खटि कुस
सिर्यि भगवानस यब ह्यथि कुस
ज़ानन वऽऽलिस ज़ानि नऽः कुस
पानऽः पनुन ह्यस चे़नि नऽः कुस॥ ७॥

चे़नऽवऽनि चे़नुन पनऽःनुई पान
युस नऽ ज़ान्ह रोवऽई सुई चोन पान
रावनऽः वरऽऽई लभक क्याः पान
पानय पान छुक "दीनऽः" ती ज़ान॥ ९॥

"हय क्या गोम" वनुन छु रावुन
"वुयन क्याः गव" पान याद पावुन
ईश्वर स्वरूप ज़ान पान सऽऽरित
ब्ययि न कान्ह ह्यकान, पान ज़ऽऽनित॥ १०॥

इः शरीर छु यत्य् त्रावुन
लोह लन्गर सोरुइ मच़ऽरावुन
ह्यतःकारई योत सऽऽत्य छु न्युन
लूकऽःआनन्द समाध ज़ानुन॥ ११॥

यलि आयोक जगतस मण्ज़
असान अऽऽस्य लूक वदान च्रऽः
त्युथ कर यति युथ गछनऽः वक्तन
वदन लूक असान आसक च्रऽः॥ १२॥

वछतो वारऽः पऽऽठय शिवऽसुन्द बुथ
म्यच्रि प्यठऽः शिवस ताम श्यत्रऽः युथ
ईश्वर स्वरूपन युथ ज़ोन त्युथ
"दीनऽः" च्यतिः होवनय वारऽः पऽऽठय् युथ॥ १३॥

रहस्य खुऽतऽः रहस्य-अष्टाङ्ग योग

नेत्र तन्त्र के आधार पर (यम)

सम्सारऽः निश अचुन पुउत पुउत पानो
छुऽई असली यम आसानो

(नियम)

परमऽः तत्वक व्यमर्श करऽवुन रोज़ि
शैपी पऽऽठय् न्यमय जानानो
सुऽई गयि दयि भक्ती त भावना
ह्यस होश तस निश न डालानो

क्या छुस कति आस कुउत छुम गछुन
दोहत रात आसि ती स्वरानो
अहं मन्त्रुक व्यमर्श करऽवुन रोज़ि
तन मन धन तऽथ्य कुन लागानो
दयि च्ररनन पान पुशरऽऽवित
तऽस्य शरन दोह त रात रोजानो
इहोइ गव न्ययम इहोइ पाठ पूज़ा
ईश्वर प्रनिधान अथ्य वनानो

अनन्य चिन्तन कृष्णऽ भगवान वनान
सोरुई करऽवुन पान स्वरानो
फर्ज़ करज़ऽक्य् पऽऽठय नखऽ वालुन
नतऽः ज़न्मऽ ज़न्मन मंज़ नच्रानो

नऽः छु केन्ह रटऽनी न छु केन्ह त्रावनी
इः दयन द्युत तत शुकरानो
अऽथ्य न्यमस मऽण्ज़ यलि रोजी
अदऽःआसन स्यद्ध गछानो

आसन

वसऽःवऽनि, खसऽः वऽनि शाहऽः मऽञ्ज़ऽः युस
सऽण्ज़्य् मण्ज़ ध्यान आसि थावानो॥ १॥

यऽऽनी कति नस शाह छू फेरान
तऽथ्य् कुन ह्यस आमि करानो॥ २॥

अऽथ्य् छी शैवी आसन वनान
ब्ययि वरज़िशि न्यबर निवानो॥ ३॥

हृदयस तऽ न्यब्रिमस द्वादशन्तस कुन
प्रथ वक्तऽः ह्यस युस थावानो॥ ४॥

सुई छू असली आसनस प्यठ बिहित
पानस अन्दर पान वछानो॥ ५॥

अऽथ्य असल आसनस प्यठ यस बिहुन तगि
ब्रोण्ह कुन सु ब्वड योग प्रावानो॥ ६॥

सत्ग्वरऽः दया छयस अऽथ्य् पऽऽविस प्यठ
अथऽः पनुन वारऽः प्यठऽः थावानो॥ ७॥

तनऽः मनऽः धनऽः सान दीनऽः अतिनस बिहित
सतुऽरऽः ख्राव आस पूज़ानो॥ ८॥

यूगी अऽथ्य् आसनस प्यठ बिहित
यूग तऽ भूग छु प्रावानो॥ ९॥

शिव-भक्ती रूप च्यतदीव पानय
हृदयस मण्ज़ खेल खेलानो॥ १०॥

सदा रमन्तम हृदयाय बिन्दे
अतिथई छु यूगी च्रेनानो॥ ११॥

अच़ऽवनिस शाहस न्यबर कुन धकऽद्युन
शिव शक्ती हुन्द रमन आसानो॥ १२॥

हरकति रुउस हरकत बरकत इहऽऽय
स्पन्द नाव अऽथ्य आसानो॥ १३॥

मऽऽज़्य भगवती त्रिपूरऽःसुऽन्दरी
ह्यस रूप चैतन्यम् आसानो॥ १४॥

यस ज़ीवस अथ आसनस बिहुन तगि
तऽस्य यूगी नाव आसानो॥ १५॥

आसन इः गोडन्युक ह्येरऽः पोव आसान
आनव उपाय नाव आसानो॥ १६॥

आनन्दस मंज़ निरानन्द आनन्द
अतिथई यूगी भूगानो॥ १७॥

इथऽः पऽऽठय् ब्ययन आसनन प्यठ
शरीरऽक्य रूग छि दूर गछानो॥ १८॥

तिथय पऽऽठय् यथ आसनस प्यठ
मनऽक्य् रूग दूर छि च़लानो॥ १९॥

यथ आसनस छयेः नऽः कान्ह ति बन्दिश
बिहित या पकऽवुन करित ह्यकानो॥ २०॥

हर वक्तः प्रथ जायि प्यठ इः आसन
सुऽखऽः मुऽखऽः सिद्धिदा आसानो॥ २१॥

"दीनो" स्यद्ध करित इः आसन
समाध छि यूगी प्रावानो॥ २२॥

पुऽज़ वखऽत

प्रयत्नः साधकः

कुस पहर कुऽसऽ धऽर छई च़ऽऽन्य् पानो
कुऽसऽः धऽर छि लबनी जानो॥ १॥

यमि घरि दय स्वरोन स्वई पनऽन्य आसान
नतऽः पनुन पान यति रावऽरानो॥ २॥

दयि सुमरनि रुउस योसऽः घऽर ज़ायि गछि
स्व घऽर छयनऽः ज़ाण्ह अथि इवानो॥ ३॥

वऽण्य्क्यनऽसई लोलऽःसान रटुन भगवान
त्यलि नो ज़ाञ्हति छू सू मशानो॥ ४॥

यलि वऽण्यक्यन रोज़व अऽस्य ह्यसऽसान
त्यली छु ह्यस प्रथ सातऽः रोज़ानो॥ ५॥

युस च़्योह गव पत सु गव नीरित
तऽथ कुन ज़ाण्ह मऽ आस वछानो॥ ६॥

तऽथ मण्ज़ इ बन्यौ दयि कुउरमुत बन्यौ
सु ति ओस अहं रूप आसानो॥ ७॥

पगऽः हऽचि घरि ज़न प्राऽरहऽऽव वुऽन्य
खबर छा आसऽवऽः ज़िन्दऽः किनऽः मरानो
इः घऽर युऽसऽः छयई सोई योत छ्येः पनऽन्य्
अऽथ घरि रऽऽछ आस्तऽः करानो
यऽथ्य घरि मंज़ कर दयि स्मरन च़ऽः
त्यलि छुक पूरऽः भऽकत्य् आसानो
रावऽरावहन अगर वऽण्क्यनऽच्य् घऽर
द्रनऽःवय लूक त्यलि रावानो
वऽन्य्क्युनऽःकुई वकऽत छु मजूद सर्वदा
पथ ब्रोह छुनऽ केन्ह आसानो
इः करख ति वऽन्य्क्यनऽसई करख
नतऽः छुख जन्म रावऽरानो
दयि दयायि रोज़ी वऽन्य्क्यनसई ह्यस
उद्यमो भैरवऽः तऽथ वनानो
सुई उपदीश कुउर सत्गुऽरऽः दीवन
वऽन्यक्यनुक शाह आस ह्यसऽः रटानो
दीनो सतगुउर छी म्यहरबाना च़्येः
ईश्वर स्वरूप हर वक्तऽः रछानो।

प्रत्यभिज्ञाहृदय का खयाल

लागतो लागतो दोह-त-रात पोश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश
यति तऽति यलि त्यलि लागतो पोश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ १॥

स्वतन्त्र मऽऽज च़्यथ् वारऽःज़ानुन
ज़गत स्यद्ध करान परज़ऽनावुन
परज़ऽःनावनुई गव लागऽन्य पोश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ २॥

पानय च़ऽः कागज़ चित शक्ती होश
ज़गत पनऽनी मूर्ती बनावान पोश
ज़ान चऽः सिर इः अगर छुई होश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ ३॥

च़्यत शक्ती गयि यछा पान, वछिनऽच्य्
बोन वसित बनेयि मन बुऽद्ध सोचऽनऽच्य्
अहंकार बनऽथ्य् वछान नऽव्य् नऽव्य् पोश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ ४॥

विश्वरूप छु इः शिवई पऽऽण्य पानय
बनान नाना रूप शिव पऽऽण्य् पानय
रण्गऽः रण्गऽः लागान पानऽः पानस पोश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ ५॥

परि पूर्ण शिव पान श्रुकरावान
जड चैतन्य रूप ज़गत पानय बनान
ह्युन त ह्यनऽः वोल शिवई पम्पोश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ ६॥

गछऽः नुई छुई नऽः कुन अनऽनि पोश
बाग च़ऽई पानय पानय पोश
अनमोल पोश छुक ह्यसऽः पम्पोश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ ७॥

कुन शिव बनान पऽऽन्य् पानय तीत्य
ज़ऽः त्रेः च़ोर पऽऽञ्च़-गुण्य-सत ईत्य
मायातीत बनान मायामय पोश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ ८॥

वनऽःनस ह्यस कर बोज़नस होश
ख्यनस ह्यस कर चनस ति होश
ह्यस ब्यहनस पकऽनस होश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ ९॥

ह्यस छु करुन ज़ानुन छु होश
गाश छुक ह्यसऽः रूप सोचुन होश
ज़ान कर पनऽःनी अगर छुई होश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ १०॥

असली छुक च़ऽः ह्यसऽः रूप पोश
गण्ड कमर यकदम ज़ान पान होश
बऽः म्योन-म्येः वनुन डाली होश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ ११॥

सृष्टी बनान विज़ि विज़ि कर होश
बनित वछ थ्यती मसऽः ज़ान्ह रोश
मुऽकऽलुन सम्हार वछान बा होश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ १२॥

पञ्चकृत वछान रोज़ुन गव होश
सृष्ट थ्यत सम्हारस करान नोश
रोज़िः ह्यस अनुग्रह, निगृह मशुन, होश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ १३॥

ग्वरऽः नाथस लाग "दीनऽः" ह्यसऽः पोश
फीर फीर वुन तऽम्य क्याः गव होश
तऽम्य् सुन्दुई छु अनुगृह लाग तऽस्य् पोश
ह्यसऽः भगवानस होशऽः पम्पोश॥ १४॥

सर्वात्मा रूप

हृदयस मंज़ छी पूज़ान द्वह त रात
केन्ह लूक राम बेतरिः नाव वनित
ब्ययि केन्ह शान्तस जोति रूपस ह्यसस
सर्वदा रूज़ान छी च़्यय स्वरित
व्यषियन वैराग करऽःवऽन्य केन्ह छी
परमब्रह्म रूपस च़रन च्येः रटित
ही पाप गालऽवनि जोरऽः रस्ति भगवानऽः
सर्वात्मा रूपऽः लगऽहऽऽय बऽः वन्दित

ॐ तत्सत

आत्मैव सर्वभावेषु स्फुरन्निर्वृतचिद्वपुः
अनिरुद्धेच्छा प्रसरः प्रसरद् दृक्क्रियः शिवः॥

शिवई छु आत्मा-आत्मई गव शिव
पृथ कुनिः मंज़ऽः न्वन आसऽवुन
ह्यस रूप छुस शरीर, मगर निराकार छु
हण्गऽः मण्गऽः पृथ रूपऽः छू फ्वलऽवुन
स्वतन्त्र इच्छा भगवती शक्ती
सहऽः सवार कुस कर छुस रोकऽवुन
ज्ञान त क्रिया शूभिदार तस पाद
द्वह तऽ रात दीनऽः तिमऽनई नमऽवुन।

रिन्दऽः

रिन्दऽः ज़िन्दऽः मर।
मऽर्य मऽर्य मा रोज़ ज़िन्दऽः पानो।
लब खन्दऽः रोज़।
नतऽः करनई सऽऽरी खन्दऽ पानो।
बन्दगी कर।
बन्दऽः चऽः छुक।
रोज दयिसुन्द बन्दऽः पानो।
रोज़क नय।
रावी वऽऽञ्स।
नाहकय गोख बन्द पानो।

O MY SELF

Tell your ego ye go
You are yes, you are no
Yes no, beyond yes no
You know or not, you are so

What is, where is,
One like the other, not is,
Never again same is,
Changeful changeful all is.

Every thing, changes,
Every moment, changes
Nature always changes
Life nothing but change is.

Think, think, you are what?
Individual! you are what?
Universal! you are what?
This or that, you are what?

Both of them, are you that?
One or two, are you that?
Body only, are you that?
Living in it, are you that?

If you are in, what is out?
Are you out, only out?
In or out, think it out?
Both or beyond please scout.

Nobody knows; what he is
No one will know, what he is
One cannot feel what he is
Will the knower know what he is?

Consciousness always is.
Consciousness individual is.
Consciousness universal is.
Know the both, that you is.

One is one.
One is all.
All is one.
All is All.

Knower Be.
Seer Be.
Be. Be. Be.
Whatever you Be.

Close it up.
Girdle up up.
Feel up up
Rise up up.

You are Love
God is Love
Do not fall in Love
Rise, O SELF, Rise is Love.
"Din"

"Let us not fall in love
But let us rise in Love"
Swami Vivekananda

देशकाल पदार्थात्मा
यद्यद वस्तु यथायथा।
तत्तत् रूपेण या भाति
अकुलां तां संविदंश्रये॥

It is.
What it is?
As it is.
"THAT" it is.

With its life as space and time
Whatever is, in whatever shape
In that very way does shine
Propitiable Universal Conscience.

Some Dharanas

In the start of every breath
thou shall see
Thou art full of energy
If Conscious of this you
always be
O Bhairav realize thy Bhairavi (1)

In between the two breathers
in and out
Two voids do invariably sprout
If breaklessly thou see their
hideout
Thy own self thou shall
easily find out (2)

Without effort without leaving
or taking
Get to thy own centre without
any raking
This Sushumna the central Nadi
When you realize awakening
Realize realize the reality
in the making (3)

When the breath is out, stop.
When you take it in, stop.
Stopping everytime, till you can easily
stop
And Lo! Calmness revealed, you are
Yourself atop. (4)

Rise from Muladhara as rays always
Right up, above the body, see the rays
Keeping conscious in all the most
subtle ways
Parashakti - the Kundalini shins
in these ways. (5)

See thy powers rise as brightway
From plexus to plexus brightening
Till twelve fingers alove thy
head hightening
And here you see yourself
brightening. (6)

On Twelve stages from Mula-dhara
Dwadashanta
On twelve Vowels Concentrate
Realize them moving and brightening
Free thou art; Shiva incarnate. (7)

(Mula, Kanda, Nabhi, Heart, Throat Talu,
Centre of eyelids, Forehead
Brahmarandhra, Shakti and Vyapini.)

Fill thy body with breath
right upto the skull
Concentrate in the centre
of thy eyebrows thou shall
Banish all ideas from thy
mind and feel the lull
Pervading through-out thee
in and outside the shell (8)

Taking thy five organs as if
Five Colours of a peacocks tail
Not separate but simultaneously
Enter the centre of thy supreme
Void - Hail (9)

Concentrate on any of your
Dwadashanta or wherever you can,
On the void, on a wall,
post or other person,
Merge in your self, you
are the blessed man (10)

Fix thy mind in your skull
Keep thy eye closed in the shell
Feel the flames of fire
shining in your skull
Merge in Universal Consciousness so
well. (11)

Dwell in the middle of your
central Nadi;
So subtle as the hair of a
lotus petal;
When thus Concentrated you
long remain
You shall see your self shinging
as the best metal. (12)

Close the seven openings of
your skull with your two hands
Maintain your awareness
by piercing the centre of
your eyeball
You see the Bindu Prakasha
and then get into seven
centres self and all. (13)

Press the centre of your eyes
and agitate it
A subtle flame will apear
before it
Concentrate on this flame to
hit yourself into the trance
so composite. *Swami Ji*

Do not saw saw-dust
Talk only when you must
Din

A lesson of Bhagvan Guru Dev

Do not perceive the "outside" in "thisness" See it in "I ness"
Example "I have a book"
Here the book or another thousand things are secondary. The Primary thing is "I".
When "I" exists the book or thousand things exist.
If "I" vanishes what use is the book or any other thing.

Vairagya

Harken Harken O Man
If you are wise
This is the quintessence
Of all scriptures
And the repeated words of the wise.

The body, the house
Money, children or spouse
Are not you
They are all for themselves
And you too for only you.
When you understand this,
Realize this
Without throwing away any of it;
Holding all as a trust for the Lord,
All that you call mine
Belongs only to the Lord,
Live like a lotus leaf on the
watersurface,
Without wetting your body
arms or face.
The Lord Benevolent Shiva
Shall then surely bestow on you
His Ever Omnipresent Shineful
Grace and Glory
Make you Understand,
Realize, that
All this open wide Universe
Is nothing but you, only you
This is the Lord-God-Shiva
This is Consciousness
This is understanding,
This is knowledge
And this is you.
All one in a nutshell
And the shell also is you
Realize अहं अ to ह, A to Z
Is you, you, you

What you call mine
Is not you
Believe it or not
It is true true true.

Be one with the Universe
All All is yours and you
Understand it or not
It is true true true. *(Din)*

Om

All thought is limited. It is mayic, It is within Conscience which is Amayic and limitless. In thought there is illusion. To understand illusion is the beginning (start) of knowledge. The thought is based on past knowledge, acquired from books, scriptures, and people. Since it is defined it is mayic and illusory. The Reality, the Truth is beyond mind and intelligence and so unreachable by these two. But all the same it is there, "as it is", "That it is", It exists in thought and is also beyond it. Since it exist in thinking, the thinking cannot see it. Since it is beyond thought. It is beyond conception. It is the "self", the seer, the thinker so the seer cannot see its ownself. So it is beyond thought beyond conception. But it is as it is pervading everywhere, therefore, Always evident most easy सुलभ, Beyond thought it is not perceivable and this most difficult (दुर्लभ). This evident form of it is the Universe the Macrocosm (विश्वमय) and the difficult form is beyond the Universe the Microcosm (विश्वतीर्न). Both exist simultaneously and This is Life Consciousness, Lord Shiva prevailing and pervading everywhere.

Seven SINS
1. Pride
2. Covetiousness
3. Lust
4. Anger
5. Gluttony
6. Envy
7. Sloth.

Leave these seven
Glory here & there is Yours.

पानो

असली छुक यलय च़ऽः कऽम्य वुनुई बन्द पानो
पान मऽशरित, कम ज़ऽऽनित करुत पान बन्द पानो
सोरुइ वछ च़ई हो छुक, कति छुई कान्ह गण्ड पानो
ब्वनऽः ति च़ई ह्यरि ति च़ई हेरि ब्वनऽ छुक च़ई पानो

रिन्दऽःपान च्यई बन्द क्वरथन बऽः म्योन म्येः छी गण्ड पानो
पनऽःने रज़ऽः गऽज्यत पानस पान क्वरथन बन्द पानो
पनुन पान वछ च़ई पानय सऽऽरिसई ग्वड अन्द पानो
ग्वडऽति च़ई मंज़ति च़ई पानय अन्द वन्द पानो

टूरिस मंज़ पोशः बन्द, च़ठ जामऽः न्यबर फ्वल पानो
भास छुई बन्द आसऽनुक, च्येः नतऽः च़ई ब्योल ह्युल पानो
ब्यालि प्यठऽः ह्यलिस ताम रूद कतिनस ब्येल फ्वल पानो
न्यन्दऽः कई कई मल नरमाव पपऽः सगऽः सऽऽत्य छयल पानो
अदऽः करि क्वुल क्राव यकदम तेर्सम जान ह्युल पानो
अक बेल फ्वल वछ कऽऽत्या, तिम बनेय ह्युल पानो
ह्यलि मंजऽः वछ, अक अक फ्वल, छा कुनि केन्ह भ्यन पानो
शिव गव ब्योल च़राचर ह्युल कुनि छुनऽः केन्ह भ्यन पानो
वन्तऽः पानस क्या छुई गोमुत कुनि छुई न केन्ह ह्यन पानो
ई छू ती, यति तति छू यलि त्यलि न केन्ह भ्यन पानो
दीनऽः दीनो लादीनो दीन कुस छू अलग पानो
युस असल दीन सु कुनुई छू दय दीनो कुन पानो

कर कर के न करना

जो चाहे तू भला अपना
कर कर के भी कुछ न कर
इसी में है तेरा तरना
मर मर के कभी न मर॥ १॥

अहंकार करने का लेकर
कमाया धर्म अधर्म तू ने
जीना मरना जीत ले तू
कर कर के भी कुछ न कर॥ २॥

बन्दिश है, यह फान्सी है
कि मैं करने वाला हूं
किया जो है तू अर्पण कर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ३॥

वेद उपनिषद् तू पढ़ ले
गीता पर सोच कर ले
यही सार इन सब का है
कर कर के भी कुछ न कर॥ ४॥

करना सब प्रभु का है
न करना भी उसी का है
समझना अपने को है गर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ५॥

करना सब उसी का है
जो असली करने वाला है
बहाना हूं विचार यह कर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ६॥

मैं करता हूं जो कहते हैं
मूर्ख उन को कहते हैं
वह ही मरता जन्म लेकर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ७॥

करने से पहले तू
कमर बान्ध और खड़ा हो जा
फल की कांक्षा न कर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ८॥

फल जैसा हो वैसा हो
मीठा हो कि कडवा हो
दिया भगवान का जान कर
कर कर के भी कुछ न कर॥ ९॥

कार्ममल यह ही है
अज्ञान रूप यह ही है
कि करता हूं "मैं" कर कर
कर कर के भी कुछ न कर॥ १०॥

अरे ओ "दीन" बन जा दीन
अपने नाथ के आधीन
जिस का भेद यह ही है
कर कर के भी कुछ न कर॥ ११॥

स्वरूप लाभ

कल आसि सर्वदा सर्वथा
माजि चित शक्ती कुन
पनुन परुद सोरुइ ज़ोन्मुत
माल दयि सुन्द
करुन क्रावुन मोन्मुत कार
तस्य करन वऽऽल्य् सुन्द
ती गव आसुन स्वरूप लाभ
शक्ति पात शिवऽ सुन्द

आत्मा - शिव

शिवई छु आत्मा-आत्मई गव शिव
प्रथ कुनि मंज़ युस न्वन आसऽवुन
ह्यसऽः रूप छुस शरीर मगर निराकार छु
हंगऽः मंगऽः प्रथ रंगऽः छु फ्वलऽःवुन
स्वतन्त्र इच्छा भगवती शक्ती
सहस सवार तस कुस छु रोकऽवुन
ज्ञान त क्रिया रूप तस दोरऽवऽन्य पाद
दोह त रात "दीन" तिमऽनई नमऽःबुन

रावुन न लबुन

न्यन्द्रिः मंज़ कस छि खबर
म्येः छयनऽः खबर
युस तथ खबर नासऽनस खबरदार
सुई आत्मा आसान॥ १॥

अनुभव करुन नासनऽः आसनऽः मंज़ऽः वुछुन
चेनुन चेनन वोल
ति चेनुन ति अन्द्रय फ्टुन छु
स्वात्म लाभ आसान॥ २॥

इः लाभ नो छु न्वुव न छु प्रोन
इः छु सर्वदा अऽऽसिथई अऽऽसिथ
न ज़ानऽनी ज़ानुन, ज़ोन्मुत न ज़ानुन
छु नऽः ज़ान्ह रोवमुत अऽऽसिथ॥ ३॥

न छुस नाव न काल न आकार
न छु कुनि केंन्ह
मगर ति सोरुई ति सुई
सुई छु सोरुई आसान॥ ४॥

पानो ज़ान इः छुनऽः ज़ाननऽः
ज़ान्ह ति इवान
ज़ानुन इः छुनऽः ज़ानऽनऽः इवान
छय असल ज़ान॥ ५॥

ज़ानन वऽऽलिस ज़ानिः कुस
सु नो ज़ानऽनी बनान
सोरुई ज़ानान घरि घरि ज़ानान
मगर ज़ानऽनऽः नऽ ज़ान्ह ति इवान॥ ६॥

सुई छु पान सुई प्राण सुई अपान
प्रानस अपानस मंज़स सुई पानय पनुन पान॥ ७॥

वनव योत व्वुन, इः वनऽनुई छि ज़ान, तितिः नो ज़ान
ज़ानऽनऽः वनऽनऽः थ्वद सुई मगर सुई ज़ानान त
वनान॥ ८॥

युस न छु रोवमुत, न छु गोमुत कुन
मूलऽः तलऽः छु सर्वदा व्यापक त सोरुई
सुई श्वर क्वछि मंज़ अऽऽसित, पारय दित छान्डनि
नेरुन
तितिः छु सुई, सोरुई केन्ह पानय सुई, आसान॥ ९॥

छु नऽः रोवमुत त छु लभिथई तस यस आसान
अऽछय् अन्दर कुन
त मन नामन बन्योमुत
मनऽः किस गुलामस बह्यरमुऽख मनऽशस
छु रोवमुत त, ज़ान्ह ति नऽ अथि आमुत॥ १०॥

व्युलमुत त ख्वुटमुत छु इः मलौ त्र्ययौ
तिम गऽऽलित छु न्वनुई न्वन
इमन मलन हुन्द मल्युन वलुन यकदम त्राव
त्यलि छु पान पानय, न्वनुइ न्वन।

खयालाति परेशान

छु इः छु सुई योत छु
ति क्याः छु इः नऽः सु छु
तस वरऽऽय कुनि नो केन्ह छु॥ १॥

ति क्याः छु इः छाञ्डुन छु
छाञ्डनुई छु रावुन, पऽऽन्य पानऽः युस छु
सु न रोव, तऽ नऽः छु छाञ्डुन॥ २॥

भ्रम छुई ब्रह्म छु भ्रम
तमी ब्रह्माहन भ्रमऽरोवुक
पानय अऽऽसिथ, अथस क्यथ अऽऽसित लाल
सदऽरस फ्वटुक, डुब्गि, खारऽहऽऽन लाल॥ ३॥
गव क्वुत त गछि क्वुत
कुस रावि त कुस लभ्यस॥ १॥

तस युस छु पानय पान अऽऽसिथई अऽऽसिथ॥ २॥

तस कुस कति किथऽः कऽन्य लभ्यस॥ ३॥

म्योन वनुन छु रावुन, मशराव म्योन वनुन
अन्द्रऽः न्यबरऽः इः छुक, ति छुक चऽई पानय
पान॥ ४॥

न छुई केन्ह अलग, न रोवुई, न रावी
दीनो बोलो जय गुरु देव॥ ५॥

मल

ब छुस कम गव आनव मल
ज़ानुन म्योन च्योन मायीय मल
करुम तऽ करऽहऽऽ कार्म कल
त्र्यनऽःवय गालान शिवऽः सुन्द बल॥ १॥

मौ वन मौ वन इः क्वुर म्येः
क्वुर इः दयन च़्ये नो केन्ह
ज़िमऽदार मो बन, वनित म्येः म्येः
म्येः वनऽनुई छुई असली हेह॥ २॥

हेह छुइ ब्वड ह्यू छुस कुस्तान्य्
इः शरीरई बऽ छुस आसान
इः नो च़ऽः च़ऽः अति रोज़ान
मन्दरस किथऽ कऽन्य वनौ भगवान॥ ३॥

दीहहंकार छुई बडड्य् बेमऽऽर्य्
अमी मोरनक ब्यथि मऽऽर्य् मऽऽर्य्
त्रावुन जल जल ख्वलऽनय तऽऽर्य
दीहऽक्य् बन्द बन्द कर द्राय सऽऽर्य॥ ४॥

यली मानक बऽः नो दीह
बऽः छुस ज़्वव, ज़्ववऽः रुस इः
ज़्वव यलि नेर्यस द्वदरिः इः
वडरान ज़ालान तवय छिन इः॥ ५॥

चेनतो चेनवन युस छुक च़ऽः
चैतन्यमात्मा शिव रूप च़ऽः
प्रकाश व्यमर्श योतई च़ऽः
साधनऽः वरऽऽय स्यद्ध हो च़ऽः॥ ६॥

युस नऽन्य् पऽऽठय् न्वन, तस खटि कुस
सिर्यि भगवानस यब ह्येयि कुस
ज़ानन वाऽऽलिस ज़ानि नऽः कुस
पानऽः पनुन ह्यस चेनि नऽः कुस॥ ७॥

च़ेनऽः वनिः च़ेनुन पनऽःनुई पान
युस न ज़ान्ह रोवुई सुई चोन पान
रावऽनऽः वरऽऽईई लबक क्या पान
पानय पान छुक दीनऽः ती ज़ान॥ ८॥

"हय क्या गोम" वनुन गव रावुन
"वुयन क्या गव" पान अथि युन
शारिका जी हुन्द यहोय वनऽवुन
ईश्वर स्वरूपुन ति छु ती दपुन॥ ९॥

दीनो होश कर त्राव स्वपुन
ज़ाग्रत गव ह्यस अथि युन।

Lord Shiva shines in the heart of realized Souls.

(Swami Ji)

Vimarsha and Prakasha
are one
Where one is
The other exists
Prakasha - internal "I ness" अहं
Vimarsha - external "This ness" इदं

(Swami Ji)

"What am I"

What am I and what I am not
Who knew it and who knew it not
He who said, ``he knew", Knew not
And possibly he knew, who said ``he knew not"
What is to be known, Knowledge itself is the self
Wherefrom will it Come; self is knowledge itself
Is action to be known, Knowing is action itself
From A to Z all this is nothing but the Self

(Din)

स्वाध्याय

ज़गतऽः मंज़ऽः म्वकलनपाय छु स्वाध्याय
गाटल्यन हुन्द वनुन कर च़ऽः स्वाध्याय
योगऽः अंग ब्वड छु स्वाध्याय स्वाध्याय
पर्ऽ पर्ऽ ब्ययि कर स्वाध्याय स्वाध्याय॥ १॥

असली स्वाध्याय गव अनुसन्धान
ग्वरऽः बाक् बूज़ित गछान छु आसान
शास्त्र व्यच़ारुण गव ब्वड स्वाध्याय
पर्ऽ पर्ऽ ब्ययि कर स्वाध्याय स्वाध्याय॥ २॥

ब्रोन्हः कालि ऋषियौ मुनियौ ज़ोन पान
लूकऽः ह्यतऽकार करुख लेखान लेखान
शिवनाथ पानऽः दीवियि ती वनान
पर्ऽ पर्ऽ ब्ययि कर स्वाध्याय स्वाध्याय॥ ३॥

यूगऽः अभ्यास ह्यछ च़ऽः करित स्वाध्याय
लूकऽः व्यवहार दयिकार ज़ान स्वाध्याय
द्रन किथऽः गछि म्युल, वनि च़ेः स्वाध्याय
पर्ऽ पर्ऽ ब्ययि कर स्वाध्याय स्वाध्याय॥ ४॥

न्यबर नेरुन गव छकऽरावुन पान
अन्दर अछ़, तती, वुछ, ज़गत पान आसान
गछी ती आसान करऽखय स्वाध्याय
पर्ऽ पर्ऽ ब्ययि कर स्वाध्याय स्वाध्याय॥ ५॥

रागऽः वैराग

ज़ागि रोज़ पानस रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य् रागऽः वैराग कर
कुन गछनऽः रुस्तुई बन्तऽः चऽः सन्यास
अन्दरय पान ज़ान, रागऽः वैराग कर॥ १॥

खुऽ नाव पऽऽन्य पानऽः नऽऽल्य् छय छनिमऽच्य्
परिपूर्णता पनऽन्य् मशरऽऽवमऽच्य्
क्याज़िः करऽः राग-द्वीष, सहज विचार कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ २॥

सोरुई केन्ह शिव छुक चऽः पनुन पान
क्याज़ि कम गोमुत मोनुत पनुन पान
परिपूर्ण छुक रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ ३॥

अक त ज़ऽः लऽछ सास भास छु कुनुई
कुनुई छुक चऽः कुनुई, सोरुई छु कुनुई
कनुन ह्युन छु ज़ीवुत, संबन्ध ज़ान कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ ४॥

रागऽः मंज़ऽः वैर ज़ाव पानऽसई खुर आव
वैखरी चानि मंज़ त्रावान ज़हर आव
कामना त क्रूध त्राव, रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ ५॥

रोज़ऽःखय रागऽः रुऽस बनि म्वकलन पाय
इः ज़गऽथई, च्येः क्युत बनि, स्वर्गऽच्य जाय
इथय पऽऽठय् द्वयत गाल, रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ ६॥

करख वैर अकिस या द्वन सऽऽत्य, दुशमनी
रागऽः मोह कऽऽत्या छि यति पनऽनी
हदऽः सई मंज़ रोज़ रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ ७॥

क्याः करीय ज़ुर पुतुर सोच वारऽः पऽऽठिन
लरि जायिः प्यन यत्य् सर्फऽः मऽसलऽः पऽऽठिन
आत्मुक व्यच़ार कर रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ ८॥

आख ना युत चऽः न्यथऽनुन त कुनुई
माजि मऽऽल्य् सुन्द, आनन्दऽः फल, कुनुई
गछुन कुनिसई छु रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ ९॥

इथुई आख तिथिसई वापस छु गछुन
सोरुई केन्ह यऽत्य् त्रऽऽवित छु गछुन
वुन्दुत क्याजि टोठ केन्ह रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ १०॥

पूर्णता पनऽऽनी ज़ाननि आयोख
स्वई मशरऽऽवथन अपूर्ण चऽः बन्योरव
मशरब मशराव रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ ११॥

विश्वमय विश्वतीर्ण ज़ानकर वारऽः पऽऽठय्
केन्हनऽः मंज़ऽः सोरुई, केन्ह वछ वारऽः पऽऽठय
छुक चऽः ह्यसई योत, रागऽ वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ १२॥

रागस त प्रेमस स्यठाह छय फरख बोज़
राग मोह शरीरुक प्रेम दयि लोल बोज़
प्रेम छु बेगरज़ रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ १३॥

रागऽः वैराग गव मूहऽः ज़ाल ज़ालुन
वैरागऽः अग्नस म्येः त म्योन हुमुन
मलन त्र्यन स्वाहा रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽडय् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ १४॥

सहज विचार कर राग द्वेष गऽऽलिथ
अनुग्रह शिव करि रागद्वेष गऽऽलिथ
दीनऽः ती ज्ञान ज़ान रागऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽज्स्य रागऽः वैराग कर॥ १५॥

पऽऽनिस कऽन्य् त्राव गिरदाब वारऽःवछ
कऽन्य् गयि गऽऽब ज़न गिरदाव अऽत्य वछ
कऽन्य् पनुन पान छाण्ड गिरदाब राग वछ
राग छुई बऽड्य् फऽऽञ्स्य रागऽः वैराग कर॥ १६॥

सोरुई ज़गत वछ दऽर्याव पकऽवुन
नुव नुव तमाशऽः नुवी पोन्य पकऽवुन
मंज़स मऽः ईरऽः वस, बठि संद्या कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽञ्स्य रागऽः वैराग कर॥ १७॥

खसऽः वस प्राण अपान वारऽः वुछ ह्यसऽः सान
संवित, संबन्ध, सअंज़ मंज ह्यसऽ सान
अक शाह मऽ रावऽराव दीनऽः वैराग कर
राग छुई बऽड्य् फऽऽञ्स्य रागऽः वैराग कर॥ १८॥

आलमि हैरानी

तला सोच पानऽः वारऽः, पान क्युत ह्यू छु
देह पानस किनऽः पान तथ मंज़ छु
देह छु सीमित पान अनहद छु
ब्वुड ल्वकऽटिस मंज़ कर वातान छु
सोरुई आलम गोरख धन्धा
ल्वकुट ब्वुड अज़ पगाह कर कुनि केन्ह छु
आसुन नासुन ततिः केन्ह नो छु
ई छु ती छु, छुतऽः केन्ह नो छु
ती ती वनुना शुर्य गिन्दुना छु
ती ज़ान्तो दीनऽः दयि गिन्दुना छु
क्या समझे खाक समझे दीनानाथ जी

GOD
What is He

1. Sum total of all possible energies and their owner is GOD.
   शक्तिमान्तु महेश्वरः

2. Any person; living or dead;
   historical or mythological;
   whom you believe is "PERFECT"
   Is your God.

3. Your father and mother are your God.
   Life Eternal, consciousness, awareness, came through them to you

4. You; Yourself, free from "DESIRE" are God.

5. Everything separately and collectively is nothing but God.
   (It is made of Atoms, Atoms are energy)

Remove the misunderstanding delusion :-

(a) "I am, "
(b) "I possess", or/and
(c) "I do"; and you will
automatically realize

God in yourself and also
in the Universe as One and only One.

Thus realizing, His all pervading Self, the Soul of all,
With dualistic, distinction - differentiation - fully destroyed
He who recognises Himself full of glory
Becomes glory Himself; God. Lord Shiva
I bow to Him my Guru Dev,
Lord Ishwar Swarup Swami Lakshman Ji

Jai Gurudev

"Din"





जन्मतिथि : ७-५-१९११

कलऽः न्वम्रित छुस वछान दूह रात सुय
यथ दिलस मंज युस खनित तसवीर चोन
'दीन'

स्वामी विवेकानन्द जी महाराज के शिष्य श्री सुदर्शन गंजू के सुपुत्र श्री दीनानाथ जी गंजू, ईश्वर स्वरूप लक्ष्मण जी महाराज के अनन्य भक्त व सेवक। सद्गुरु महाराज की कृपा के विशेषपात्र। अपने ऐश्वर्यमय यौवन में ही विषय वासनाओं का तिरस्कार कर इंजीनियर गंजू ने गुरुचरणों की शरण ली। भाव प्रगाढ़ और अनुराग असीम। सद्गुरु कृपा से ईर्ष्या द्वेष व काम क्रोध की भर्त्सना कर गुरुचरणों में लीन। साधना के कुछेक आयामों को अल्पायु में ही लांघकर सद्गुरु सेवा ही जीवन का चरम उद्देश्य। ईश्वर आश्रम निशात में सद्गुरु के अगल बगल में अपना आवास स्थान बनाकर अपने को धन्य समझने वाले कवि दीन के हृदय में श्रद्धा-भक्ति-ज्ञान और वैराग्य के बीज क्रमशः प्रस्फुटित। परिणामस्वरूप सद्गुरु की पुण्य स्मृति में जम्मू महेन्द्रनगर में स्थित, संलग्न भूमि खण्ड सहित अपना भव्य मकान ईश्वर आश्रम ट्रस्ट निशात कश्मीर को सौंप कर दानवीरता का प्रदर्शन। बाल्यकाल से विज्ञान के विषयों के साथ वादानुवाद करने वाले युवक के हृदय का सद्गुरु अनुकम्पा से अकस्मात् परिवर्तन। संस्कृत हिन्दी भाषा व देवनागरी से कम परिचित दीन का शिवसूत्र आदि महान शैव ग्रन्थों का अनुशीलन व कईयों का कश्मीरी भाषा में पद्यान्तरण सद्गुरु दीक्षा भागीरथी में आपादमस्तक उन्मज्जन का परिणाम।

सद्गुरु महाराज इन को सद्गति प्रदान करें। यही प्रबल कामना है।

(ईश्वर आश्रम ट्रस्ट)
निशात